॥ श्रीः ॥

रामरसायन ।

गोलोकवासी रामभक्त कविवर

रसिकविहारी-कृत ।

जिसमें

सच्चिदानंद आनंदकंद जगवंद्य कोशलराज श्रीमन्महाराज रामचंद्रजीकी सम्पूर्ण नरलीला सुखशीला हरिकथा-मृताभिलाषियोंके पानार्थ विविध प्रकारके मनहरण छन्दोंमें वर्णित हैं ॥

जिसको

श्रीमान् महाराज कानोडाधीश श्रीरावतजी नाहरसिंहजी की आज्ञानुसार और सहायतासे,

कलिमलग्रसित मनुष्योंके उपकारार्थ

अत्यंत शुद्धता और स्वच्छता पूर्वक

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रकट किया ।

वैशाख संवत् १९६४, शके १८२९.

प्रस्तावना.

महाशय काव्यानुरागियो ! इस नवीन काव्यशिरोमणि पदललित भावकूट ग्रन्थके अवलोकन करनेसे अवश्य अतुल प्रेम उत्पन्न होकर श्रीरामचंद्रजीकी भक्तिका प्रवाह हृदयमें विस्तृत होताहै. इसे श्रीमान् महाराजाधिराज कानोडाधीश श्रीरावतजी नाहरसिंहजीकी सभास्थ कवियोंमें अग्रगण्य श्रीरामचंद्र कृपाधिकारी गोलोकवासी कविवर रसिकविहारीजीने समस्त प्राणियोंके भवसागर उत्तीर्णार्थ श्रीरघुनाथजीके जन्मकी मनोहर कथा, व्याहोत्सव, वनगमन, विपिनचरित्र, सुग्रीव मिलन, अंजनीनंदनका लंकागमन, बिभीषण आगमन, रावणवध, राज्याभिषेक, रामाश्वमेध, सीतारामरासविलास इत्यादि कथाएँ मनोहर छंदोंमें वर्णन की हैं, उक्त कविने जो मनभावन रुचिउपजावन रामयश वर्णन किया है, वह समस्त प्रेमी जनोंके दृष्टिगोचर है.

आपका-विद्वज्जनकृपाकांक्षी-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयाध्यक्ष-मुंबई.

अंकन भागे गुणे उनपै उन अंकन भागै गुणे न करे हठु ॥
जो गति गूढ विचारो चहै रसिकेश तौ रामको नाम भले पठु १००

दोहा—ग्रह साँचे फल सत्य पै, राम नामको इष्ट ॥
जाहि न सो जाने कहा, निजपर इष्ट अनिष्ट ॥ १०१ ॥
सो सुनिकै इक मंत्रविद, विप्र कही हुलसाय ॥
नाम मुख्य पै औरहू, मंत्रादिक सु उपाय ॥ १०२ ॥
ग्रन्थन माहिं अनेक हैं, देव सिद्ध समुदाय ॥
जाते कारज सिद्धि सब, गति त्रिकाल दरशाय ॥ १०३ ॥
तब तापस तिहि प्रति कही, कही सत्य तुम जोय ॥
जाने नामप्रभाव तिहि, और न भावे कोय ॥ १०४ ॥

सवैया कवित्त ।

टूटत है जग मोह जबै तब छूटत है सब दुःख विषादू ॥
होत विराग विशेष हिये कछु फेरि न भावत वाद विवादू ॥
रामके नामहिमें दृढ प्रीति प्रतीति रहे रसिकेस अनादू ॥
नाम बिहायकै और सुहाय न मंत्र न यंत्र न तंत्र न जादू १०५॥

दोहा—यों कहि भाषी जटिल पुनि, सबहि सुनाय पुकार ॥
राम नाम विन और जो, जपै तासु मुख छार ॥ १०६ ॥
तापस परम प्रवीन लखि, सुमुख सुयज्ञ तुरंत ॥
सादर कर गहिकै निकट, बैठारो गुणि संत ॥ १०७ ॥
ताछिन एक सुभक्त वर, कह सुयज्ञ प्रति दीन ॥
काह करौं जिहि नाशहीं, मोकृत कर्म मलीन ॥ १०८ ॥
सुनि सुयज्ञ बोले मधुर, हरि गुरु कृपा विहाय ॥
कोटि जतन कोऊ करै, तऊ न दुरित नशाय ॥ १०९ ॥
जो कोऊ गुरु विमुख हो, अथवा गुरू न कीन ॥
कृपा आश प्रभुकी धरै, सोई है मतिहीन ॥ ११० ॥

सवैया कवित्त ।

ढेर सुमेर सो कंचन दान करै नित जायकै क्षेत्र कुरू ॥
धेनु अलंकृत कोटिन देतन अक्षत नीरते रीते चुरू ॥

मान प्रमान यही रसिकेश चहूँ युग भाषत धर्म धुरू ॥
कैसहु राम न रीझत काहु पै तो लग जौलों ह्वै न गुरू॥१११॥
दोहा—गुरुद्वारा प्रभु शरण ह्वै, सदा जपे शुभ नाम ॥
तो दुहुँ लोक अनंद हो, कृपा करैं सियराम ॥ ११२ ॥
राम नाम सुमिरै सदा, करै शक्तिसम दान ॥
तो नित सुख संपति बढै, होय नहीं कछु हान ॥ ११३ ॥
सुन सुभक्त सविनै कही, कहिय भजो नित सोय ॥
तब द्विज दे नामावली, कह याते भल होय ॥ ११४ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

सीतानाथ १ सीतावर२सीताकंत ३ सीतापति ४ सुंदर५ सुजान६ सुखमानिधान ७ शोभासिंधु ८ ॥ रसिकविहारी ९ हृषिकेश १० रघुचंद ११ राम १२ बुद्धिवर १३ दाता १४ वेद ज्ञाता १५ बीर १६ विद्यासिंधु १७ धाता १८ दीनत्राता १९ दुष्टघाता २० दुःखहाता २१ दोषदारिद्रनिपाता २२ देव २३ पाता २४ दाता२५ दयासिंधु २६ ॥ अवधभुवाल २७ भक्तपाल २८ रघुलाल २९ प्रात लेवे तीस नाम ये सप्रेम ह्वैं-दीनबंधु ३० ॥ ११५ ॥

दोहा—पुनि सुयज्ञ भाषी तबै, सबही प्रति दृढ़ बात ॥
याते सबही नारि नर, हो भुव मंडल ख्यात ॥११६॥

घनाक्षरी-कवित्त ।

झंडा औ निसान के निसान ते न जाने कोऊ जाने है न कोऊ द्वार दुंदुभी बजायेते ॥ ऊंचे महिलानके उठानते न जानै कोऊ जाने है न कोऊ मत्त गजके बंधानते ॥ सानते न जाने औ गुमानते न जाने धन धाम ते न जाने कोऊ कोटिहू विधानते ॥ रसिकविहारी चार बातते जहान जाने विद्या हरि ध्यान ते कृपान ते सुदानते ॥ ११७ ॥

दोहा—सुनि सुभक्त आनंद ह्वै, हृदै धरै दृढ़ वैन ॥
अपर विविध जन मुदित भे, जे बुधि विद्या ऐन ॥ ११८॥
इहि विधि सरयूतीर मधि, वाक्य विलास उमंग ॥
राज समाज समेत बहु, भयो विशद सत्संग ॥ ११९ ॥

संध्या वंदन करि मुदित, सकल समाज समेत ॥
द्वै घटिका बीती निशा, गवने राम निकेत ॥ १२० ॥
यौंही नित प्रति होत है, अवध परम आनंद ॥
कहैं नारि नर वृंद सब, जै जै जै रघुचंद ॥ १२१ ॥
इति श्री रा० र० अ० वि० सत्संगवर्णनो नाम पंचमो विभागः ॥ ५ ॥

दोहा—इमि नित सुखमाधि बीति गो, मास अधिक इक वर्ष ॥
नृपति सुकंठादिक तिहूँ, दल युत रहैं सहर्ष ॥ १ ॥
कीश ऋच्छ निश्चर सकल, पल मद मधु पकवान ॥
अशन पान प्रमुदित करैं, सहित प्रीत सनमान ॥ २ ॥

प्र० वा० ॥ उ० कां० ॥ स० ३९ ॥ श्लोक ॥

ते पिबंति सुगंधीनि मधूनि मधुपिंगलाः ॥ मांसानि च सुमिष्टानि मूलानि च फलानि च ॥ १ ॥ एवं तेषां निवसतां मासः साग्रो ययौ तदा ॥ मुहूर्तमिव ते सर्वे रामभक्त्या च मेनिरे ॥ २ ॥ रामोपि रेमे तैः सार्धं वानरैः कामरूपिभिः ॥ राक्षसैश्च महावीर्यैर्ऋक्षैश्चैव महाबलैः ॥ ३ ॥ इत्यादि ॥

दोहा—ऋच्छ कीशातिय भूरि तिन, नित रनिवास मझार ॥
सादर बहु नूतन विविध, होत सकल सतकार ॥ ३ ॥

दोवई छंद ।

लंकनाथ हरिपाल ऋच्छपति सदल सकुल यह चावैं ॥
इतहि रहिय नित कबहुँ नाथ अब हमैं न गेह पठावैं ॥
तिनको परमनेहु रघुवरमें राम प्रेम तिन माहीं ॥
दोऊ हिये परस्पर चाहैं कोउ न छिन बिलगाहीं ॥ ४ ॥
तब रघुवीर ज्ञाननिधि हियमें दृढ विचार ठहरायो ॥
राज साज धन धाम कुटुम इन मो हित सकल भुलायो ॥
पै अब निज निज गेह सिधारैं लखैं काज जन जाई ॥
इमि गुणि सभा मध्य प्रभु बैठे लीन्हे सबहि बुलाई ॥ ५ ॥

धर्म नीति वरज्ञान कथा कहि सबहि सुधीर धराई ॥
पुनि बोले तुम सकल हमारे हिय बिच वसो सदाई ॥
सखा सुकंठ प्राण ते प्यारे तुमते उऋण सु नाहीं ॥
तिमि लंकेश ऋच्छपति मेरे भरत लषण सम आहीं ॥ ६ ॥
हनूमान अंगद नीलादिक सकल प्राण सम प्यारे ॥
मो जियहोत यही काहूको छिन भरि करों न न्यारे ॥
पै नृप धर्म प्रजापालनको सो न आप विन होवै ॥
याते जाहु सदल तिहुँ भूपति सकल सुजन मुख जोवैं ॥ ७ ॥
सुनि सब विनय करी बहु प्रभु सों भरे नैन बिच नीरा ॥
पुनि वर नीत प्रीत मृदु कहिकै दई राम तिन धीरा ॥
यों कहि निकट बुलाय सुकंठहि दीन सु अंग प्रसादा ॥
निजकर सखहि विभूषितकीनि भरे हृदय अहलादा ॥ ८ ॥
ऋच्छपाल लंकेशहि रघुवर सादर निज कर दीने ॥
भरत वेगि उठिकै दुहुँ भूपन प्रमुदित भूषित कीने ॥
अपर यथोचित राज साज बहु सादर दिये कृपाला ॥
सनमाने सब भाँति नेह युत राम तिहूँ भूपाला ॥ ९ ॥
अंगद नील नलादि मुख्य तिन लछमन अरु रिपुशाला ॥
हित करि यथायोग पहिराये शिख नख साज विशाला ॥
बहुरि विभूषन वसन अनूपम रघुवर भूर मँगाये ॥
कीश भालु निश्चरन यथोचित सन्मुख सबहि दिवाये ॥ १० ॥
ताछिन हनूमान उठि वेगै रामचरण धरि माथा ॥
पुलकित गात दीन है विनती करी जोरि युगहाथा ॥
मो अभिलाष नाथ यह तव पद सेवौं निकट सदाई ॥
जबलग प्रभु चरित्र महि तबलग श्रवण करौं हुलसाई ॥ ११ ॥
लखि हनुमंत प्रीति रघुनंदन उठि गहि अंक लगायो ।
एवमस्तु कहि विशद हार निज लै प्रमुदित पहिरायो ॥
पुनि अंगदहि गोदलै सुत सम कियो प्यार बहु रामा ॥
तासु भार सुग्रीवहि दीनो भाषि बैन सुख धामा ॥ १२ ॥

उत तारा अरु रुमा आदि पुनि ऋच्छतिया जे रूरी ॥
सादर सबहि अमोल साज वर दये सुरानिन भूरी ॥
कौशल्यादि सियादि प्रीति युत अपर सखी पुरनारी ॥
सह सनमान उचित मिलि भेंटी भरे सकल द्दग वारी ॥ १३ ॥
इहि विधि इत रघुवीर निकट अरु उत रनिवास मझारा ॥
अतुल साज धन धाम ग्राम दै भयो अमित सतकारा ॥
ताछिन पुष्पकयान राम ढिग विचरत नभ मग आयो ॥
समै प्रमाण तासु आगमलखि प्रभु उर आनँद छायो ॥ १४ ॥
तब रघुवीर मुदित उठि तिहुँ नृप सादर अंक लगाये ॥
अपर यथोचित कीश भालु मिलि पुष्पक मधि बैठाये ॥
त्यौं कपि ऋच्छ तीय गण पद नमि भईं अरूढ विमाना ॥
यौं सब सबहि उचित मिलि गमने ह्रदय प्रेम उमगाना ॥ १५ ॥
निज निज धाम सबहि पहुँचाई पुष्पक बहुरि सिधारी ॥
राम धनद पद वंदि व्योम चहुँ विचरत इच्छाचारी ॥
हनूमान आनंद सहित नित रघुवर निकट रहाहीं ॥
राम चरित्र सनेम प्रेम युत सुनत अंग पुलकाहीं ॥ १६ ॥
तारा रुमा सहित उत हरिपति प्रमुदित करैं विहारा ॥
दये ग्राम धन बहु कपि ऋच्छन ते सब सुखी अपारा ॥
निज तिय अरु मंदोदरि युत त्यौं लंकनाथ विलसावैं ॥
चहूँ मुख्य निश्चर समस्त पुनि परमानंद रहावैं ॥ १७ ॥
पुनि लंकेश विभीषण प्रमुदित निज लघु सुतहि बुलाई ॥
मत्तगयंद नाम तिहि सादर दीनी हुलसिरजाई ॥
जाहु पुत्र मम दिशि ते प्रभुकी सेवा करौ सदाई ॥
पितु आज्ञा सुनि अति अनंद सों साजि चले शिरनाई ॥ १८ ॥
आये बेगि राम ढिग प्रमुदित शीश नाय कर जोरे ॥
कही विनय युत पूर्व जन्म कृत सुकृत उदैभे मोरे ॥
सादर तिहि बैठारि निकट प्रभु सुत सम प्यार बढाई ॥
बूझि कुशल पुनि आज्ञा दीनी इतही रहौ सदाई ॥ १९ ॥

यौं कहि भूषण वसन अनूपम अपर यथोचित साजा ॥
मत्तगयंदहि अरु हनुमंतहि दियो सभा रघुराजा ॥
किय लंकेशसुतहि निजपुरको रक्षक अधिप महाना ॥
गढ़पति पवनपुत्रको थापो सबही मध्य प्रधाना ॥ २० ॥
पुनि बहु सखा सुसेवक पुरजन परिजन अपर अपारा ॥
यथायोग बहु राज काज तिन सौंपे सहित विचारा ॥
इहि विधि कौशलपाल कृपानिधि धर्म नीतिमय राजा ॥
करहिं निदेश न्याय पालन वर संयुत सकल समाजा ॥ २१ ॥

इति श्री रा० र० वि० अ० सुग्रीवादि गमनवर्णनो
नाम षष्ठो विभागः ॥ ६ ॥

सो०—श्रीदशरथ सुत राम, करत राज मर्याद युत ॥
सबहीके मन काम, यथायोग पूजैं सदा ॥ १ ॥
[illegible]पौरि कछु बार, बैठत हैं रघुराय नित ॥
करैं वि[illegible] सब झार, तहँ निबंध नहिं काहुको ॥ २ ॥
दोहा—सभामध्य र[illegible] तबै, छिनहीं छिन सुधिलेत ॥
विनय कार कोऊ [illegible]मुख, जाय न आय निकेत ॥ ३ ॥
एक दिवस इक श्वान [illegible]हँ, आय पुकारो द्वार ॥
सुनतहि राम कृपालु ति[illegible] लिय बुलाय दरबार ॥ ४ ॥
बूझी तिहि कह विनय तुव, [illegible] सो शीश नवाय ॥
कही नाथ हौं पंथ बिच, बैठो स[illegible] सुभाय ॥ ५ ॥
असुक ठाम वासी जु द्विज, मोकों वि[illegible]पराध ॥
कियो प्रहार सुन्याय मम, कीजे बुद्धि अ[illegible] ॥ ६ ॥
सुनि रघुवर तिहि विप्रको, वेगै सभा बुलाय ॥
बूझी श्वान प्रहारको, हेत कहौ सतभाय ॥ ७ ॥
तब द्विज बोलो श्वान यह, बैठो पंथमझार ॥
भयो शंक वश अतिहि मैं, याको रूप निहार ॥ ८ ॥
दूरहिते बहु वार हौं, कही दूर हो दूर ॥
रहौ तहाँई श्वान यह, दुरो नहीं मदपूर ॥ ९ ॥

हुतौ क्षुधित मैं तासमै, आयो क्रोध अपार ॥
तबहि भजायो याहि मैं, करकै दंड प्रहार ॥ १० ॥
हनो जु इहि अपराध विन, मोतें भो अपराध ॥
क्षमादंड जो उचित सो, कीजे नीति अगाध ॥ ११ ॥
सो सुनि प्रभु बूझी द्विजन, उचित दंड इहि काह ॥
विप्र अवध्य अदंड सब, कह पुनि रुचि नरनाह ॥ १२ ॥
ताछिन बोलो श्वान पुनि, न्याय करिय प्रभु जोय ॥
तौ जो कछु हौं भाषहूँ, याहि दण्ड सो होय ॥ १३ ॥
सुनि तिहि बूझी राम तब, कह कूकुर शिरनाय ॥
चित्रकूट ढिग शिव सदन, ग्राम कलिंजरमाय ॥ १४ ॥
कीजे तहँको अधिप इहि, सुनि रघुवीर तुरंत ॥
किय अभिषेक चढाय गज, भेजो थापि महंत ॥ [illegible] ॥
राज साज गज वाजि जन, पाय मुदित भो [illegible] ॥
राम रजायसुते तहाँ, गयो अधिपह्वै क्षि[illegible] ॥ १६ ॥
निरखि श्वान रुचि चकित सब, त[illegible] बूझी तिहि राम ॥
कही दिवायो दंड यह, भाष [illegible]गट मनकाम ॥ १७ ॥
कही श्वान तब सुनिय प्र[illegible], हौंहू अधिप सुआउ ॥
तिही पापते योनि [illegible], पाई चहूँ भ्रमाउ ॥ १८ ॥
शिव निर्मायल[illegible]स्तुको, ग्रहण करत जो कोय ॥
प्रगट प्र[illegible]नमें सकल, ताको पाप जु होय ॥ १९ ॥
क[illegible] [illegible]न मुखिया आपही, भषै सुवस्तु अकेल ॥
[illegible]निध जनहिं न देय सो, परै नरक महँ पेल ॥ २० ॥
सो द्विज तहँको अधिप ह्वै, करिहै येई पाप ॥
मोसम ह्वै है श्वान ध्रुव, सदासहै संताप ॥ २१ ॥
यौं कहि श्वान नवाय शिर, गयो तासु गति सोच ॥
कहत सबै पर भागको, खैबो है अति पोच ॥ २२ ॥

सुनि पुरजन यह न्याय गति, कहत मुदित वरबैन ॥
धर्म नीति ज्ञाता नृपति, और राम सम है न ॥२३॥

चौ०-यौंहीं सब चर अचर सुखारी ❀ रामराज नहिं कोउ दुखारी ॥
दान मान अरु न्याय विचारा ❀ होय नीत संयुग कृत सारा२४॥
एक दिवस कौशलपति रामा ❀ सहित समाज सकल मतिधामा
सभा सदन मधि आय विराजे ❀ निज निज काज साज सब साजे२५
ताछिन द्वै पक्षी तहँ आये ❀ भूरि परस्पर वाद बढाये ॥
इक उलूक इक गृद्ध कराला ❀ झगरत दुहू सकोप विहाला२६
आय प्रभुहि दुहुँ शीश नवायो ❀ निरखि राम तिन विस्मय छायो॥
अतिहि उताल प्रथम ह्वै दीना ❀ अस्तुति कीनी गिद्ध प्रवीना२७
पुनि बोलो प्रभु मोर अगारा ❀ यह उलूक लेवै वरियारा ॥
याको न्याय नाथ ध्रुव कीजे ❀ सत्य विचारि रजायसु दीजे२८॥
सुनि तिहि वचन उलूकहि रामा ❀ बूझी भाष कौनको धामा ॥
दुहू बखान सुनैं हम जबहीं ❀ न्याय विचार करैं पुनि तबहीं२९
सुनि उलूक बोलो हे नाथा ❀ दिवा अंध मुहि जानि अनाथा ॥
सदन मोर यह गीध सु लेवै ❀ वृथा सकुल मोको दुख देवै३०॥
सुनि दुहुँ वचन गुणी महिपाला ❀ जानो पै गीध वाचाला ॥
प्रथमहिं अस्तुति मधुर बखानी ❀ कही बहोरि विवाद कहानी ३१॥

दोहा-धूत होत ते काज निज, साधत चित्त लुभाय ॥
छल बल गुण धन दीनता, मन वच कर्म दिखाय ॥३२॥
यौं गुनि पुनि दुहुँ ते कही, भाषौ सत्य प्रमाण ॥
है वह केते वर्षको, निर्मित तव अस्थान ॥ ३३ ॥

चौ०-सुनि उताल पुनि गिद्ध बखानी ❀ जबते भूमि सृष्टि उपजानी ॥
तबही ते वह आलय मेरो ❀ इमि प्राचीन करिय निरवेरो३४॥
सुनि उलूक सत वचन सुनायौ ❀ प्रभु जबते वह तरु प्रगटायो ॥
तब ते तिहि ऊपर मम धामा ❀ गुणि कीजिये न्याय श्रीराम॥

सुनि रघुवीर सुहीय विचारा ❀ जब ते प्रगट भयो संसारा ॥
तबको द्रुम अबलग किमि रहई ❀ मिथ्या बात गीध यह कहई ३६॥
याते गृह उलूकको आही ❀ यौं गुणि राम दिवायो ताही ॥
गीध हारि गमनो सकुचाई ❀ भो उलूक मुद आलय पाई॥३७॥
शीशनाय द्विज गयो सुधामा ❀ इमि वर न्याय करत श्रीरामा ॥
सकल चराचर परम सुखारी ❀ धर्मराज चहुँ आनँदकारी॥२८॥

इति श्री रा० र० वि० अ० न्याय वर्णनोनाम सप्तमो विभागः ॥ ७ ॥

पद्धरी छंद ।

इक समय राम प्रमुदित विराज। शोभित समस्त सज्जन समाज ॥
ताछिन सुमंत तहँ वेगि आय। किय विनय जोरि कर शीश नाय॥१॥
भार्गव मुनीशच्यवनादिनाथ । आये समस्त मुनि विशद गाथ ॥
सुनतहि बुलाय लीने सुधाम । सत्कार उचित सब कीन राम ॥ २॥
जल सर्व तीर्थ लायें मुनीश। फल फूल दीन प्रभु लीन शीश ॥
बहु कुशल परस्पर बूझि दोउ। बैठे प्रसन्न मन सबहि कोउ ॥ ३ ॥
तब कही राम कहहै रजाय । दीजे सु लेहुँ निज शिर चढाय ॥
सुनि मुनि समस्त बोले उताल । रघुलाल धन्य जन भक्तपाल ॥४॥
दीनो उतार प्रभु भूमिभार । अब एक दुष्ट मधुपुर मझार ॥
मुनि जनन देत सो दुख अपार। द्रुति चहिय,नाथ ताको सँहार॥५॥

सो०–है लवणासुरनाम, चंड शूलधारी सबल ॥
ताहि बधे विनराम, अजहुँ चराचर दुखित बहु ॥ ६ ॥
शूल रहै करमध्य, जबलों मधु सुत लवणके ॥
तब लों निडर अवध्य, है इमि वर हरदत्त तिहि ॥ ७ ॥
गज मृग बाघ अपार, अपर जीव मानुष बिपुल ॥
नित सो करत अहार, याते होत विनाश चहुँ ॥ ८ ॥

पद्धरी छंद ।

सुनि तबहि कीन रघुवर विचार । कोकरहि जाय तिहि को संहार ॥
तासमय शत्रुहन जोरि हाथ । भाषी रजाय मुहिं होय नाथ ॥ ९ ॥

प्रभु भरत लषण बहु कीन काम । हों रहों आजलग अवध धाम ॥
सेवा सु एक यह मैं कराउँ । वध हेत तासु अब द्रुतहि जाउँ ॥१०॥
सुनि बन्धु बैन आनँद समेत । दीनी रजाय तिहि वधन हेत ॥
चतुरंग सैन कीनी जु संग । प्रिय वीर धीर वर युद्ध ढंग ॥ ११ ॥
पुनि दीन बाण इक प्रबल चंड । कह होय याहिते शूलखंड ॥
इमि भाषि सोधि दिन साजि साज । किय विदा बन्धुको अवधराज १२

दोहा—चलत कही प्रभु बन्धुसे, जिते सु सेवक संग ।
सादर सबको राखियो, सब विधि सुखी सुढंग ॥ १३ ॥
धन गुन बल तिय बंधु हित, तिमि न देय आराम ॥
प्रीतिपाल सेवक सुजिमि, सदा करै रुचि काम ॥ १४ ॥

पद्धरी छंद ।

सुनि भ्रात सीख वर गुण दमान । मिलि शीशनाय कीनो पयान ॥
मुनि वाल्मीकिते भेंटि वीर । मधुपुरहि गये सह सुभट भीर ॥ १५ ॥
सो लवण सदाही प्रातकाल । चहुँ जाय गहत बहु जीव घाल ॥
त्यौं नित समान लै शूल आन । उठिकै प्रभात कीनो पयान ॥१६ ॥
इत वीर शत्रुहन समय पाय । औचकहि आय मधुपुर तुराय ॥
धनुबाण साजिकै नगर द्वार । ठाढे सचेत चहुँ दिशि निहार ॥ १७ ॥
दिन युगल याम भो तब सुरारि । आयो अपार मृत जीव धारि ॥
लखि राजसुतहि सो क्रोध लाय । बूझी मनुष्य तू कौन आय ॥१८॥
तब रामबन्धु निज नाम ठाम । भाषो निशंक कुलग्राम धाम ॥
सुनि लवण रोष करिकै उताल । बोलो प्रचारि वाणी कराल ॥ १९॥
तुव भ्रात रावणहि कीन घात । हौं सुनि तबही ते जरत गात ॥
तिहि बन्धु आज मो निकट आय।अब फेरि नाहिं गृह जियत जाय २०
टुक धीर धार हे नृपति बाल । हौं गेहजाय आऊँ उताल ॥
वर चंड शूल लाऊं तुरंत ॥ तब लखहुँ फेरि तुव बल अनंत॥२१ ॥

दोहा—सुनि भाषी रिपुदमन तब, अरे असुर मतिमंद ॥
अब गृह जैवो सहज नहिं, परो वीरके फन्द ॥ २२ ॥
स्ववश पायकै शत्रुको, जो नहिं साधत काज ॥
दुख पावै पछताय सो, पुनि हो अधिक अकाज ॥ २३ ॥

यातें खल याही समै, यमपुर पठऊं तोहि ॥
शूल आश तजि अंगबल, जो दरशाव सु मोहि ॥ २४॥

पद्धरी छंद ।

शत्रुघ्न बैन सुनिकै सुरारि । घालो विशाल इक द्रुम उखारि ॥
तिहि राम बंधु बहु शर प्रहारि । करि खंड खंड दिय भूमि डारि२५॥
तरु घात देखि निष्फल सुभूरि । पुनि किय प्रहार सो वृक्ष पूरि ॥
ते सकल शत्रुहन कीन छिंद । बहुबाण मारि तन तासु भिंद ॥२६॥
तब लवण कोपि गहि विटपचंड । घालो भ्रमाय बल करि उदंड ॥
सो लगो आय ततकाल भाल । महिगिरे शत्रुसूदन विहाल ॥ २७॥
जानी सुरारि भो मृतक वीर । यातें निसंक ह्वै धार धीर ॥
गवनो न धाम लायो न शूल । तिन भषण हेतु धायो सुभूल ॥ २८॥
तत्क्षण सचेत ह्वै शत्रुशाल । उठि गहो द्वार अतिही उताल ॥
साजो सुबाण जो राम दीन । तिहि समय त्रसित भे लोक तीन२९॥
सो चंडबाण तिहि उर मझार । किय शत्रुशाल क्रोधित प्रहार ॥
भ्रमि गिरो लवण भूमधि तुरंत । ह्वै हृदय चूर भो प्राण अंत ॥३०॥
तेहि निधन देखि सुर भे निहाल । रव कियो जैति जै शत्रुशाल ॥
वरषे प्रसून दुंदुभि बजाय । तिहुँलोक रहो आनँद छाय ॥ ३१ ॥
तिहि मारि शत्रुहन सहसमाज । मधुपुरी मध्य कीनो सु राज ॥
तहँ रहे वर्ष द्वादश प्रमाण । बहु प्रजापाल परबंध ठान ॥ ३२ ॥
बहु सैन सचिव सेवक प्रवीन । तहँ राखि आप पुनि गमन कीन ॥
आये उताल श्रीराम पास । कीनो प्रणाम संयुत हुलास ॥ ३३ ॥
उठि राम बंधु लिय अंक लाय । सब मिले उचित आनँद अघाय॥
रघुवीर अनुजको बहु सराह । वर मान दीन कीनो उछाह ॥ ३४ ॥
इमि सप्त दिवस तिन भवन राखि । दीनी रजाय बहु नीति भाखि॥
प्रभु कही जाहु मधुपुर उताल । विन भूप आनको प्रजहिपाल॥३५॥
सुनि प्रभु रजाय रिपुदमन वीर । कछु ह्वै उदास पुनि धारि धीर ॥
साजि साज ईश आयसु प्रमाण । नमि कीन बेगि मधुपुर पयान३६॥

तहँ जाय सबहि आनंद दीन। रिपुदमन राजधानी सु कीन॥
मधुपुर निवास कर सह समाज। तिय सचिव सखा सेवक विराज ३७॥
लखि समय कबहुँ सो अवध आय। रहि कछू दिवस पुनि तितहि जाय॥
इहि भाँति शत्रुहन युत समाज। सानंद करत मधुपुर सराज ३८॥
इत भरत लषण युत रामचंद। कर अवध राज अतिही अनंद॥
निज समै समै सब होत काज। बहु दान मान नृपनीति भ्राज ३९॥

इति श्रीरामरसायन वि० अ० लवणासुरवधवर्णनो
नाम अष्टमो विभागः॥ ८।

सो०—एक समै रघुवीर, सभामध्य शोभित सदन॥
ताछिन निपट अधीर, वृद्ध विप्र आयो रुदत॥ १॥
तासु पुत्र वर एक, योवन वय ज्ञानी गुणी॥
संयुत परम विवेक, सो सुठि बालक मृतक भो॥ २॥
मात पिता मृत बाल, लाये भूपति द्वार पै॥
रोवत विकल विहाल, कहि नृपके पातक मरो॥ ३॥
भूपति करै अनीति, होय दुखी तिहि फल प्रजा॥
प्रजा करै अनरीति, नृपहि पाप सो लागहीं॥ ४॥
यों कहि द्विज सो बाल, राज द्वार धरि दीन हठि॥
प्रभु ढिग आय उताल, भाषी हत्या लेहु मम॥ ५॥
कै नृप कै ते लोग, राज काज अधिकार जिन॥
कारज करै अयोग, प्रजा दुखी हो पाप तिहि॥ ६॥
सो तव पाप कदंब, जाते मम बालक मरो॥
हौं इत सहित कुटुंब, प्राण देहुँगो राज पै॥ ७॥
सुनि विप्रहि कर जोर, समुझायो बहु राम मृदु॥
कही मोर जो खोर, होय सकल निर्णय अबहि॥ ८॥

चौ०—यों कहि करुणाकर अकुलाये ❀ मंत्री द्विज गुरु बेगि बुलाये॥
नारदहू विचरत तहँ आये ❀ सादर सबहि राम बैठाये॥ ९॥
बुझी राम द्विजन कर जोरी ❀ कहिये कह अनीति है मोरी॥
तब त्रिकाल दरशी वर ज्ञाता ❀ नारद मुनि बोले वच ख्याता १०॥

सुनहु राम सतयुगके माहीं ❀ सदा तपस्या विप्र कराहीं ॥
तब काहू नहिं होय कलेसा ❀ रहै न रंचहु पातक लेसा ॥ ११ ॥
त्रेता मध्य करै तप क्षत्री ❀ तब इक पदधर पाप धरत्री ॥
पुनि द्वापर तप वैश्य दिढावै ❀ महि पातक द्वै चरण जमावै ॥१२॥
कलिमें नीच शूद्रगण आदी ❀ करैं तपस्या मूढ विवादी ॥
तृतिय चतुर्थ चरण तब पापा ❀ धरत भूमि बाढै तिहुँ तापा॥१३॥
जब कलि करै शूद्र तप भूरी ❀ रहै पाप तब चहुँ पद पूरी ॥
अल्प मृत्यु दारिद्र दुख नाना ❀ तिहि फलते सब लहत निदाना १४

दोहा—सिद्ध साधुको भेष बहु, लेत नीच जन नष्ट ॥
निजते उच्च तिनै सुते, करत विविध विधि भ्रष्ट ॥ १५ ॥
वेद पुराण प्रमाण जो, सो नहिं करै प्रमाण ॥
नूतनगाथा जोरकै, ठानैं महत बखान ॥ १६ ॥

सवैया—कवित्त।

ज्ञान अखंड पखंड कथैं रसिकेश भरो उर लोभ अगाधू ॥
जोरत दाम सँवारत धाम भये ममता-मदमें अति आधू ॥
धूत महा अवधूत बने बहु देतहैं पूतन धैं जगनाधू ॥
कर्म कुकर्म करैं कपटी जन ते कलिकाल कहावत साधू ॥१७॥

दोहा—हो विरक्त अथवा गृही, चहिय विप्रकुल जन्य ॥
तप महत्व पद उचित तिहि, अनुचित करै जु अन्य ॥१८॥
बिन द्विज कुल जे सुर सदन, पूजन पाक कराय ॥
करता कारयिता दुहुँ, ते ध्रुव नरकहिं जायँ ॥ १९ ॥
विना विप्र तिहुँ वरण जे, कोऊ गृही बिरक्त ॥
देत मंत्र गुरु शिष्यते, दुहूँ नरक अनुरक्त ॥ २० ॥
द्विज कुल विन जे सत कथा, कहि सुनाय विधि युक्त ॥
सो वक्ता श्रोता दुहूँ, हों न नर्कसे मुक्त ॥ २१ ॥
ऐसे पातक भूरिते, होत सदा कलिमाहिं ॥
जाते जग नर नारि सब, संतत दुखी रहांहि ॥ २२ ॥

ताही पातकते नृपति, होवै धन सुत हीन ॥
पुनि रुजपीड़ित रहत हैं, प्रजा नशै सुख छीन ॥ २३ ॥
महा पाप यह जानिये, शूद्र बनै जो सिद्ध ॥
यह प्रबंध भूपहि उचित, होय न कर्म निषिद्ध ॥ २४ ॥
सो जु शूद्र तप पाप है, द्वापर कलिहू घोर ॥
त्रेताहीमें होय तौ, पातकको कह छोर ॥ २५ ॥
प्रजा जासु अवनीशके, संतत पाप कराय ॥
राज्य नाश हो ताहि ते, पुनि नृप नरकहि जाय ॥ २६ ॥
कृषी जानित धन धान्य अरु, पाप पुण्य ये चार ॥
षष्टम भाग प्रजानते, लहै भूप अधिकार ॥ २७ ॥
याते भूपहि उचित है, प्रजा करै जो पाप ॥
ताहि निवारै जतनते, तौ न होय संताप ॥ २८ ॥
आप प्रजा सेवक सहित, रहै सधर्म नरेश ॥
तौ काहू कबहूँ कछू, होय न रंच कलेश ॥ २९ ॥

प्रमाण ॥ वाल्मीकिये ॥ उत्तरकांडे । सर्ग ७३॥ श्लोक ॥

रामस्य दुष्कृतं कर्म महदस्ति न संशयः ॥ यथा हि विषयस्थानां बालानां मृत्युरागतः ॥ १ ॥ रामद्वारे मरिष्यामि पत्न्या सार्धमनाथवत् ॥ ब्रह्महत्यां ततो राम समुपेत्य सुखी भव॥२॥ राजदोषैर्विपद्यंते प्रजा ह्यविधिपालिताः॥ असद्वृत्ते हि नृपतावकाले म्रियते जनः॥३॥ यद्वा पुरेष्वयुक्तानि जना जनपदेषु च ॥ कुर्वते नच रक्षास्ति तदा कालकृतं भयम् ॥ ४ ॥

पुनः ॥ तत्रैव ॥ स० ७४ ॥ श्लोक ॥

श्रुत्वा कर्तव्यतां राजन्कुरुष्व रघुनंदन ॥ पुरा कृतयुगे राजन्ब्राह्मणा वै तपस्विनः ॥५॥ अब्राह्मणस्तदा राजन्न तपस्वी कथंचन ॥ तस्मिन्युगे प्रज्वलिते ब्रह्मभूते त्वनावृते ॥ ६ ॥ अमृत्यवस्तदा सर्वे यज्ञिरे दीर्घदर्शिनः ॥ ततस्त्रेतायुगं नाम मानवानां वपुष्मताम् ॥७॥ क्षत्रिया यत्र जायंते पूर्वेण तपसान्विताः ॥ वीर्येण तपसा चैव तेऽधिकाः पूर्वजन्मानि ॥८॥ तस्मिन्[illegible]प्रज्वलिते धर्मभूते ह्यनावृते ॥

अधर्मः पादमेकं तु पातयत्पृथिवीतले ॥ ९॥ ततः पादमधर्मस्य द्वितीयमवतारयत ॥ ततो द्वापरसंख्या सा युगस्य समजायत ॥ १० ॥ अस्मिन्द्वापरसंख्याने तपो वैश्यान्समाविशत्॥त्रिभ्यो युगेभ्यो त्रीन्वर्णान् क्रमाद्वै तप आविशत् ॥ ११ ॥ त्रिभ्यो युगेभ्यो त्रीन्वर्णान्धर्मश्च परिनिष्ठितः ॥ न शूद्रो लभते धर्मं युगतस्तु नरर्षभ ॥ १२॥ हीनवर्णो नृपश्रेष्ठ तप्यते सुमहत्तपः ॥ भविष्यच्छूद्रयोन्यां हि तपश्चर्या कलौ युगे ॥ १३ ॥ अधर्मः परमो राजन्द्वापरे शूद्रजन्मनः ॥ स वै विषयपर्यंते तव राजन्महातपाः ॥ १४ ॥ अद्य तप्यति दुर्बुद्धिस्तेन बालवधो ह्ययम्॥योऽद्य धर्ममकार्यं वा विषये पार्थिवस्य तु १५ करोति चाश्रीमूलं तत्पुरे वा दुर्मतिर्नरः ॥ क्षिप्रं च नरकं याति स च राजा न संशयः ॥ १६ ॥ अधीतस्य च तप्तस्य कर्मणः सुकृतस्य च ॥ षष्ठं भजति भागं तु प्रजा धर्मेण पालयन् ॥ १७ ॥ षड्भागस्य च भोक्तासौ रक्षते न प्रजाः कथम् ॥ सत्वं पुरुषशार्दूल मार्गस्व विषयं स्वकम् ॥१८॥ दुष्कृतं यत्र पश्येथास्तत्र यत्नं समाचर ॥ एवं चेद्धर्मवृद्धिश्च नृणां चायुर्विवर्धनम् ॥ भविष्यति नरश्रेष्ठ बालस्यास्य च जीवितम् ॥ १९ ॥

पुनः ॥ अन्यत्रापि ॥ ब्राह्मे ॥

ये च भागवताः शुद्धास्ते नूनं मम मूर्तयः ॥ तान्विप्रान्ये नमस्यंति ते मामेव नमंति वै ॥ २० ॥ शुद्धा भागवताः पूज्या द्रष्टव्याः सर्वदा नृभिः॥विशेषेण कलौ ब्रह्मन्द्विजरूपो ह्यवस्थितः२१॥

विष्णुपुराणें ।

वर्णाश्रमाचारवता पुरुषेण परः पुमान् ॥
विष्णुराराध्यते पंथा नान्यत्तत्तोषकारकम् ॥ २२ ॥

वसिष्ठसंहितायाम् ।

ज्ञानिनोऽज्ञानिनो वापि यावद्देहस्य धारणम् ॥
तावद्वर्णाश्रमप्रोक्तं कर्तव्यं कर्म मुक्तये ॥ २३ ॥

मनुस्मृतौ ।

न तिष्ठति तु यः पूर्वां नोपास्ते यस्तु पश्चिमाम् ॥
स शूद्रवद्बहिःकार्यः सर्वस्माद्द्विजकर्मणः ॥ २४ ॥

लक्ष्मीतंत्रे ।

सर्वलक्षणसंयुक्तो ब्राह्मणो वेदपारगः ॥ षट्कर्मनिरतः शांतः पंचकालरतः शुचिः ॥ २५ ॥ न स्थूलो न कृशो ह्रस्वो न काणो नैव रोगवान् ॥ नांधो न बधिरो मूढो न खल्वाटो न पंगुकः ॥ २६ ॥ न हीनांगोतिरिक्तांगो न श्वित्री न च दांभिकः ॥ क्रोधनो नैव दुष्कर्मा लोभोपहतचेतनः ॥ २७ ॥ अकुलीनं दुराचारं शठं जिह्मं च वर्जयेत् ॥ दयादमशमोपेतं दृढभक्तिं क्रियापरम् ॥ २८ ॥ कुर्याल्लक्षणसम्पन्नमाचार्यं चारुहासिनम् ॥ एवं गुणगणाकीर्णं गुरुं विद्यात्तु वैष्णवम् ॥ २९ ॥ उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद्द्विजः ॥ सकल्पं सरहस्यं च तमाचार्यं प्रचक्षते ॥ ३० ॥ पाराशरस्मृतौ ॥ दुःशीलोपि द्विजः पूज्यो नतु शूद्रो जितेंद्रियः ॥ कः परित्यज्य गां दुष्टां दुहेच्छीलवतीं खरीम् ॥३१॥ महाभारते ॥ श्वचर्मणि यथा क्षीरमपेयं ब्राह्मणादिभिः ॥ तद्वच्छूद्रमुखाद्वाक्यं न श्रोतव्यं कथंचन ॥३२॥ पंडितस्यापि शूद्रस्य शास्त्रज्ञानरतस्य च ॥ वचनं तस्य न श्राव्यं शुनोच्छिष्टं हविर्यथा ॥ ३३ ॥ कर्मसिंधौ ॥ भविष्यंति नरा मूढाः कलौ धर्मच्युतास्तथा ॥ अमर्यादां करिष्यंति प्रमादाद्विष्णुमंदिरे ॥ ॥ ३४ ॥ अज्ञानाद्वा प्रमादाद्वा अमर्यादां करोति यः ॥ इह लोके भवेद्भ्रष्टः परलोके विनश्यति ॥ ३५ ॥ विष्णुस्थानेषु कुर्वंति अमर्यादां च ये नराः ॥ नो बुधाः न च धर्मिष्ठाः न भक्ता न च वैष्णवाः ॥ ॥ ३६ ॥ आचारहीना ये कार्या भवंति विष्णुमंदिरे ॥ तस्यापराधान्नश्यन्ति धर्माः स्थानाधिकारिणः ॥ ३७ ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन सर्वाचारसमन्विताः ॥ सर्वे कार्याणि कुर्वंति साचारैर्विष्णुमंदिरे ॥ ३८ ॥ पूर्वाचार्यकृतां शुद्धां मर्यादां यो समाचरेत् ॥ तस्य सर्वसुखं भूयात्सदा विष्णुः प्रसीदति ॥ ३९ ॥ विष्णुस्थाननिर्णयः ॥ स्वयंव्यक्तिस्तु या मूर्तिर्वेदमंत्रात्प्रतिष्ठिता ॥ भवेद्यत्र हि तत्स्थानं विष्णुस्थानं निगद्यते ॥ ४० ॥ विष्णुस्थाने योग्यायोग्यनिर्णयः ॥ पाकपाकाधिकाराय पूजनाय महत्पदे ॥ विष्णुस्थानेषु तिष्ठेयुर्वैष्णवा द्विजजातयः ॥ ॥ ४१ ॥ द्विजवैष्णवनिर्णयः ॥ पंच द्राविडगौडाश्च ब्राह्मणा दश

ज्ञातयः ॥ तेषां मध्येपि भूयासुर्वैष्णवा द्विजवैष्णवाः ॥ ४२ ॥ वैष्णवपरत्वे कार्यनिर्णयः ॥ अन्ये तु वैष्णवाः सर्वे सर्वकार्याधिकारिणः ॥ चत्वारि नहि कार्याणि योग्यानि विष्णुमंदिरे ॥ ४३ ॥ विष्णुस्थानातिरिक्ता हि वैष्णवाः सर्वज्ञातयः ॥ सर्वेष्वप्युचितं पाकं पूजनं विष्णुहेतवे ॥ ४४ ॥ पंचसंस्कारसंयुक्ता वैष्णवाः सर्वज्ञातयः ॥ पूजनीयाश्च ते सर्वे स्थानमर्यादसंयुताः ॥ ४५ ॥ स्पर्शनिर्णयः ॥ स्पर्शास्पर्शं न चिंतेयुर्विष्णवर्चायां हि ये नराः ॥ ते च्युताः सर्वधर्मेभ्यो नरके यांति रौरवे ॥ ४६ ॥ वेदसंस्कारसंयुक्ता विष्णुमूर्तिः प्रतिष्ठिता॥ नैवान्यस्पर्शनीया सा विनापि द्विजवैष्णवम् ॥ ४७ ॥ ह्युत्तरे ताम्रपर्ण्याश्च पुरुषोत्तमपुरीष्वपि॥ स्पर्शनेपि च पाकार्चे स्पर्शदोषो न विद्यते ॥ ४८ ॥ पाकनिर्णयः ॥ विष्णुस्थानेषु यो मूढो विनापि द्विजवैष्णवम् ॥ कुर्यात्पाकार्चनं विष्णुर्नो गृह्णाति कदाचन ॥ ४९ ॥ स्वयं व्यक्तां तथा मूर्तिं वेदसंस्कारसंयुताम् ॥ नार्पयेदन्यकृतपाकं विनापि द्विजवैष्णवम् ॥ ५० ॥ द्विजवैष्णवकृत्पाकमार्पितं हि हरेस्सदा ॥ पाकार्चा तत्कृता नूनं विष्णुस्थाने सदोचिता ॥ ५१ ॥

विष्णु पुराणे।

सर्वे ब्रह्म वदिष्यंति संप्राप्ते तु कलौ युगे॥नानुतिष्ठंति मैत्रेय शिश्नोदरपरायणाः ॥५२॥ यदा यदा सतां हानिर्वेदमार्गानुवर्तिनाम् ॥ तदा तदा कलेर्वृद्धिरनुमेया विचक्षणैः ॥ ५३ ॥ वासिष्ठस्मृतौ ॥ श्रुतिस्मृत्युदितं धर्ममकृत्वा यश्चरेन्नरः ॥ विकर्मस्थः स विज्ञेयः सर्वकर्मविगर्हितः ॥५४॥ यो वेदार्थं गर्हयति धर्माधर्मं न विंदति ॥ न बुध्यते परं लोकं स नास्तिक उदाहृतः ॥५५ ॥ उक्तधर्मं परित्यज्य यो ह्यधर्मे प्रवर्तते ॥ पतितः स तु विज्ञेयः सर्वधर्मबहिष्कृतः ॥ ५६ ॥ महाभारते॥ श्रुतिः स्मृतिर्ममैवाज्ञा यस्तामुलंघ्य वर्तते ॥ आज्ञाछेदी मम द्रोही मद्भक्तोपि न वैष्णवः ॥ ५७ ॥ श्रुतिस्मृती उभे नेत्रे ब्राह्मणानां प्रकीर्तिते। एकेन विकलः काणो द्वाभ्यामंधस्तथैव च ॥ ५८ ॥ इत्यादि॥

दोहा—यातें हौं जानौं अबै, करत सूद तप कोय।
ताहि दंड दीने तुरत, द्विजसुत जीवित होय॥ ३० ॥

चौ०-सुनि नारदहि राम शिरनाई ❀ बेगि कही लछमनहिं बुझाई ॥
द्विज सुत मृतकहि जतन समेता ❀ राखौ सबहि भाँति सह चेता ३१॥
यौंकहि पुनि किय पुष्पक ध्याना ❀ आयो अतिहि उताल विमाना॥
सजि सब साज बैठि द्रुत रामा ❀ कियो पयान लखे बहु ठामा ३२॥
पश्चिम उत्तर पूरब देखी ❀ दक्षिण दिशा जाय चहुँ पेखी ॥
इक तडाग तहँ विशद निहारा ❀ सैवल गिरि अरु बिंध्य मँझारा ३३॥
तहाँ अधोमुख इक नर झूलो ❀ करहि तपस्या आनँद फूलो ॥
ताहि जाय बूझो रघुराजा ❀ को तू तप साधे किहि काजा ३४॥
सुनि सो कही शूद्र मम जाती ❀ देव होन हित यह तप थाती ॥
है शंबूक नाम मम नाथा ❀ हौं नहिं भाषों वचन अकाथा ३५॥
सुनतहि राम खड्ग खरधारा ❀ अति उताल तिहि कंठ प्रहारा ॥
तापस प्राण गयो प्रभु हाथा ❀ दुरित दूर ह्वै भयो सनाथा ३६॥
तापस शूद्र भयौ बध जबहीं ❀ बालक विप्र जियो सो तबहीं ॥
सो लखि जन समस्त हुलसाये ❀ मात पिता आनंद अघाये ३७॥
उत तिहि वध लखि सब सुर हरषे ❀ अस्तुति करत सुमन वर वरषे ॥
ताछिन मुदित कही सुरराजा ❀ निज रुचिवर याँचौ रघुराजा ३८॥
तब रघुवर बोले सुरराई ❀ दीजे सो द्विज पुत्र जिवाई ॥
इंद्र कही इहि मरतहि वीरा ❀ जियो सुबाल मिटी सब पीरा ३९॥
सुनि हुलसाय सुरन शिरनाई ❀ पुनि बैठे पुष्पक रघुराई ॥
आय अगस्त्य मुनिहि श्रीरामा ❀ गहि सप्रेम पद कीन प्रणामा ४०
ऋषि रघुवर कर आदर कीना ❀ भूषण इक अमोल वर दीना ॥
तब करजोरि मुनिहि शिरनाई ❀ मधुर वचन बोले हुलसाई ४१॥

दोहा—क्षत्रिन काहू दानको, लैवो उचित न आय ॥
अरु द्विज धनतौ कैसहू, ग्रहण अयोग कहाय ॥ ४२॥
सो हम क्षत्रिय बहुरि नृप, प्रभु मुनिवर द्विजराय ॥
उचित कहा करतव्य है, दीजे नाथ रजाय ॥ ४३ ॥
तब अगस्त्य ऋषि रामको, बहु विधि कियो बखान ॥
नीति धर्म संयुत बहुरि, बोले सत्य प्रमाण ॥ ४४ ॥

देव गुरू नृप पितर द्विज, साधु प्रजा सह तोष ॥

सादर देवै वस्तु कछु, लिये न काहू दोष ॥ ४५ ॥

चौ०—मुनि आज्ञा सुनिकै रघुराई ❀ लिय कर भूषण शीश चढाई॥
पुनि तिहि भूषण कथा विशाला ❀ ऋषिवर कही सुनी रघुलाला४६॥
तिहि निशि मुनि आश्रम वसिरामा ❀ प्रात चले करि दंडप्रणामा ॥
पुष्पक बैठि अयोध्या आई ❀ उतरि विमानहि दई रजाई ॥४७॥
द्वारपालते खबर जनाई ❀ आये भरत लषणदुहुँ भाई ॥
करि प्रणाम रामहि कर धारी ❀ गये भवन जन आनँद कारी४८॥
द्विज अशीश दै प्रमुदित भारी ❀ गयो सदन संयुत सुत नारी ॥
राम सुयश वर्णत सब कोई ❀ तिहूँ लोक नित आनँद होई ४९॥

दोहा—दान मान वर न्याय नित, करत राम नृप काज ॥

पालत प्रजहि सुधर्म युत, प्रमुदित सकल समाज ॥ ५० ॥

राजसूय आदिक विविध, मख कीने श्रीराम ॥

अमित दान दीने सविधि, धेनु धाम धन ग्राम ॥ ५१ ॥

प्र० ॥ वा० ॥ युद्धकांडे सर्ग १३० श्लोक॥

पौंडरीकाश्वमेधाभ्यां वाजिमेधेन चासकृत् ॥

अन्यैश्च विविधैर्यज्ञैरयजत्पार्थिवात्मजः ॥ ५९ ॥

इति श्री रा० र० अ० वि० द्विजपुत्रसंजीवन-

वर्णनो नाम नवमो विभागः ॥ ९ ॥

दोहा—श्रीरघुवर गुण गण विमल, सुर मुनि करत बखान ॥

कहत सबै को राम सम, है त्रिलोक बलवान ॥ १ ॥

जो दशमुख निज बाहुबल, जीति लये सब लोक ॥

ताहि मारि रघुवीर प्रभु, कीने सकल विसोक ॥ २ ॥

सो अस्तुति सुनि राम सों, कही सिया मुसक्याय ॥

देखहु सब लघु बातको, वर्णत किती बढाय ॥ ३ ॥

तब रघुबर मन माषिकै, बोले बैन उताल ॥

किमि लघुबात जु वध कियो, महा प्रबल दशभाल ॥ ४ ॥

चौ०—सो सुनि भाषी जनकदुलारी ❀ कहाहुतो रावण बल भारी॥
लघु निश्चर ताको प्रभु मारा ❀ यामहँ कौन वीर गुण सारा ॥ ५ ॥
मिथिला माहि सुनी हौं ख्याता ❀ गौतमऋषि वरणी वर ज्ञाता ॥
त्रैरावण इक लंक रहाही ❀ दूजो सो पाताल बसाही ॥ ६ ॥
त्रितिय महारावण जिहि नामा ❀ जाके सहस शीश अभिरामा ॥
रहैसु पुष्कर द्वीप मझारा ❀ दशमुख सम तिहि दास अपारा ७॥
सुनतहि राम क्रोध उरलाई ❀ दई सपदि मंत्रीन रजाई ॥
सकल सैन चतुरंग सजावो ❀ अरु चहुँ दिशिके भूप बुलावो॥८॥
पुष्कर द्वीपहि बेगि सिधारैं ❀ सुभट महा रावण तिहि मारैं ॥
सुनि मंत्री द्रुत पत्र पठाये ❀ सदल भूप बहु अवधहि आये॥९॥

दोहा—तब रघुवर ध्यायो सपदि, आयो पुष्पक यान ॥
बंधु सैन युत बैठि तिहि, कीनो सुदिन पयान ॥ १० ॥
राम संग सुग्रीव अरु, जाम्बवंत लंकेश ॥
अपर भूप निज निज विपुल, साजे सैन सुदेश ॥ ११ ॥
अंगद हनुमत नील नल, आदिक वीर अपार ॥
यह दल ताहूते अधिक, रहो जु लंक मझार ॥ १२ ॥

चौ०—पुष्करद्वीपहि जाय उताला ❀ परो घेरि चहुँ कटक विशाला॥
रावण सुनी सदल रघुनाथा ❀ आये युद्ध करन मम साथा॥१३॥
सहज विहँसि सो वैन उचारे ❀ करैं समर कह राम विचारे ॥
हौं तिनहित क्यों सैन सजाऊँ ❀ एक बाण ते सबहि भजाऊँ ॥१४॥
यौं कहि सहज बाण धनु लीनो ❀ चलो महारावण मद भीनो ॥
आप एकदल सन्मुख आवा ❀ तिहि लखि राम कटक किय धावा १५
तबै महारावण धनुताना ❀ छाँडो सहज एक वर बाना ॥
तिहि शर जनित प्रचंड समीरा ❀ लागि उड़े सब प्रभु दल बीरा १६॥
उड़े सबंधु सदल श्रीरामा ❀ परे आय कौशलपुर धामा ॥
जाम्बवंत अंगद कपिराई ❀ गिरे सुभट किष्किंधा जाई ॥१७
परे लंकपति लंक मझारी ❀ संयुत सकल निशाचर धारी
सैन समेत अपर नृप जेते ❀ निज निज ठाम गिरे [illegible]

दोहा–निज निज थल इहि भाँति सब, छिनमें परे जु आय ॥
स्वप्न माहिं सुख सोक ज्यों, जागे कछु न लखाय ॥१९॥
नहिं तनु भंग न व्रण कछू, भेद न परो जनाय ॥
जनु कोऊ उतते इतै, लायो अंक उठाय ॥ २० ॥

दोवई छंद।

सो गति हेरि चकितह्वै सबही सोंच सकोथ बढाये ॥
राम रजाय पाय पुनि सजि दल सकल अवधपुर आये ॥
सहित सैन रघुवीर धीर धरि बेगि जाय तहँ छाये ॥
रावण फेरि प्रथम सम शरते निज निज थलहिं पठाये ॥ २१ ॥
गति विलोकि सो जनकदुलारी कछु न कहैं मुसक्यावैं ॥
रघुनंदन सिय ओर लखैं तब हृदय अधिक सकुचावैं ॥
पुनि बहु क्रोध लाय कौशलपति सबहि बुलाय सजाये ॥
कीश ऋच्छ निश्चर नर सारे महारोष उर छाये ॥ २२ ॥
साजि सैन जब चलन चहे तब बोलीं जनककिसोरी ॥
अबकी बार नाथ सँगहौंहूँ चलौं सु यह रुचि मोरी ॥
लंक युद्ध कीनो प्रभु तब मैं विवस हुती न निहारो ॥
यातें उर अभिलाष लखौं चलि समर वीर बल भारो ॥ २३ ॥
सिय रुचि जानि संगलै रघुवर कीनो सदल पयाना ॥
परम प्रबंध ठानि द्रुत आये छाये भट बलवाना ॥
सुनी महारावण पुनि राघव कियो प्रबल अति घेरा ॥
यातुधान तब चलो समरहित साजि कटक बहु तेरा ॥ २४ ॥

दोहा–भिरे दुहूँ दल प्रबल भट, भयो युद्ध अति घोर ॥
छायो हाहाकार चहुँ, करत सुरासुर शोर ॥ २५ ॥
कोपि महा रावण तबै, फेर तजो सो तीर ॥
सब निज निज थल उड़ि परे, रहे सिया रघुवीर ॥२६॥
पवनपुत्रको हेत गुणि, बीचहि राखो पौन ॥
सँ[illegible] वीर तहँते सपदि, प्रभु ढिग कीनो गौन ॥ २७ ॥

चौ०-तहां रहीं सिय एरु दुरानी ❀ दूजे श्रीरघुवर धनुपानी ॥
तीजे हनूमान बलवाना ❀ चौथो कोउ रहो नहिं आना ॥ २८ ॥
निरखि महा रावण वरियारा ❀ गर्जि धाय राघवहि प्रचारा ॥
ता छिन राम अमित शर मारे ❀ सोऊ बाण अपार प्रहारे ॥२९॥
तासु सहस्र शीश वपु भारी ❀ रथ बैठो शिर व्योम मझारी ॥
सो शर हनत लगत प्रभुगाता ❀ रामबाण तिहि कंठ न जाता३०॥
लखि रामहिं शिर धरि हनुमाना ❀ ताहू ते तनु उच्च बढाना ॥
तब रघुवीर अनल शर मारा ❀ भयो तुरंग रथ सारथि छारा ३१
पुनि बहु विशिख बाण प्रभु छंडे ❀ यातुधान अगणित रणखंडे ॥
हाय हाय करि निश्चर वागे ❀ सभय विहाल भभरि सब भागे३२
हेरी सहस्रशीश बलवाना ❀ प्रभुहिय हनो चंड वर बाना ॥
लागत सो उदंड खर तीरा ❀ मूर्छित भये विकल रघुवीरा३३॥
तब कपि शिरतै प्रभुहि उतारी ❀ बैठारे गहि भूमि मझारी ॥
सोचत हनूमान मनमाहीं ❀ इन तजिहम किमि युद्धकराहीं॥३४॥

दोहा-हम कीजे उत युद्ध इत, नाथहि निरखि विहाल ॥
घात करै खल कोउ तौ, होवै निपट कुचाल ॥ ३५ ॥
इत सोचत इहि भाँति कपि, मोचत लोचन वारि ॥
उत कीनो बहु क्रोध सिय, पियहि विहाल निहारि ॥३६ ॥

चौ०-तबहिं कालिका रूप कराला ❀ प्रगटीं लीने खड्ग विशाला॥
कर खप्पर उर नर शिर माला ❀ मुख ते कढत हुतासन ज्वाला३७
विथुरे केश तेज तनु भारी ❀ श्याम अंग दुर्जन भयकारी ॥
संग शक्ति गण चंड अपारा ❀ सकल खड्ग खप्पर करधारा३८॥
कीनों महा कालिका क्रोधा ❀ मारे सकल निशाचर योधा ॥
काटि काटि तिन खप्पर डारैं ❀ शोणितपान करैं किलकारैं ३९ ॥
इहि विधि शक्ति सकल खल खाये ❀ कितहूँ कोउ न बचे दुराये ॥
रहो सहस्रमौलि इक आपा ❀ धाय हनत शक्ति करि दापा ४०
महा कालिका तब करि रीसा ❀ खंडन लगी तासु बहु शीशा ॥
ता छिन भयो आचरज भारी ❀ जो विलोकि डरपे सुर झारी४१॥

दोवई छंद ।

शोणित बिंदु परै भूतल मधि असुर अंगते जेते ॥
होयँ महारावण तिन कणते प्रगटते तत्क्षण तेते ॥
गति विलोकि यह महा कालिका निज रसना विस्तारी ॥
झंपित करी वेगि ताही ते सो रण धरणीसारी ॥ ४२ ॥
तब तिहि तनुते रक्तबिंदु जो गिरैं सकल सो चाटैं ॥
गहि कर खड्ग महारावणके शीश भूरि ते काटैं ॥
महा कालिका शक्तिन संयुत इमि ताको संहारा ॥
असुर मरन लखि सुर हरषाये किये सु जैंजैकार ॥ ४३ ॥
वरषि सुमन दुंदुभी बजाई अस्तुति करी कदंबा ॥
सो सुनि क्रोध त्यागि शक्तिन युत गुप्त भईं जगदंबा ॥
सिय ह्वै प्रगट राम ढिग धाई लखे निपट बेहाला ॥
ताही छिन विधि शंभु इन्द्र तहँ आये अतिहि उताला ॥ ४४ ॥
दोहा—तब विरंचि प्रभु अंगपर, प्रमुदित फेरो हाथ ॥
विनय करी बहु चेतलहि, हरषि उठे रघुनाथ ॥ ४५ ॥
सिय महिमा सुन राजसुत, लहो परम आनंद ॥
दुहुँ अस्तुति करिकै मुदित, गये सकल सुरवृन्द ॥ ४६ ॥
रघुवर सिय हनुमंत युत, बैठि सुपुष्पक यान ॥
आये कौशलनगर मधि, कीनो विदा विमान ॥ ४७ ॥
राम सिया आगमन सुनि, धाये तीनहु बन्धु ॥
आय परे पग प्रेम भरि, उमगाये सुखसिंधु ॥ ४८ ॥
पुर परिजन सिय राम लखि, भये परम आनंद ॥
घर घर भये वधावने, कहैं जैति रघुचंद ॥ ४९ ॥
भयो महा रावण निधन, शोर छयो तिहुँ लोक ॥
सिय प्रभाव वर्णत सबै, मिटो सकल दुख शोक ॥ ५० ॥
सीताराम अनंद युत, राजत अवध मझार ॥
सुर मुनि नर यश गावहीं, होत सु जै जैकार ॥ ५१ ॥

इति श्रीरा० र० अ० वि० महारावणवध
वर्णनो नामदशमो विभागः ॥ १० ॥

दोहा–एक समै श्रीरामसों, हनुमत कह कर जोरि ॥
भुव मंडल हेरौं चहूँ, है प्रभु यह रुचि मोरि ॥ १ ॥
हो रजाय इक दिवसकी, आऊँ निरखि उताल ॥
सुनि कपि रुचि आज्ञा दई, पुनि बोले रघुलाल ॥ २ ॥
जैयो सबही देशपै, बंग देशके माय ॥
है सुंदर इक रतन वन, तहँ न धारियो पाय ॥ ३ ॥
सुनि प्रभु सिख शिर नायकै, उछले कपि बरजोर ॥
अवलोको द्वै याम मधि, भुव मंडल चहुँ ओर ॥ ४ ॥
आये प्राची दिशि तबै, लखि कौशिक अस्थान ॥
गये मुनिहि शिरनायकै, बोले कपि हनुमान ॥ ५ ॥
मुनिनायक मम स्वामि गुरु, मो हिय शंका भूर ॥
कृपा सहित उपदेश करि, कीजे सो भ्रम दूर ॥ ६ ॥
विधि विरचित यह सृष्टि मधि, सुख दुख रूप कुरूप ॥
किहि गुण औगुण होतहैं, सो वरणिय मुनि भूप ॥ ७ ॥
तब सादर कह गाधिसुत, सुनौ वीर हनुमान ॥
जीव लहै संसार फल, पूरव कृत्य प्रमाण ॥ ८ ॥
प्रथम किये जप योग तप, दान जीव सो आय ॥
धन गुण प्रभुता रूप बल, सुख युत जग विलसाय ॥ ९ ॥
जिन कुकर्म कीने तिनै, दुख होवें दुहुँ ठौर ॥
हौं भाषौं संक्षेप इमि, गुणि लीजो बहु और ॥ १० ॥
परधन तिय सुत हरनते, होतामिश्र जु नर्क ॥
गो द्विज पितृ वध द्रोहते, कालसूत्र संतर्क ॥ ११ ॥
दंडा दंडहि देत सो, शूकरमुख मधि जात ॥
अंध कूपते परहिं जे, सुरस अकेले खात ॥ १२ ॥
गरलद अग्निद चौर ते, सारमेय मधि जायँ ॥
दंदसूक पावैं पिसुन, निंदक रौरव मायँ ॥ १३ ॥

चौ०-जे विश्वासघात कछु करहीं ❀ ते जन शूल नर्क महँ परहीं ॥
मिथ्यावादी बीचिहि जाहीं ❀ गुरु श्रुति विमुख सुक्षार रहाहीं १४

इमि अनेक जे पातक आहीं ❀ तिहि कृत जीव नर्कमधि जाहीं॥
भोगि पाप पुनि जग महँ आवैं ❀ तिहि प्रमाण सब चिह्न जनावैं १५

दोहा–श्याम दंत मद पीलखौं, वादी खंडित अंग॥
निंदक हो खल्वाट अरु, परहासक दृढ़ भंग॥ १६॥
मातागामी लिंग विन, कन्यागामी कुष्ट॥
भगिनीगामी के ह्दै, होय महा व्रण पुष्ट॥ १७॥
मित्रतियागामी जु सो, रहै भारजाहीन॥
स्वामिगम्य तिय गमन ते, गंडमाल दुख दीन॥ १८॥
राखै तियन प्रतीतिपै, तिनते करै अधर्म॥
तासु अंगमें दुखद बहु, रुज होवैं गज चर्म॥ १९॥
उच्च जात जो आप ते, तिहि तिय भोग कराय॥
ताके मस्तकमें सदा, महा रोग सरसाय॥ २०॥
आत्मघाती हस्त रुज, मिथ्यावादी मूक॥
परसुख अनदर्शी हिये, उठै सदाही हूक॥ २१॥
देवनिंद प्रिय बधिर हो, कुब्ज कुटिलता पाय॥
वट पारी पद रुज रहै, पिशुन श्वास उपजाय॥ २२॥
गर्भपात कारिहि सदा, क्षई जलोदर जान॥
छर्दि विषद धूर्तहि मृगी, मत्त कृतघ्नी मान॥ २३॥
अग्निदाह कारीहि बहु, होय रक्त अति सार॥
शतकृत बाधकके रहै, रुज नित उदर मझार॥ २४॥
शिशुघाती सुतहीन अरु, तियघाती धनहीन॥
गोद्विज स्वामी घात ते, गलित कुष्ठ तनु छीन॥ २५॥
मृषा पक्षकारी सुतिहि, होवै पक्षाघात॥
गुदरोगी जल सुर सदन, जे विट मूत्र करात॥ २६॥
इहि विधि चिह्न अनेक ते, नर नारीके अंग॥
पूरव कृत पातकनके, लखे परैं सब ढंग॥ २७॥

प्र० ॥ पद्म० श्लोक ॥

परवित्तं परापत्यं कलत्रं हरते च यः ॥
तस्य पातं तु तामिस्रे कुर्वन्ति यमकिंकराः ॥ १ ॥ इत्यादि ॥

तत्रैव।

मातृगामी च पुरुषो जायते लिंगवर्जितः ॥
स्वसुतागमने चैव रक्तकुष्ठं प्रजायते ॥ २ ॥ इत्यादि।

चौ०—यौं कहि भाषी गाधिकुमारा ❀ है नहिं पाप पुण्यको पारा ॥
याते सबहि उचित यह बाता ❀ हरिहि भजै दुहुँलोक सुत्राता २८॥
सुनि मुनि वचन वीर हुलसाने ❀ धन्य धन्य ऋषिवरहि बखाने ॥
शीशनाय गवने बजरंगा ❀ वश भवितव्य भई मतिभंगा ॥ २९ ॥

दोहा—किय विचार कपि ईश मुहिं, क्यों वरजो तहँ जान।
चलि हेरौं तौ देश वह, किमि सुरत्न वन थान ॥ ३० ॥
यौं विचारि हनुमत सपदि, जाय लखो सो देश।
पुनि अवलोको रतन वन, परम अनूप सुदेश ॥ ३१ ॥
रजत हेम विद्रुम विटप, मणि मुक्ताफल फूल।
द्विज सजीव बहु रत्न मय, सरित तडाग अतूल ॥ ३२ ॥
तिहि वन चहुँ प्राकारवर, चारु चार दृढ द्वार।
परम विचित्र बिशाल बहु, तासु मध्य आगार ॥ ३३ ॥
तहाँ द्वार रक्षक तिया, एक वृद्ध बलरास।
तेज़ पुंज दुर्बल अतिहि, बैठी सहित हुलास ॥ ३४ ॥
ताढिग हनुमत आयकै, कही लखौं वनजाय।
सो वरजी तब तिहि निदरि, चले वीर वरियाय ॥ ३५॥
तब वह तिय कपि पगपकरि, फेंके भूरि भ्रमाय।
राम निकट हनुमंत द्रुत, परे अवधमें आय ॥ ३६॥
लखि सकुचे कपि प्रभु हँसे, तब हनुमत करजोरि ॥
विनय करी रघुवर क्षमी, आज्ञाभंग जुखोरि ॥३७॥
निज अपराध क्षमायकै, रहे मुदित हनुमंत ॥
राम स्वभाव कृपालुता, यश वर्णत सबसंत ॥ ३८ ॥

इति श्री० रा० र० अ० वि० हनुमत पर्यटन वर्णनो
नाम एकादशो विभागः ॥ ११ ॥

सो०—श्रीरघुवर गुणग्राम, कथा होत तिहुँलोक मधि ॥
सुर नर मुनि वसु याम, यूथ यूथ वर्णत सुनत ॥ १ ॥
चौ०—मुनि अगस्त्य इक समै सुजाना ❀ करतहुते रघुवर यशगाना॥
ताछिन ऋषि बोले हुलसाई ❀ करौं कहाँलग रामबडाई ॥ २ ॥
दोहा—लखौं कीश नल लंकमें, किमि कीनो अपराध ॥
अपनायो तिहि करि क्षमा, ऐसे कृपा अगाध ॥ ३ ॥
सुनि बूझी सब चकित ह्वै, कहा कियो नलनाथ ॥
तब मुनिवर ऋषि गणनते, वर्णन लगे सुगाथ ॥ ४ ॥
चौ०—कीनी लंक विजै जब रामा ❀ तब वर भूषण वसन ललामा॥
तीजे दिवस सबहि बहु दीने ❀ कीश भालु परितोषित कीने ५॥
तादिन पट भूषण सजि नाना ❀ नल कपि धरि नरतनु बलवाना ॥
हाट वाट चहुँलंक मझारी ❀ निरखत पुर शोभा सुखकारी ६॥
ताछिन एक निश्चरी बाला ❀ ऋतु मंजन किय युवा रसाला ॥
मोहित भई नलहि सो हेरी ❀ कीशहु दृष्टि नारि सों भेरी ॥७ ॥
धाय आय सो निश्चर वामा ❀ कपिहि बोलि लैगई स्वधामा ॥
बहु सन्मान सहित बैठारे ❀ सकुचि विहँसि मृदु वचन उचारे८॥
कीन आजहौं ऋतु अस्नाना ❀ तुमहि निरखि मोचित्त लुभाना॥
लावो हीय न और विचारा ❀ मोमिलि करो निसंक विहारा ९॥
तासु वचन सुनि कपि हिय सोचा ❀ परतिय गमन कर्म अति पोचा॥
बहुरि कीश यह उर ठहराई ❀ उत्तर दीने नाहिं भलाई ॥१० ॥
दोहा—तिय सपष्ट मुख आपने, जो माँगै रतिदान ॥
ह्वै समर्थ नहिं देय तौ, तिहि सम दोष न आन ॥ ११ ॥
यौं गुणि भाषी कीश तिहि, सुनौ सुंदरी बाल ॥
तुम निश्चरी अनूप हौ, नव योवना रसाल ॥ १२ ॥
पै विशुकर्मा देवके, अंश जनित हम आहिं ॥
सुर निश्चरी विहारमें, पातक दुहूँ लगाहिं ॥ १३ ॥
तब बोली वह निश्चरी, सुनौ एक इतिहास ॥
सत्य प्रमाण बखानहूँ, मानौ दृढ़ विश्वास ॥ १४ ॥

दौवई छंद ।

कोविद एक विप्र हो ता ढिग बाल पढनहित आवैं ॥
पुत्री तासु हुती गुण आगर कंठ शास्त्र षट आवैं ॥
सो द्विजसुता एक द्विज सुतको रूप निहारि लुभानी ॥
करै कटाक्ष व्यंग्य बहु नित पै सो न हिए कछुठानी ॥ १५ ॥
तब तिय ह्वै अधीर मनसिजवश ताहि इकंत बुलाई ॥
निज मुखते रति दान सुयाचो सबिनय सकुच विहाई ॥
सुनि सो द्विजकुमार तिहि भाषी धर्म भगिनि तू मेरी ॥
पातक महा होय दोउनका कहा भई मति तेरी ॥ १६ ॥
सुनि द्विजसुता क्रोधकरि बोली दुष्ट कुष्ट होजाई ॥
शाप दियो ताके सप्तम दिन गयो अंग विनशाई ॥
विप्रकुमार विहाल रहै इमि पंच वर्ष तिहि बीते ॥
विचरतहीं औचक इक आयो सिद्धि संत कितहीते ॥ १७ ॥
तिहि लखि सो द्विज पुत्र जोरि कर विनय करी ह्वै दीना ॥
तब धरि ध्यान ज्ञान निधि ताको शाप पाप लखि लीना ॥
कही सिद्ध वर सुनौ विप्र अब याकी वही उपाई ॥
ताही मिलि रति होय ततक्षण तौ यह रुज मिटि जाई ॥ १८ ॥
तब द्विज पुत्र चकित ह्वै भाषी हौं सुधर्म दृढ़ राखा ॥
कहा रीति विपरीत भई प्रभु जाते यह फल चाखा ॥
सुनिकै संत कहीं है याको कारण इमि दृढ़ जानौ ॥
धर्म अधर्म दुहूं गति सूक्षम कछु आचरज न मानौ ॥ १९ ॥
निजतिय परतिय होय कोउ सो कोटि कला दरशावे ॥
पै रति दान सपष्ट न याचै अरु बहु युक्ति लगावै ॥
जब निज मुख ते विना व्यंग्यके तिय रति सन्मुख माँगे ॥
तब जो पुरुष समर्थ नमानै तौ अधर्म तिहि लागै ॥ २० ॥
पै यह धर्म अधर्म होतहै त्रेता द्वापरमाहीं ॥
सतयुग अरु कलिकाल दुहूँमाधि रीति उचित इमि नाहीं ॥
यौं कहि संत गमन कीनो तब द्विजसुत हिय पछिताई ॥

जाय पाय औसर तिहि तियसो बहु विधि विनय सुनाई ॥२१॥
तब सो नारि विचारि दया उर पर उपकार निहारी ॥
बोली गयो समय वह तबही अब दुहुँ दशा नियारी ॥
पै तुव प्राण देह रक्षाहित करौं सु अंगीकारा ॥
यों कहि कीनी कृपा विप्र लखिभयो शाप उद्धारा ॥ २२ ॥
द्विज सुत अंग विरुज भो तबहीं दुहुँ भे पातक हीना ॥
सो युग धर्म अधर्म अलख है कहा वीर चित दीना ॥
यौं कहिकै निश्चरी सुंदरी मदन प्रेम मदसानी ॥
दै गलबाँह प्यार करि नलके हिये हरषि लपटानी ॥ २३ ॥
दोहा—अंक भरत ही मैनके, विवश भये नल वीर ॥
मिले रहसि थल नारि नर, बहुरि रहै किमिधीर ॥ २४ ॥
चौ०—ताहि कीश गहि अंक लगाई ❀ सोतिय हिय आनंद अघाई
तब दोऊ करि वर मद पाना ❀ कियो विहार मुदित मन माना २५
पुनि दुहुँनेहनसा सुखसाने ❀ देह गेह सुधि सकल भुलाने ॥
इत सुकंठ सब सुभट सम्हारे ❀ और सकल पै नल न निहारे२६
द्रुत हरीश बहु कीश पठाये ❀ सो नहिं मिले खोजि सब आये॥
तब रघुवर भेजे हनुमंता ❀ कही लाव कहँ नल बलवंता२७
जाय पवनसुत नगर मझारी ❀ चहूंओर सब लंक निहारी ॥
जब न मिले तब ह्वै मंजारा ❀ गृह गृह पैठि लखो पुरसारा२८
जब तिहि भवन गये बजरंगा ❀ लखे नगन सोवैं दुहुँ संगा ॥
तब मुख फेरि ओट मधि आई ❀ धरि कपितनु निज गिरा सुनाई२९
हनुमत वाणी सुनि कपि जागा ❀ सकुचित शंक भभरि उठिभागा॥
चलत निश्चरी कर गहि बोली ❀ अब तजि जाहु सुनाहि ठठोली३०
तव सम मो संतति उपजाई ❀ नर लखि लेहिं निशाचर खाई ॥
तिहि रक्षणहित इत रहिजावो ❀ कै मोको लै संग सिधावो ॥३१॥
सुनि तिहिबैनचकितकपि दोऊ ❀ कहि न सके काहू कछु कोऊ ॥
तब हनुमंत राम ढिग धाई ❀ सकल दशा लगि श्रवण सुनाई३२

सुनि पुनि राम कही द्रुत जावो ❀ दुहू निशंक बोलि इत लावो॥
धाय आय हनुमत लैसाथा ❀ पहुँचे वेगि जहां रघुनाथा ॥३३॥
नल सकोचवश शीशनवाये ❀ लखि रघुवर तिन विहँसि बुलाये
क्षमि अपराध निकट बैठारे ❀ दै बहु धीर सुबैन उचारे ॥ ३४ ॥
पुनि सो तियहु बिमान बिठारी ❀ तहँते कियो पयान खरारी ॥
जबहिं यान आयो बहु दूरी ❀ सिंधु निकट देखी महि रूरी॥३५

दोहा-तहाँ राम सो निश्चरिहि, भूतलदई उतारि ॥
पुनि दीनो वरदानवर, गति भवितव्य विचारि ॥ ३६ ॥
हो संतति तव उदरते, द्वै सुत कन्या एक ॥
वृद्धि लहै तिनते कुटुम, प्रगटै अपर अनेक ॥ ३७ ॥
नर कपि आकृतरूप हो, पितु प्रभावते सर्व ॥
अशन पान बहु आसुरी, तव गुण रहै निगर्व ॥ ३८ ॥
मम अशीशते गौरतन, हो गुण बुद्धिनिधान ॥
नीति धर्म ज्ञाता विपुल, परम प्रतापी मान ॥ ३९ ॥
राज्य लहैं कलिकालमधि, कछु भुव मंडल माहिं ॥
भानुदेव तिन पै सदा, अतिही कृपा कराहिं ॥ ४० ॥

प्र० ॥ भविष्योत्तरपुराणे ॥ श्लोक० ॥

गौरांगा सूर्य्यभक्तास्ते विद्याबुद्धिविशारदाः ॥
कलौ राज्यं करिष्यन्ति वर्णाश्रमविवर्जिताः ॥ १ ॥

दोहा-यौं वर दै रघुनाथ तिहि, गमन कियो निज धाम ॥
सो तिय ताही थल रही, संतति लही ललाम ॥४१॥

चौ०-प्रगटे तिमि तिहुँ रूप विशाला। जिमि बरदानदयो रघुलाला ॥
तिन बय प्रौढ पाय तप कीना ❀ भानु प्रसन्नहेतु प्रण लीना॥४२॥
लखि बहु तप प्रमुदित रवि आये ❀ हरिहि हेरि सो शीश नवाये ॥
पाय रजाय सहित अनुरागा ❀ दुहुँ करजोरि सुवर यह मांगा ४३

दोहा-मम कुटुंब बहु वृद्धि है, राज्यलहे कलि माहिँ ॥
प्रजापाल ते सब रहैं, नहीं अनीति कराहिँ ॥ ४४ ॥

चौ०-एवमस्तु तब कही दिनेशा ❀ पुनि बोले तिहुँ वचन सुदेशा ॥
कीनी कृपा यथा दिनराई ❀ तिमि कुटुंब पर रहै सदाई॥४५॥
दोहा-इमि वर दै ग्रहपति गये, सो आये निज ठाम ॥
दिनईशहि नित ध्यावहीं, मुदित रहैं वसुयाम ॥ ४६ ॥
चौ०-सप्तसहस्र वर्ष अब बीते ❀ तिन कुटुंब बाढत तबहीते ॥
ते कलि मध्य करैं महिराजा ❀ इमि वरदान दियो रघुराजा ४७॥
न्याय नीति तत्पर मतिधामा ❀ प्रजापाल वर वीर ललामा ॥
विस्रुकर्मा सुदेव शुभ अंशी ❀ शिल्पकर्म अति होय प्रशंसी४८
अपर अनेक अनूपम काजा ❀ करैं सुधर्म नीति मयराजा ॥
भूरि काल लग राज्य कराहीं ❀ रहे प्रताप चहूं दिशि माहीं॥४९॥
इहि विधि विपुल कथा मुनि गाई ❀ रघुपति कीरति जनन सुनाई ॥
सुनि सुर नर ऋषि संत अपारा ❀ करत रामको जैजैकारा॥ ५० ॥

इति श्री० रा० र० अ० वि० गौरांगकथा
वर्णनो नाम द्वादशो विभागः ॥ १२॥

इति श्रीरसिकविहारीकृत श्रीरामरसायनग्रंथे अभिषेक-
चरित्र वर्णनो नाम सप्तमोविधानः ॥ ७ ॥

दोहा-यथा योग वर नीतिमय, समै समै सब काज ॥
अष्ट याम मर्याद युत, करत सदा रघुराज ॥ १ ॥
चौ०-चार दंड निशि रही सु जवहीं । निरखि जु ब्रह्म मुहूरत तबहीं ॥
आय द्वार द्विज वेद उचारे ❀ बंदीजन वर विरद पुकारे ॥ २ ॥
बाजै वर नौबत सहनाई ❀ सजे साज सेवक समुदाई ॥
कुंज कुंज अलि पुंज अपारा । निज निज थल किय सार सम्हारा३
दोहा-ह्वै शुचि सेवक सेवकिनि; प्रथमहि सौंज सजाय ॥
पुनि औसर लखि कै अली, करैं गान वर आय ॥ ४
चौ०-पुनि जे अंतरंगिनीबाला ❀ ते शुचि ह्वै रचि रूपरसाला ॥
प्रमुदित कनकभवनके माहीं ❀ सैन कुंज वर नृत्य कराहीं ॥ ५॥

पुनि अति अंतरंगिनीजोई ❀ गवनी निकट मंदगति सोई ॥
दंपति पद सरोज मृदु चापे ❀ मधुर मधुर सुर गीत अलापे ६॥
दोहा—तब दंपति निद्रा विगत, उठि बैठे सानंद ॥
बलिहारी सखि लेत सब, लखि दोऊ मुखचंद ॥ ७ ॥
पुनि दंपति उठि सेजते, सैन सिंगार उतारि ॥
अपर वसन धारे विशद, निज निज कुंज पधारि ॥ ८ ॥
चौ०-यथायोग दंपतिहि अलीगन ❀ निज निज थल सेवैं प्रसन्न मन॥
सकल सौच करि कर पद धोये ❀ वदन प्रछालि नींद सब खोये॥९॥
पुनि स्नान कुंज माधि आये ❀ सखिन सविधि मंजन करवाये ॥
वर शुचि पीतांबर तनु धारे ❀ कीने देव नित्य कृत सारे ॥१०॥
दोहा—होम ध्यान जप यजन वर, दान विधान अपार ॥
यथा उचित कीने सकल, दंपति सहित विचार ॥ ११ ॥
स्वर्णदान गोदान अरु, अन्नदान महिदान ॥
अपर दान बहु सविधि किय, सह श्रद्धा सन्मान ॥ १२ ॥
चौ०—पुनि शृंगार कुंजपग धारे ❀ भूषण वसन सु अंग सँवारे ॥
विविध सुगंध प्रसूनन माला ❀ साजि कियो शृंगार रसाला ॥ १३॥
इहि विधि सखिन दुहूँ शृंगारे ❀ पुनि इक सिंहासन बैठारे ॥
शुचि फल मेवा सरस सुहाये ❀ कछुक दंपतिहि अशन कराये१४॥
पुनि सरयू जल पान कराई ❀ कर प्रक्षालि वर विरी पवाई ॥
सजि आरती अलिन दुहुँ कीनी ❀ सविधि चतुर्दश आवृति दीनी१५
दोहा—चरणवेद ४ दृग २ लंकमुख, शशि १ वासर७सब अंग।
इमि चतुर्दशा१४ वृत्ति सो, सविधि आरती ढंग ॥ १६ ॥
प्र० ॥ नाभाजी कृत अष्टजामे।
दोहा—चार आवरत चरण पुनि, कटि युग मुख पर एक ॥
सप्त अवरत सर्व अंग, विधि युत करि सविवेक ॥२॥इत्यादि
चौ०—पुनि तहँ ते दंपति पग धारे ❀ संग सखीगण यूथ अपारे ॥
छत्र विजन चामर बहु साजा ❀ लिये यथोचित अली समाजा १७
विलग विलग सिविका माधि राजे ❀ निरखि छटा रति मनसिज लाजे॥
सखियन दुहुँ पालकी उठाई ❀ प्रमुदित निज निज ओर सिधाई१८

अंतर मग है जनकदुलारी ❋ रानी वंदन हेत सिधारी ॥
जाय सासु ढिग राजकुमारी ❋ पदगहि कीन प्रणाम सुखारी १९ ॥
उत सिय भगिनी विशद सुहाई ❋ रानी सदन सखिन सँग आई ॥
ते तिहुँ सासु सियहि नमि सोही ❋ सबही मुदित चहूं मुख जोही २० ॥

दोहा--राम मातके ढिग जुरीं, रानी अपर अनेक ॥
तिन सबको सादर बधुन, किय प्रणाम सविवेक ॥ २१ ॥

चौ०--पुत्र वधुन सब दयो अशीशा ❋ बैठारी सुघ्राण करि शीशा ॥
इत रघुवीर कनक गृह द्वारे ❋ अलिगण संग मुदित पग धारे २२ ॥
तहाँ सखा सेवक बहु राजे ❋ निज निज साज समय सम साजे ॥
आवतही उठि सकल प्रवीना ❋ प्रमुदित उचित सुवंदन कीना २३ ॥
यथायोग रघुवर सनमाने ❋ सबहीं अति आनंद अघाने ॥
पुनि सिविकाते राज कुमारा ❋ उतरि भये स्यंदन असवारा ॥ २४ ॥
तब अलिगण मिलि महल सिधारी ❋ सियके निकट गईं ते सारी ॥
इत रघुवीर समेत समाजा ❋ गमने गुरु पद वंदन काजा ॥ २५ ॥

दोहा–नित्य कर्म करि बंधु दुहुँ, अपर सखा सरदार ॥
जुरे आय जन वृंद बहु, रंगभवनके द्वार ॥ २६ ॥
तहँ आये रघुवंश मणि, उचित वंदि सब कोय ॥
मिलि गमने गुरु गेहको, सहित भक्ति मुद होय ॥ २७ ॥

चौ०–आय सबंधु गुरुहि शिरनाये ❋ दिय आशिष वसिष्ठ हुलसाये ॥
जुरे सुविपुल विप्रतिहि ठामा ❋ सबहि कीन रघुवीर प्रणामा ॥ २८ ॥
पुनि गुरुपत्निहि शीश नवाई ❋ चले राम शुभ आशिष पाई ॥
आये मात भवन हुलसाई ❋ संग सकल सज्जन समुदाई २९ ॥

दोहा–बाल सखा अरु बंधु वर, संग लिये रघुराय ॥
अपर द्वार थपि मातु ढिग, गवने विदित कराय ॥ ३० ॥
जाय सकल जननीन पद, सादर नायो शीश ॥
कंठ लाय शिर घ्राण करि, सबही दयो अशीश ॥ ३१ ॥
बैठारे सादर सबै, राम मात हुलसाय ॥
कियो प्यार सुत लखनसों, अति उमंग उमगाय ॥ ३२ ॥

जे नृप सुत संगी सखा, सेवक बैठे द्वार ॥
सब दिशिकी वर वंदना, अलिगण करी उचार ॥ ३३ ॥
चौ०-ताछिन कौशल्या महरानी ❀ आलिन प्रति भाषी मृदुवानी॥
मधुर सरस मेवा पकवाना ❀ लावो साजि थाल वर नाना ३४॥
सुनि सखिगण अति आतुर जाई ❀ भरि भरि थार सौंज लै आई॥
तब सब सुतन सखान समेता ❀ निज कर परसिमात भरि हेता ३५॥
पय पकवान सविधि फल मेवा ❀ मात कराये सबहि कलेवा ॥
नीर प्याय वर बिरी खवाई ❀ निज पट मुख पोछो हुलसाई ३६॥
पुनि जे द्वार सखा सेवकगण ❀ अशन पान तिन पठै मुदित मन॥
निज सुत सों सबहीको प्यारा ❀ किय महरानी परम उदारा ३७॥
उत कैकयी सुमित्रारानी ❀ अपर भूरि हिय अति सुख मानी॥
पुत्र वधुन आलिन युत तेऊ ❀ करवायो मन मुदित कलेऊ ३८॥
दोहा-सखा बंधु युत राम पुनि, मातनशीश नवाय ॥
चले विपुल जन संग चहुँ, दिवस याम इक आय ॥ ३९ ॥
सभा धाम मधि आयकै, श्रीरघुराज विराज ॥
जुरे विप्र सुर संत मुनि, अपर अनेक समाज ॥ ४० ॥
चौ०-तहां वेद वर शास्त्र पुराना ❀ नीति धर्म इतिहास जु नाना ॥
होत कथा सतसंग अनूपा ❀ कहत सुनत कौशल पुर भूपा ४१॥
इहि विधि दिन आयो द्वै यामा ❀ दीनी सबहि रजायसु रामा ॥
अपर सकल निज धाम सिधारे ❀ रहे संग जे जेवन हारे ॥ ४२ ॥
ताछिन राजसदन ते आई ❀ सेवक वृंद सुविनय सुनाई ॥
सो सुनि गमने राजकुमारा ❀ संग सखा सेवक सरदारा ४३॥
आय सकल शृंगार उतारा ❀ ह्वै सब शुचि पीतांबर धारा ॥
बैठे हेम पीठ रघुराजा ❀ यथायोग सह बंधु समाजा ४४॥
दोहा-कंचनमय मणि जटित वर, पात्र अनूप अपार ॥
अशन पान बहु वस्तु सब, परसी सुमति सुआर ॥ ४५ ॥
चौ० पंच ग्रास युत भोजन कीना ❀ पुनि सब मुदित आचमन लीना॥
बहुरि सकल सेवक हरषाई ❀ कियो सुअशन प्रसाद अघाई ४६॥

यौंहिं तिहुँ भगिनी युत हेता ❀ अपर नारि बर सखिन समेता ॥
राम भामिनी भोजन कीना ❀ दासी जन प्रसाद सब लीना ॥४७॥
पुनि सब सासुन शीशनवाई ❀ निज निज भवन वधू मुद आंई॥
उत रघुवीर रजायसुपाई ❀ गवने बंधु सखा समुदाई ॥४८॥
सैन कुंज मधि जाय सुरामा ❀ कीनो द्वै घटिका विश्रामा ॥
पुनि उठि सजि शृंगार अनूपा ❀ आये सभा अवध पुर भूपा ४९॥
रत्न सिंहासन मध्य विराजे ❀ सेवक सखा सचिवजन भ्राजे ॥
राज काज अधिकारी जेते ❀ आये सभा समै लखि तेते॥५०॥
मंत्र निदेश न्याय नृप काजा ❀ यथायोग किय सब रघुराजा ॥
वासर रहो दंड युग जबहीं ❀ उठे सभा ते रघुवर तबहीं॥५१॥
प्रमुदित रंगभवन मधि आये ❀ मुख प्रक्षालि शृंगार सजाये ॥
बंधु सखा सेवक हित संगी ❀ तहाँ जुरे सब जन बहु रंगी॥५२॥
बाहन विविध वाजि गज स्यंदन ❀ शिविका अरु विमान वर वृंदन ॥
पदचर वीर शस्त्र धर भूरी ❀ बहु चतुरंग सैन अति रूरी ५३॥
छत्र चमर व्यजनादिक साजा ❀ लिये यथोचित सुजन समाजा॥
वाद्यकार गायननर्तक गन ❀ वेतपाणि रक्षक बंदीजन ॥५४॥
भूषण बसन वित्त बहु लीने ❀ कोशप मुख निरखे दृगदीने ॥
इमि सब राज साज वर साथा ❀ सहसमाज गवने रघुनाथा॥५५॥
यथायोग बाहन सब राजे ❀ रघुवर शत्रुंजय पर भ्राजे ॥
मंद मंद विचरत पुरमाहीं ❀ चले राम जन दरश कराहीं५६॥
नगरनिवासी उचित जुहारैं ❀ मान सहित रघुवीर निहारैं ॥
कर उठाय सबही सनमानैं ❀ नमैं ताहि जिहि भूसुर जानैं५७॥
बसन विभूषन वित्त अपारा ❀ कोशप वरषत गज असवारा ॥
इहि विधि संध्या लग रघुवीरा ❀ पुर निरखतगे सरयू तीरा ॥५८॥
तहँ मज्जे जन संयुत प्रेमा ❀ संध्या वंदन कियो सनेमा ॥
पुनि ताही विधि सहित समाजा ❀ आये मातुसदन रघुराजा॥५९॥

जननी पद गहि वंदन कीने ❀ सोलखि सुतहि अंक भरि लीने॥
कंचन जटित पीठ बैठारी ❀ करि आरती लई बलिहारी६०॥
पुनि कछु पय मेवा पकवाना ❀ अशन कराय दये मुख पाना॥
सखा बंधु युत रामहि माता । कियो प्यार इमि प्रफुलित गाता६१

दोहा—पुनि जननिहि शिरनायकै, गवने सहित समाज ॥
रंगभवन आये मुदित, कौशलपति रघुराज ॥ ६२ ॥
दई रजायसु अपर बहु, गमने निज निज ठाम ॥
सखा बंधु सेवक उचित, रहे निकट अभिराम ॥ ६३ ॥
मणिनजटित वरमंच मधि, सोभित श्रीरघुराय ॥
राजे सादर उचित बहु, बंधु सखा समुदाय ॥ ६४ ॥
नृत्य गान वर वाद्य बहु, कौतुक हास विलास ॥
भयेरैनि इक याम लों, रंग सदन बिचखास ॥ ६५ ॥
पुनि उठि बंधु सखान युत, बोलि संग सरदार ॥
राजमहल आये मुदित, दशरथ राजकुमार ॥ ६६ ॥
मिलि बैठे संग अपर सब, भोजन कीन अघाय ॥
रंच रंचही ग्रास लिय, बंधु सहित रघुराय ॥ ६७ ॥

चौ०-यौं सब मिलि तहँ भोजन कीना । सेवक वृंद प्रसाद सुलीना ॥
दई रजाय तबहि श्रीरामा । गये अपर जन निज निज धामा६८
बंधु सखा सेवक अति प्यारे ❀ तिन युत कनकभवन पगधारे ॥
द्वार आय दिय सबहि रजाई ❀ निज निज सदन गये शिरनाई६९
साज सहित प्रथमहि सखि वृंदा ❀ खरीं तहाँ लखि समय अनंदा॥
तिन सँग अंतर महल पधारे ❀ मुदित उठीं सिय पीय निहारे७०
कर गहि सिंहासन पधराये ❀ राजकुँवर लखि आनँद छाये ॥
सादर मधुर वचन कहि प्यारी ❀ वाम भाग निज ढिग बैठारी ७१
ताछिनसौंज साजि सखि आईं ❀ करी आरती हिय हुलसाई ॥
पुनि दंपति शृंगार उतारे ❀ रैनि साज वर अपर सुधारे ७२॥
दुहुँ रुचिमय दुहुँ कियो शृंगारा ❀ साजि परस्पर करि करि प्यारा ॥
अंगराग शुचि वसन विभूषण ❀ सुमन सुगंध धारि प्रमुदित मन७३

कर पद मुख प्रछालि पुनिराजे ❀ हेमपीठ इक ठौरहि आजे ॥
ताछिन सखी सुव्यंजन लाई ❀ षटरस स्वाद सुवराणि न जाई ७४
मद मादक सुगंध मय नाना ❀ रंग रंग शुचि स्वाद प्रमाना ॥
आंमिष मिष्ट अनेक प्रकारा ❀ व्यंजन अपर भरे बहु थारा ७५॥
सखि दंपति मिलि प्यार बढावैं ❀ अरस परस मद पान करावैं ॥
पुनि दोऊ इकठौर जिमाये ❀ करि करि हास विलास रिझाये७६
देत लेत मुखग्रास परस्पर ❀ करि मनुहार बखानि स्वादवर ॥
व्यंग्य हास आनंद अनेका ❀ ठानत उचित एक प्रति एका ७७॥
इमि दंपति किय भोजन पाना ❀ करि आचमन लीन दुहुँ पाना ॥
सखी दासिका युत अहलादा ❀ लियोसबहि सानंद प्रसादा ७८॥
दुहूँ परस्पर पुनि कर धारे ❀ प्रमुदित शैन भवन पगधारे ॥
सुभग सेज मृदु आय विराजे ❀ चंद्रकलादि साज सब साजे ॥७९॥
परम प्रवीण अली वर रूपा ❀ नृत्य गानते करैं अनूपा ॥
सरस वाद्य बहु विविध बजावैं ❀ हाव भाव दंपतिहि दिखावैं॥८०॥
इहि विधि रंग उमंग अपारा ❀ होत कनक आगार मझारा ॥
पिय प्यारी आनंद अघावैं ❀ मुदित परस्पर दुहुँ बतरावैं ॥८१॥
युगल याम यामिनि इमि आई ❀ तब दंपति दृग आलस छाई ॥
लखि सखि वृंद लई बलिहारी ❀ सबही निज निज ठौर सिधारी८२

दोहा–परम अंतरंगी सखी, रहीं निकट कछु दूर ॥
अपर गईं निज निज थलहि, कियो शैन सुख पूर ॥ ८३ ॥
बिरी मसाले सुमन शुचि, मादक अशन सुनीर ॥
अपर साज सब साजि सखि, धरे सेजके तीर ॥ ८४ ॥
इहि विधि सकल विलासयुत, आनंद भरे अछेह ॥
शैन कियो दंपति मुदित, पगे परस्पर नेह ॥ ८५ ॥
विपुल अलीगण शस्त्र धर, पुरुष वेष वर जोर ॥
समै समै प्रति पाहरू, फिरै महल चहुँ ओर ॥ ८६ ॥

मणि दीपक बहु भवन चहूँ, छायो परम प्रकाश ॥
तासु छटाहै अकथ जो, रहसि विलास अवास ॥ ८७ ॥
अष्टयाम सिय राम इमि, करत रीति युत काज ॥
नीत प्रीत मर्याद लखि, प्रमुदित सकल समाज ॥ ८८ ॥
अष्टयाम प्रति रीति जिमि, करत काज श्रीराम ॥
तिहुँ बन्धुन तिमि निज उचित, रहत सदा मतिधाम॥८९॥

इति श्री० रा० र० विहारविधाने अष्टयामरीति-
वर्णनो नाम प्रथमो विभागः ॥ १ ॥

दोहा—अवध नगर आनंद अति, नित नव होत उछाह॥
ब्रह्मादिक वर विविध बहु, आवत दरश उमाह ॥ १ ॥

पवंगम छद

देश देशके भूप अवध पुर आवहीं। सब रघुवर नृपनीतिहेरि हुलसावहीं। अखिल प्रजा गुणवंत आप चहुँ ओरके ॥ दरश करैं सानंदित राजकिशोरके ॥२॥ यथायोग सनमान दान अधिकायकै सबहि देत सुख राम सुआश पुजायकै। कोऊ वर महिपाल समय लखि रामको ॥ युत समाज लैजाहिं मुदित निज धामको ॥ ३ ॥ कबहूँ मिथिलानाथ सप्रेम बुलावहीं ॥ लक्ष्मीनिधि चहुँ भगिनि आय लै जावहीं। भरत लषण रिपुदमन जाय तिन लावहीं । कबहूँ नेहवश रामहिं आप सिधावहीं ॥ ४ ॥ मिथिला अवध समाज जबै इक ठौरहो। ताछिनको आनंद अकथ कछु औरहो ॥ राम सियाकी वर्ष ग्रंथि प्रति वर्षके ॥ को वरणै किमि सो जिमि होय सहर्षके ॥ ५ ॥ जनक नगरते विविध वस्तु वर आवहीं ॥ नृपरानी जन विपुल सप्रेम पठावहीं। इहि विधि बहु व्यवहार लोक कुलरीति के ॥ सब राखत रघुवीर सहित नृप नीतिके ॥ ६ ॥ अगणित उत्सव होत यथोचित मोदमें। हुलसावैं नर नारि समस्त विनोदमें॥ छकी रहैं नित उचित सकल तिया सानंद सदा रनिवासमें ॥ छकी रहैं नित उचित उछाह हुलासमें ॥ ७ ॥

दोवई छंद ।

कबहूँ सखा बन्धु सेवक युत ऋतुवसंत रघुराई ॥
प्रमुदित जाय लखैं वन वागन बहु वर साज सजाई ॥
अशन पान अरु नित्य गान तहँ मृगया हास विलासा ॥
होतरहै मरयाद मोद मय सहित सखी रनिवासा ॥ ८ ॥
ग्रीषम ऋतु कबहूँ जल विहरैं सखन सहित रघुवीरा ॥
कबहूँ रहसि सरयूमंधि सिय युत रमैं सखिनकी भीरा ॥
कबहूँ सुमन कुंजमहँ राजैं कहुं उशीर गृहमाहीं ॥
दशरथ सुत अरु जनकनंदिनी इमि सानंद विलसाहीं ॥ ९ ॥
दोहा—प्रति ऋतु आति अनुपम अवध, शोभा बढ़त अपार ॥
पैपावस ऋतुमें छठा, औरै बहु सुखसार ॥ १० ॥
परमरम्य सुरसदन वे, जिनते सुखद न आन ॥
तिनते उत्तम अवधमें, लघु सेवक गृहजान ॥ ११ ॥
जहाँ सिया रघुवीर नित, रहत अवध पुर सोय ॥
तिहि समान तिहुँ लोकमें, दूजो थलकिमि होय ॥ १२ ॥

हरिगी० छंद ।

सुंदर विराजै भूमि चिंता मणि जटित छबि छावही ॥
तहँ राजमहल ललामकी सोभा अतुल सरसावही ॥
चहुँ ओर कंचन खचित रचित अमोल बहु माणिक लगे ॥
तहँ विविध लीलाके सुभग चित्राम नवरंगनरंगे ॥ १३ ॥
कहुँ जाल रंध्र विशाल सुभग कपाट सोभित अति भले ॥
माणि नील अरुण अनूपराजै खंभ झलकत झलमले ॥
सुंदर चँदोवा स्वच्छ मुक्ताझालरैं झूमत घनी ॥
बिच बीच नील सुरंग पीत अनेक विधि मर्कतमनी ॥ १४ ॥

चौपैया छंद ।

बहु महल सुधारे न्यारे न्यारे निज निज समय सुहाये ॥
रक्षक भट भारे रहत अपारे शस्त्र विचित्र सजाये ॥

पुनि तीनहुँ भैया मोद भरैया सुख युत करत कलोलैं ॥
रघुवर रुचि लीने रहत प्रवीने संग सखनकी गोलैं ॥ १५ ॥
रघुनंदन संगी सखा सुढंगी निज निज महलन राजैं ॥
जिनकी प्रभुताई बरणि न जाई लखि धनेश मन लाजैं ॥
सब भाँति सुपासा भोग विलासा करत दास अरु दासी ॥
मिथिला पुरबासी अवधनिवासी सकल सुकृतकी रासी ॥ १६ ॥

भुजंगी छंद ।

छटा औधकी को सकै गायकै । सिया राम राजैं भले भायकै ॥
सदाही प्रभामंत सो धाम है । पुरी सातमें मुख्य जो नामहै ॥ १७ ॥
कहूं गेह सो हैं घने रंगके । सुचित्राम राजैं भले अंगके ॥
कहूं हाट वाटै सुगंधैं सिची । कहूँ चांदनी है चहूंघाखिची ॥ १८ ॥
कहूँ फूल डाली धरी हैं घनी । सुधासी कहूँ वस्तुकेती बनी ॥
मिली झुंड गावैं सुनै नीकहू । कहूँ कौतुकी खेलठाने चहूँ ॥ १९ ॥
कहूं मल्ल जोरी भिरैंजंगसे । कहूं बाल खेलैं घने रंगसे ॥
कहूं लेततानैं सुरावर्त की ॥ कहूं नृत्य ठानैं भले नर्तकी ॥ २० ॥
कहूं विप्र उच्चारहीं वेदको । हरैं वेगि कामादिके खेदको ॥
कहूं छैल डोलैं भरे मोदमें । कहूं बाललीने तिया गोदमें ॥ २१ ॥
कहूं वाम सोहैं पिया संगमें । हिंडोरे सुझूलैं छकी रंगमें ॥
भरे मोदमें औधवासीरहैं । सिया लालके सो उपासी रहैं ॥ २२ ॥
घने जन्मलों शेष जो गावहीं । प्रभा धामकी पार ना पावहीं ॥
कही कौनपै जात सोभामहा । विहार स्थली लाड़िलेकी जहां २३ ॥

दोहा—पुनि सबही ते रुचिर अति, शैन सदन तिहि ठाम ॥
शिव अगस्त्य आदिक अमित, कहो जासु गुणग्राम ॥२४॥

पद्धरी छंद ।

श्रीकनक भवन आनंद रूप । शोभा अभंग अतुलित अनूप ॥
तिहि सप्तावरन विचित्र सोह । जिहि देखि कोटि सुरधाम मोह २५॥
सिय रघुनंदनको केलि भौन । तिहि की समता कवि कहहि कौन ॥
सो महल मध्य सखिगण अनूप । जहँ प्रात होत नहिं पुरुष रूप २६॥

इकराज कुँवर प्यारे विहाय । तहँ सखी वृन्द सबही लखाय ॥
निज निज सेवाकी सौंज साज । सेवें नित दम्पति रसिकराज २७॥
सेवैं श्रीसियपतिको सदाय । ते धन्य सखी दम्पति सुहाय ॥
प्रति कुंज कुंज शोभा अपार । सुखधाम नित्य लीला विहार २८॥
कहुँ सुभग लसत अस्नान कुंज। सजि अमित वस्तु जहँ अलिन पुंज ॥
तहँ मंजन करत जु सीयलाल । बहु भांति परस्पर होत ख्याल २९॥
कहुँ सुखद सुभग शृंगार कुंज । जहँ लहि सुगंध बहु मधुप गुंज ॥
नव बसन विभूषण अंगराग । साजैं अलि दम्पति करि विभाग ३०॥
कहुँ भोग कुंज सुंदर अनूप । जहँ अमित वस्तुवर अमृत रूप ॥
सखि वृन्द सबै निज सौंजसाज । सेवैं नित दंपति रसिकराज ३१ ॥
कहुँ शैन कुंज शोभा अभंग । जिहि देखि लजैं शतरति अनंग ॥
जहँ लाल लाडिली सुख समेत । विहरत दोऊ आनंद लेत ॥ ३२ ॥
कहुँ रास कुंज अतिही ललाम । जहँ लहत मोद सुखधाम श्याम ॥
संगीत निपुण तहँ विविधि बाल । निज निज सेवा तत्पर विसाल३३॥
कहँ शरद कुंज अति स्वक्ष चारु । जहँ करत सीय रघुवर विहारु ॥
तहँ सखी वृंद निर्तैं सुढंग । जिहि रूप देखि लजरति अनंग॥ ३४॥
हेमंत कुंज सुखमा ललाम । जहँ करत विहार जु सीय श्याम ॥
बहु केलि साज साजे अभंग । सरसात मोद सुनि राग रंग ॥ ३५ ॥
कहुँ शिशिर कुंज शोभा लखात । बहु दीप माल दुति जगमगात ॥
नव वसन मसाले गृह सुहाय । निरखत ग्रीषम जिहि अति लजाय३६॥
कहुँ लसत अनूप वसंत कुंज । जहँ सरस सुहाई अलिन पुंज ॥
विलसत पिय प्यारी मुदित हीय।रसऋतुरति सुरपति लजत जीय३७॥
कहुँ ग्रीषम कुंज विशाल सोह । लखि जाहि शिशिर हेमंत मोह ॥
जहँ सकल सुशीतल विविध साज।राजतपिय प्यारी युत समाज३८॥
कहुं पावस कुंज अनूपराज । जहँ मुदित पीय प्यारी विराज ॥
तहँ सदा लखिय प्राविट अभंग । द्रुम वेलि फूल नभ सरस रंग३९॥
कहुँ फाग कुंज शोभा अपार । हिंडोल कुंज कहुँ अतिसुढार ॥
कहुँ सखी भवन सोहैं अनूप । मुद रसिकविहारी निरखि रूप४० ॥

सो०-इहि विधि कुंज अपार, कनक भवन मधि राजहीं ॥
एक कोश विस्तार, शैन धाम सिय रामको ॥ ४१ ॥
पुनि सरयू तट कुंज, बाग वाटिका वन विविध ॥
यूथ यूथ अलि पुंज, रहैं यथोचित सकल थल ॥ ४२ ॥
श्री सरयू तट धाम, अपर अमित तिय नरनके ॥
उचित घाट वर ठाम, परमरम्य शोभित सरित ॥ ४३ ॥

कुंडलिया।

नीके घाट सुहावहीं, मणि गण जटित विचित्र ॥
बहु सोपान अनूप अति, मोहत मनहिं पवित्र ॥
मोहत मनहिं पवित्र तीर सुर मंदिर राजैं ॥
सुखद सुभग आराम सरस वन उपवन भ्राजैं ॥
रसिकविहारी मधुर शब्द शुक पिक अलि नीके ॥
विप्र वृंद उच्चरत वेद धुनि मृदु रव नीके ॥ ४४ ॥
राजैं नर नारीनके विलग विलग शुचि घाट ॥
पुनि न्यारे मज्जत जहाँ, विपुल वाजि गज ठाट ॥
विपुल वाजि गज ठाट अमित गोवृंद पियत जल ॥
उत्तम मध्यम नीच गहत अपने अपने थल ॥
विविध वृंद वृंदारकानके बहु छबि छाजैं ॥
रसिकविहारी युगल ध्यान युत मुनि गण राजैं ॥ ४५ ॥
रामघाट अति सुभग जहँ, मज्जतहैं सब भाय ॥
करत विविध विधिकेलि तहँ, सखन सहित सुखदाय ॥
सखन सहित सुखदाय अधिक आनंद लहैं जाति ॥
निरखि सकल पुरलोग हृदय पावत प्रमोद गति ॥
रसिकविहारी मौनरहत शारद नारद मति ॥
को वरणै छबि अतुल स्वच्छ वर राम घाट अति ॥४६॥

चौ०-सुभग जानकी घाट विशाला ❀ मज्जैं अंतरंगिनीबाला ॥
तहँ प्रमोद वन परम सुहावन ❀ कोटिन अमरावती लजावन४७ ॥

लतिका छंद।

सुखद सुंदर वन प्रमोद विराजही। विमल सरयू तट अधिक छवि छाजही। जहाँ पावस प्रगट रूप दिखावही॥ सो सदा सिय श्यामके मन भावही॥ ४८॥ कलित कदलि कदंब तरु राजत घने॥ बकुल विविध रसाल सरस सुहावने॥ पनस पाकर पल्लवित सोहैं भले॥ सुफल समय निहारि निज निज सो फले॥ ४९॥ ललित लतिका तरुन तनु लपटावहीं॥ मोर निर्तंत सुखद शब्द सुनावहीं॥ शोर करि पपिहा घनो पी पी रटै॥ जाहि सुनि बिरहीनकी छाती फटै॥ ५०॥ झूमि झुकि झुकि पवन झोका लेत हैं॥ करत घन घनघोर अति सुख देत हैं॥ दामिनी दमके चहूँदिशि धायके॥ नीर बरसत भूमि मंडल छायकै॥ ५१॥ श्यामघन चहुँओर सुंदर घेरही॥ अरुण नील सुपीत रँग बहु फेरही॥ इंद्र धनुष विशाल कबहूं दरशई। सुखद पावसकी छटा अति सरसई५२

दोहा—इमि अति सुभग प्रमोद वन, बाढ़ी छटा अपार॥
पावसऋतु उत्सव समय, वर हिंडोल विहार॥५३॥
श्रावण शुक्ल सु तीज तिथि, लखि औसर अलिवृंद॥
वन प्रमोद हिंडोलनव, सजो सुभग सानंद॥ ५४॥

लतिका।

हेम खंभ विशाल मणि गण खचित है। बेल बूँटे रंगके बहु रचित है॥ मुकुर अगणित भाँतिके लागे घने। मनो मनसिजके सुभग करते बने॥ ५५॥ रुचिर डाँडी राजहीं बहु रंगकी। जगमगत जिहि ज्योति सरस सुढंगकी॥ नगन जटित अमोल चारौं चारु है॥ मनौ सुखमाकी सुखद सुखसार है॥ ५६॥ लाल बेलन चाखडी चित्रित घनी। ललित चमकत चहूँ दिशि मर्कत मनी॥ झूमका बहु स्वच्छ मोतिनके बने।:बीच बिच कहुँ लाल पन्नासों घने ५७॥ सुभग पटुली अरुण विद्रुम मय लसै। मध्य चहुँ बहु मणिनकी अवली बसै॥ झालरे नव रंग जरित जरावकी। अमल मोतिन युक्त नवल बनावकी॥ ५८॥ मृदुल रेसम डोर पचरंगी

खरी। अधिक छबि सरसात मोतिनसों भरी॥ कहूँ गाथे नव सुगंधित फूल हैं। जहाँ अलि कल रव करैं अनुकूल हैं॥५९॥ शिखर सुंदर अरुण मणिमय राजहीं। निरखि सो छबि बालरवि द्युति लाजहीं॥ हरित नीलमणीनके बहु मोर हैं। नचत मनहुँ सजीव करत न शोर हैं॥ ६०॥ सखिन साजि हिंडोल सबही भाँति सो। अति विचित्र अनूप निज गुण जाति सो॥ झूलि हैं सिय पीय दोऊ मोदसों। करति अलि अभिलाष सकल विनोदसें॥ ६१॥ समय लखि सखिगण चलीं शृंगार कै। वसन भूषण सरस अंग सुधारकै॥ जाय दंपति ढिग रहीं कर जोरकै॥ बैन मृदु हँसि कहत दुहुँन निहोरकै॥ ६२॥ सुभग पावस चहूँ दिशि छबि छै रही। त्रिविध सरस समीर अति सुख दै रही॥ हरित भूमि विशाल उपबन राजही। मधुर शब्द सुहावने घन गाजही॥ ६३॥ ललित लघु बुंदन फुही सुंदर परै॥ निरखि सावन रूप मन मनसिज हरै। हुलसि प्यारी पीय मुदित सिधारिये॥ झूलिये गल बाँह दै सुखकारिये॥ ६४॥ सुनि सखिनके बैन मृदुल सुहावने। भये दंपति मुदित सुख सरसावने॥ पीय मुख सिय सीय मुख पिय देखिकै। धरे दुहुँ गल बाँह आनँद पेखिकै॥ ६५॥ वन प्रमोदहि चले सखि गण संगमें। होत कौतूहल विविध रस रंगमें॥ लिये अलि सुखपाल दंपति राजहीं। निरखि छबि रति मैन कोटिन लाजहीं॥ ६६॥ सरयुतीर प्रमोद वन शोभा महा। नित्य पिय प्यारी विहारस्थल जहाँ॥ गये युगल किशोर हिय आनँद भरे॥ झूलहीं सिय पीय भुज अंस न धरे॥६७॥ भाँति इहि झूलत सदा दंपति भले। गीत वाद्य सँगीतके नवरँग रले॥ नचति गावति सखीगण प्रमुदित सबै। समै निज निज रागिनी सुंदर फबै॥ ६८॥ कोउ झोका देत अली झुलावहीं। कोउ भर आनँद विजन डुलावहीं॥ कोउ प्यारे दृग दृगनसों जोरहीं॥ कोउ बलिहारी करैं तृण तोरहीं॥ ६९॥ कबहुँ झोंका देत प्यारे रमकिकै। डरपि उर लगि जात प्यारी झमकिकै॥ कबहुँ पिय गहि लेत सियको अंकमें॥ कबहुँ हँसि बतरात दोउ निसंकमें॥ ७०॥

रँग भरे इहि भाँति झूलत सोहहीं ॥ निरखि छबि रति काम कोटिन-मोहहीं ॥ कहति प्यारी लाल धीरे झूलिये॥डरति हम सुकुमारि क्यों इमि भूलिये ॥ ७१ ॥ वीरके सुतवीर हौ तुम श्यामजू ॥ डरति अधिक अधीरहैं हम वामजू ॥ तुमहिं धनु तोरत न लागी बारहै ॥ हमहिं निज शृंगारहीको भार है ॥ ७२ ॥ सुनि रसीले बैन प्यारीके नये ॥ प्राणप्यारे सुरसहिय प्रमुदित भये ॥ चाह उर बाढी घनेरी लालके ॥ बहुरि झोका दियो मिसकरि ख्यालके ॥ ७३ ॥ लखि निठुरता लालकी अति लाडिली ॥ मानिकै मनमान उठि तहँ ते चली॥लसत प्रावस कुंज बहु सोभाजहाँ ॥मोरि मुख नख लिखत महि बैठी तहां ॥ ७४ ॥ देखि अलिगण मान चक्रित जहँ तहीं ॥ कछूसियजूसंग कछु पिय ढिग रहीं ॥ विकल बोलत बैन प्यारे दीन हैं ॥ धरत धीर न नीर विन जिमि मीन हैं ॥ ७५ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

कोऊ जाय सुघर सहेली लाडिलीको यह विनय हमारी कर जोरकै सुनावो धाय ॥ हमतौ तिहारे रस रूपके अधीन घने तुम हौ प्रवीन निठुराई यौं धरी क्यों हाय ॥ रावरो निहारि रुख रहत सदाही मोद तन मन प्राण भये विकल वियोग पाय ॥ रसिकविहारी प्यारी डारि गलबाहीं वेगि विरह कटारी लगी भारी सो सँभारो आय ॥ ७६ ॥ चंद्रकला परम प्रवीन गुण आगरी हो जाय प्राणप्यारी ढिग कहो कर जोरिकै ॥सुभग सलोनी तुम सुंदर चतुर बाल प्रियाको मिलावो वेगि नेह रस बोरिकै ॥ रसिकविहारी हेमा क्षेमादिक प्यारी अली क्यौं न अब विरह सुनावो हाय दौरिकै ॥ विनै हम ओर ते जू कीजो चारुशीला चारु काहे चित्त चोरि आज बैठी मुखमोरिकै॥७७॥जाय सखि वृंद पाय औसर विलोकि रुख जोरि कर मंद मृदुवचन उचारे हैं ॥ स्वामिनी सुजान प्राणप्यारी सुनि लीजै विनै विकल विहाल लाल विरह तिहारे हैं ॥ खान पान भूषण वसन सुख सैन सबै रावरे वियोग वश निपट विसारे हैं ॥ रसिकविहारी चलि कीजिये सुखारी वेगि मन वच कर्म प्यारे रसिक तिहारे हैं ॥ ७८ ॥ पलक विछोह

जासों आज लों भयो ना कहूँ तासों मुख मोरि मान गहि कै रहीजे क्यौं॥हाय प्राणप्यारी जक लागी तबही ते यह दया हिय लाय तिनै आनँद न दीजे क्यौं ॥ रसिकविहारी बरसावन सुहायो चहूँ प्यारे संग झूलि सुख सुंदर न लीजे क्यौं ॥ घेरि घहरावैं घन घुमड़ प्रमोद वन गह्व भुज डार प्यारी रमन न कीजे क्यौं ॥ ७९ ॥

सो०–हे प्यारी सुखदान, जैसी तुम गुण आगरी ॥
त्यों प्यारे रसखान, योग विरंचि भलो रचो ॥ ८० ॥
कीजे तहँ न विछोह, तुम विन प्यारे विकल अति ॥
दुहुँन दुहूँ मिलि सोह, दुहुँ विन लखिय मलीन दुहुँ ८१॥

सवैया कवित्त ।

क्यों हठि मान कियो नवला तुम जीवनमूर ललाकि सदाई ॥
श्याम निरंतर रावरे हीय बसैं छिनहूँ विलगाय न जाई ॥
रीति नई विपरीति कहा यह रूठि रही पिय सों अनखाई ॥
लाडिली रोष विहाय सबै रसिकेश मिलौ हिय सों हियलाई ८२
आज दशा लखि लालनकी सखियान सबै उर बाढत पीर है ॥
रावरो मान विलोकतही तनु प्राण घनो विधि होत अधीर है ॥
राजकुमारि विनै सुनिये रसिकेश मिलो सजि भूषण चीर है ॥
हो मिथिलेशसुता इतती उत वे अवधेश तनै रघुवीर है ॥ ८३ ॥
शील दया अरु प्रीति सुरीति हिये विच रावरे सोह विशेखी ॥
ज्यों घन दामिनि फूल सुवासहि कोऊ कहूं विलगात सुपेखी ॥
प्यारी बिना पिय प्यारी बिना पिय रंच लहैं सुख है किन लेखी ॥
त्यों रसिकेश तिहारे विषे सुइती निठुराई न आज लों देखी ८४

चौ०-इहिविधिसखिप्यारिहिसमुझावैं ❀ करिमृदुविनयसुमानछुटावैं ॥
तौ लग राजकुमर अकुलाई ❀ बोले मधुर प्रिया ढिग आई॥८५॥

सवैया कवित्त ।

नेक निहारौ प्रिया इत तौ किहि हेत इती निठुराई धरी है ॥
लाडिली क्यों न कहो हँसिकै सु कहा हम ते बाड़ि चूक परी है॥
चंद्रकला विमलादि सखी विनती हम ओरते केती करी है ॥

रंच दया नहिं आई हिये अजहूँ दृग सैन सुरोष भरी है ॥ ८६ ॥
कहूँ घनसों तड़िता मिलि जात लता लपटी तरु मध्य चहूँ॥
चहूँ दिशि प्राविट रूप अनूप भलो दरशै ऋतु माहिं छहूं ॥
छहूं अरु चार अठारहमें प्रिय हीन प्रमोद लखो न तहूं ॥
तहूं पुनि हीय विचारौ प्रिया कोउ सावन मान करै न कहूं ८७॥
नव रूप उजागरि नागरि आगरि रोष तजौ किन भूतनया ॥
इन मोरनको निक सोर सुनौ कह बोलत हैं पपिहा छनया ॥
रसिकेश विचारहु प्यारी हिये यह योग भलो विधिने बनया ॥
हम हूँ अवधेश किशोर प्रिया तुमहूँ मिथिलाधिपकी तनया८८॥
सुनि बैन सिया जू कहो हँसिकै हम जानतिहैं तुम प्यारे छली ॥
पिय बोले जू जैसे हैं तैसे तिहारे प्रिया जू भला तुम तो हौ भली॥
रसिकेस लखौ अलिके गुणकैसे तऊ रस देत प्रसून कली ॥
कपटी सब कारे सुनौ घनश्याम मलिंद विचारेकी काह चली८९
स्वारथ के तुम मीत लला कछु रंच दया नहिं हीय तिहारे ॥
पीर पराई न जानत हौ छल छंदनमें सुप्रवीन अपारे ॥
जोय रुचै सु करौ न डरौ सिगरे हम रावरे फैल निहारे ॥
आये मनावन बोलत मीठे सु बैन इतै जु भले पग धारे ॥९०॥
कारे भले सब प्यारी सुनौ जगजीवन दायक हैं घनकारे ॥
नैन रुचैं कजरारे हिये रसिकेश सुकेश सुहात हैं कारे ॥
कोकिल कारे कितो सुख देत सिंगार मनोज सुभावत कारे ॥
रावरी आयसु पालैं तिहूँ पुर सो कमलापतिहू अतिकारे ॥
लाल सुनौ इककारे भुजंग डसैं जिहिको वह होत अचेत है ॥
पावसरैनि जु कारी अंध्यारी घनो विरहीन हिये दुख देत है ॥
कारो हि है विरहा कपटी जिन कोटिन प्राण लये विनहेत है ॥
कारे ठगी मिथिलापुरकी तिय ऊची उसाँस सो आजलों लेत है९२
लाल कही हँसि प्यारी सुनौ हम तौ न कछू छलछंद न जानैं ॥
नागरि होति प्रवीण घनी जिहिकी रति लोकहु वेद बखानैं ॥

रावरो आनन पंकज सो तिहिकी रस चाह मलिंद समानैं ॥
वा दिन दीजिय दोष प्रिया रसिकेश बनैगी दया उर आने ९३॥
झूलतहीं मिचकी निक देत धरो तुम रोष प्रिया जु विशेखो ॥
चूक निहारि किती विनती कर जोर करी सु कछू नहिं लेखो ॥
रावरो कोमल चित्त घनो सुन कानन रंचन नैंनन पेखो ॥
प्यारी पिया सों कहूँ रसिकेश इतो हम मान न आजलों देखो९४॥

घनाक्षरी कवित्त।

सरस रसीले व्यंग्य वचन दुहूँके होत ताही समै घेरि घन घटा घहरानी है॥ झोकि झोकि पवन प्रचंड तरु तोरै लगी धाराधर धारा धरा मध्य सरसानी है ॥ रसिकविहारी कारी रैनि अँधियारी अति दामिनी दमंकि मेघ मंडल समानी है॥ नवल किसोरी देखि पावस ससंकित ह्वै नृपति किशोर उर दौरि लपटानी है ॥ ९५ ॥

दोहा—भयो मान मोचन दुहूँ, हृदय बढो आनंद ॥
करी आरती बेगही, मुदित सहचरी वृंद ॥ ९६ ॥
पुनि आनंदित नित्य प्रति, झूलत युगल किसोर ॥
परम परस्पर प्रीति लखि, सखि डारैं तृण तोर॥ ९७॥

सवैया कवित्त।

सुंदर दंपति की छवि देखनको पुरवासिनि आवैं घनी ॥
सब चंद्र मुखी तिय साजे शृंगार स्वरूप अनूपम अंग बनी ॥
रसिकेस परस्पर बैन कहैं बहु भाग्य सराहत मोदसनी ॥
हम धन्य लखैं भर नैनन जो सिय स्वामिनि औ रघुवंशमनी ९८॥
कोऊ कहैं सियजू पटरानी मिली बडभागी नरेश लला ॥
कोऊ कहैं इनकी सम को कमला विमालादिक चंद्रकला ॥
कोऊ कहैं तिय प्यारिहि धन्य जु त्यागत पीय न एको पला ॥
कोऊ कहैं हमसों जगको रसिकेस लखै छवि जो अमला ९९ ॥
कोऊ पसारकै अंचलको विधिसे कर जोर कै येही मनावैं ॥
औध निवासिनि होवैं सबै हम जोरी अनूप निहारि सुहावैं ॥
हेरैं कृपा करि लाल सिया रसिकेश सदा सुख सों अपनावैं ॥
प्यारी पिया पदपंकजमें नित नेह बढै यह आशिख पावैं॥१००॥

कोऊ कहैं इन राज किसोर की आँखनमें है सखी कछु टोना ॥
जाके विधैं उर अंतरमें तिहि फेर सुहाय नहीं सुख सोना ॥
कोउ कहैं मुसक्यान कृपान ह्वै लागत दुःख परै री सहो ना ॥
कोउ कहैं रसिकेश सबै तनु सुंदरहै कछु जात कहो ना ॥१०१॥
कोउ कहैं सखिरी निरसंक ह्वै प्रीतमप्यारी निहारिबो कीजे ॥
कोउ कहैं तजिये कुलकान भटू इनसों मिलि कै कह लीजे ॥
कोउ कहैं रसिकेश सुनौ अब एक उपाय भलो चित दीजे ॥
योगिनि ह्वै तनु लाय विभूति सुऔधकी वीथिन वीच रमीजे १०२

दोहा—इहिविधि नेह भरी सबै, वचन परस्पर भाष ॥
प्रतिदिन सुख पावत रहैं, सिय सियवर हिय राख ॥१०३॥
झूलत अष्टादश दिवस, यों सिय पिय मिलि दोउ ॥
मणि पर्वत वन महल कहुँ, जबै जहाँ रुचि होउ १०४ ॥
कोऊ सिय कृत मानको, भ्रम कछु हीय न मान ॥
प्रथम लिखे जे ग्रंथ वर, तिन महँ लखौ सुजान ॥ १०५ ॥
बहुरि स्वकीया मानको, है बहु ठौर प्रमान ॥
भेद लखौ साहित्यके, तहाँ सकल विलगान ॥ १०६ ॥

प्र० । रसमंजरीग्रंथे । सूत्र ।

स्वामिन्येवानुरक्ता स्वकीया । स्वीया तु त्रिविधा । मुग्धा मध्या प्रगल्भा चेति । मध्याप्रगल्भे प्रत्येकं माना वस्थायां त्रिविधे ॥ धीरा अधीरा धीराधीरा चेति ॥ इत्यादि ।

इति श्रीरा० र० वि० वि० हिंडोल विहार
वर्णनं नाम द्वितीयो विभागः ॥ २ ॥

दोहा—इमि अगणित आनंद नित, पुनि पावसके अंत ॥
आई शरद अनूप ऋतु, सब हिय मोद अनंत ॥ १ ॥
संतत प्रति ऋतु शरदमें, करैं सखी गण रास ॥
निरखैं सिय रघुवर मुदित, बाढत हृदय हुलास ॥ २ ॥
कबहूँ दंपति नेह युत, अति अनंद उमगाय ॥
सखिन मध्य एकांत थल, नटत मनोहर गाय ॥ ३ ॥

याते सब आली सदा, सजे रहैं सब साज ॥
नृत्य गान बहु वाद्य नित, ठानैं तीय समाज ॥ ४ ॥

हरिगी० छंद ।

कबहूँ सुभैरव १ मालकोश २ हिंडोल ३ दीपक ४ गावहीं ॥
श्री ५ मेघ ६ ये षट राग नारि समेत शुद्ध सुहावहीं ॥
कबहू जु शंकर रागिनी बहु सरस सुरन उचारहीं ॥
तिहुं ग्राम इकविस मूर्छना युत सकल भेद सचारहीं ॥ ५ ॥

दोवई छंद ।

भैरव तिय भैरवी १ सिंधवी २ मधुमाधवी ३ रसाला ॥
बंगाली ४ बैराड़ी ५ सुंदर गान करैं वरबाला ॥
मालकोसकी नारि गुणकली १ खंबावती २ अनूपा ॥
ककुभा ३ अरु टोडी ४ सुठि गौरी ५ गावैं सखी सुरूपा ॥६॥
पटमंजरी १ विलावल २ सुंदर रामकली ३ मनहारी ॥
अरु देसाख ४ ललित ५ ये गावैं हैं हिंडोलकी नारी ॥
कामोदी १ देशी २ केदारा ३ नट ४ कान्हरा ५ सुढंगा ॥
ये दीपक तिय गान करैं तिय शुद्ध सुरनके संगा ॥ ७ ॥
आसावरी १ मालश्री २ मालव ३ अरु धनाशिरी ४ नीकी ॥
सुभग वसंत ५ सरस सुरगावैं सखी नारि ये श्रीकी ॥
मेघतिया सुठि टंक १ मलारी २ देशकार ३ भूपाली ४ ॥
सुखद गूजरी ५ शुद्धरीत सोंगान करैं वर आली ॥ ८ ॥
दोहा–पंच पंच तिय सहित जे, हैं षट राग रसाल ॥
गान करैं आली सबै, शुद्ध समय सुरताल ॥ ९ ॥
पुनि जे शंकर रागिनी, रागिनि राग मिलाय ॥
तिनहुँ सखी सब गावहीं, शुद्ध सुरनसरसाय ॥ १० ॥

दोवई छंद ।

ईमन १ हंस २ हमीर ३ परेवी ४ मारू ५ गौड६सहाना ७॥
दरबारी८ काफी ९सिंदूरा १०सूहा ११ तिलक १२अड़ाना ॥ १३ ॥
धौलशिरी १४बड़हंस १५अहीरी १६सरपरदा १७खत १८गारा १९

पीलू२०बरवा२१माझ२२शंकरा२३लूम२४तिलंग२५बहारा २६
सिंधुभैरवी२७ ककुभ विलावाल२८चैती२९जाजमलारा ३० ॥
मुलतानी३१घाटो३२प्रदीपकी३३परज३४कमोद मलारा ३५ ॥
चौरा अष्टक३६मंगल अष्टक३७गौडकली ३८भठियारा ३९ ॥
लंकदहन सारंग ४०सावनी ४१पट४२हिंडोल बहारा४३॥१२॥
सोरठ ४४रामपूरिया४५जँगला४६पंचम४७नट कल्याना४८ ॥
जैजैवंती ४९ भीमपलासी ५० देवगिरी ५१ कल्याना ५२ ॥
नट नारायण ५३ चैती गौरी ५४ युगिया ५५ गौडमलारा ५६
श्याम ५७शंकराभरन ५८ त्रिवेनी ५९ सारंग ६०देवगंधारा ६१॥१३
लंकदहन ६२ पूरवी ६३ झंझोटी ६४ खेमखरज ६५ सुघरैया६६ ॥
तिलक कमोद ६७ विहाग ६८ विहंगा ६९ कुंभावती ७० अल्हैया७१
नटसारंग ७२ विभास ७३ पहाडी ७४ फरोदस्त ७५ सामंता ७६ ॥
जैतशिरी७७पूरिया ७८ मनोहर७९जैत ८० बहारवसंता ८१॥१४॥

दोहा—नट मलार ८२ बागेसरी ८३, अरु ईमनकल्यान ८४ ॥
देश मलार८५विहागडा८६,देश ८७ श्यामकल्यान८८॥१५
सरस्वती ८९ बंगालश्री ९० और लूम सारंग ९१ ॥
सिवरी ९२ कुंभारी ९३ तथा, अपर गौडसारंग ९४॥१६ ॥
गौरीकालँगडा ९५ रुचिर, अरु सोरठमल्लार ९६ ॥
पुनि सारँग बड़हंस ९७ सो, वर धूरिया मलार ९८ ॥ १७॥
बहुरि सु गौरी कान्हरा ९९, अपर झूम सारंग ॥ १०० ॥
अरु सोहनी१०१सुईमनी,१०२पुनि सामत सारंग१०३ १८॥
झूम१०४धूरिया१०५नारदी१०६,अरु कान्हरा मलार १०७
गिरिनारी सोरठ१०८तथा भगवंती१०९गिरि नार११०॥१९

दोवई छंद ।

श्रीबहार १११ भैरवी कलंगडा ११२ काहल ११३ नटकेदारा११४
काफी सिंधु ११५ सिंदूरा सोरठ ११६ अरु कान्हरा बहारा ११७॥
सूर मलारी ११८ राम मलारी११९ यमन मलारी १२० बाला१२१

इनहि आदि शंकर सुरागिनी गावैं सखी रसाला ॥ २० ॥
खरज १ ऋषभ २ गंधार ३ सु-मध्यम ४ पंचम ५ धैवत ६ हीके ॥
अरु निषाद७ ये सप्त सुरनको लै स १ रि२ ग३ म४ प५ ध६ नी७के
औडव १ अरु षाडव २ संपूरण ३ अस्थाई १ आरोही २ ॥
अवरोही ३ संचारी ४ संयुत गान करैं मनमोही ॥ २१ ॥
इकताला १ अद्धा २ अरु रूपक ३ धीमा ४ जलद तिताला ५ ॥
सूल ६ झपक७त्यौंरा ८ धमार९ पुनि आडा १० शुध चौताला११॥
असावरी १२ तिमि फरोदस्त १३ इन आदि ताल अभिरामा ॥
ब्रह्म १४रुद्र १५लक्ष्मी १६गणेश१७वर विष्णु१८ बजावैं वामा२२॥

दोहा—इमि अपार संगीतके, भेद सकल नित ठान ॥
नृत्य गान बहु वाद्य युत, साजे रास विधान ॥ २३ ॥
सो लखि दंपति मुदित ह्वै, दीनी हुलसि रजाय ॥
शरद रैनि अब रास वर, ठानौ साज सजाय ॥ २४ ॥
सरयू उत्तर तीर थल, परमरम्य सुखधाम ॥
त्रै योजन मंडल बिशद, रचौ रास तिहि ठाम ॥ २५ ॥
कुंजवाटिका बाग वन, सरि सर सुभग सुढार ॥
तिहि थल रास विहारको, आनँद होय अपार ॥ २६ ॥
लहि रजाय आलि वृंद तहँ, सपदि सजे सब साज ॥
गये सु दंपति मोद भरि, संयुत रहशि समाज ॥२७॥
शुभ्र वसन भूषण विविध,दंपति कियो शृँगार ॥
सब ललनागण त्यौं सजे, नख सिख अंग सुढार ॥ २८ ॥

दोवई छंद।

चंद्रकला १ उर्वशी २ मेनका ३ चंद्रमुखी ४ वरबाला ॥
मृगलोचना ५ चारुशीला ६ अरु क्षेमा ७ रूप रसाला ॥
त्यौं राधा ८ रंभा९ सुमालिनी १० सुठि सुलोचना ११ नारी॥
हरिणी १२ ये द्वादश आली हैं सियकी प्राणपियारी ॥ २९ ॥
हेमा १ वीणाधरी २ हंसिनी ३ गुणवल्लरी ४ ललामा ॥
चंद्रावली ५ सुभद्रा ६ पदमा ७ मनोरमा ८ अभिरामा ॥

सुखद चंद्रभागा ९ सुमोहनी १० पदमगंध ११ मतवाली ॥
सरस बरारोहा १२ द्वादश ये राजकुंवरकी आली ॥ ३० ॥
दोहा—चतुरविंश ये मुख्य सखि, इनके यूथ अपार ॥
मिलि सुरासमंडल रचो, सजि अनूप शृंगार ॥ ३१ ॥
अधिक चतुर्दश त्रिशत अरु,चौविस सहस२४३१४सुबाल
रचो रासमंडल रुचिर, लखत सिया रघुलाल ॥ ३२ ॥
चंद्र चंद्रिका चारुचहुँ, राका शरद प्रकाश ॥
मणिदीपक भूषण प्रभा, मिलि भो अमित उजास ॥३३ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

श्यामा श्याम सुभग सिंहासन विराजे चारु आली सब साजे साज सहित उमंगके॥ वीणा औ मृदंग वेणु मधुर मंजीर मंजु बाजने बजावें वर विविध सुंढगके ॥ ठानो गति कार झनकार घुँघुरून छाई रसिकविहारी पद न्यास बोल संगके ॥ थेईततथेईतातिथैयाथुंग तत्ता थेई आदिक सचारैं भेद जैसे गीत अंगके ॥३४॥ पद चपलाई कोमलाई मधुराई मंजु कर कमनीयताई अति छवि छाई है॥ लंककी लटकलोनी लोचन चटक चारु मटक उतंक बंक भृकुटी निकाई है ॥ ग्रीवकी डुलन शोभा खुलन सुअंगनकी हार नथ कुंडल की झूलन सुहाई है ॥ रसिकबिहारी रासमंडलके मंडल की कुंडली विलोकि बिज्जु कुंडली लजाई है ॥ ३५ ॥ मंजु मृगनैनी पिकबैनी सुखदैनी बाल करैं कलगान कोकिलानकी समानके॥ सम सुर ताल लै विराम रिक्त पूर भूर गीत पद छंद बंद विविध विधानके ॥ नितंत नवेली तांडवादि जे अनेक गति कर पद जानुभेद सकल कलानके॥ रसिकविहारी सुरनारी अवलोकि सारी दंग ह्वै किये हैं मान भंग अप्सरानके ॥ ३६ ॥ अमित उमंग है अभंग वर अंग भरी अंतरंग अरु बहिरंग ढंग छावै है ॥ नैन सैन बैन कर चैन औ अचैन दशा नख शिख हाव भाव शुद्ध दरशावै है॥ दीप कुंभ कंदुक कृपान माल जाल कलावारी चित्रकारी ये सु नृत्य सरसावैं हैं॥रसिकविहारी गुण-वारी नौल नारी सारी रुचि अनुसारी श्यामा श्यामको रिझावैं हैं३७

हरिगीतिका छंद।

इमि रास बहु सुखरास ठानो शरदरैनि प्रकाशमैं।
गंधर्व किन्नर अमर तिय मिलि लखहिं दुरि आकाशमें॥
तिहि समय सरयू सलिल खग मृग अपर जड़ चेतन जिते॥
सबही थकित ह्वै रहे जहँ तहँ भये अति मोहित तिते॥ ३८॥

दोहा—शिव विरंचि सुर राज रवि, नारदादि ऋषिराय॥
लखत रासमंडल सबै, दुरि नभ मंडल आय॥ ३९॥
उडुगणपति उडुगण सहित, अचल भये लखि रास॥
गति मति भूले मुदित अति, कीनो अमित प्रकाश॥४०॥

घनाक्षरी कवित्त।

दरन पै द्वारन पै कलिंते किवारन पै द्रुमनपै डारन पै लोनीलतिकानपै हाटन पै बाटनपै नीके नव घाटनपै गेहनपै सेजनपै अमलअटानपै॥ वागन पै वन पै निकुंजन पै पत्रन पै फूलन पै कूलनपै सर सरितान पै॥रसिकविहारी सुखदाई चहुँधाई भाई छाई यह शरद जुन्हाई वानितान पै॥ ४१॥

दोहा—सो चंद्रिका विलोकिकै, हुलसे सिय रघुचंद॥
नाहिं मायो सुख हीयमें, उमगो अधिक अनंद॥ ४२॥
उठि दंपति अनुराग भरि, नृत्य साज सब साज॥
आय रास मंडल विषे, ठाढ़े मध्य समाज॥ ४३॥
निरखि व्योम दिशि अर्ध निशि, जानी राजकुमार॥
रही याम द्वै यामिनी, हिय माधि कियो विचार॥ ४४॥
कही सियहि तब रैनि अब, बीति गई द्वै याम॥
या छिन बाढत रामको, छिन छिन सुख अभिराम॥ ४५॥
शरदनिशा यह आजकी, जुपै रहै इक वर्ष॥
तौ प्यारी अभिलाष भरि, होय रासयुत हर्ष॥ ४६॥
सुनि बोलीं सिय लाडिले, होय यही भलि बात॥
हेरो रास अनंद अब, छिन छिन प्रति अधिकात॥ ४७॥
तब रघुवर भाषी प्रिया, ऐसिहि अब ध्रुव होय॥
आज रैन इक वर्षकी, रहै न जाने कोय॥ ४८॥

इत इमि दंपति हिय रुची, उत सब देव समाज ॥
यही चहैं आनँदछके, प्रात होय नहिं आज ॥ ४९ ॥
भई तैसिही रैनि वह, एक वर्ष परमान ॥
सुर मायावश भेद सो, कोंऊ कछू न जान ॥ ५० ॥
करहिं रासलीला मुदित, सहित सीय रघुचंद ॥
रीझत रिझवत परस्पर, अलिदंपति सानंद ॥ ५१ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

कौशलाधिराज सुत राम रमणीय जैसे तैसी मिथिलेश सुता सिय अभिराम हैं ॥ रसिकबिहारी सुखकारी छबि धारी दोउ नृत्य गान वाद्यमें प्रवीण गुणधाम हैं ॥ पूरण मयंकराका शरदनिशामें रास करत उमंग संग रंग भरी वामहैं ॥ दम्पति सुरूप उपमाको है न रूप कहूं श्यामा श्याम रूपसे अनूप श्यामा श्याम हैं ॥ ५२ ॥

दोहा—छाई सुंदर शरद ऋतु, सुखदाई चहुंओर ॥
निरखि छटा आनंद भरि, निर्तत युगल किशोर ॥ ५३ ॥

घनाक्षरी—कवित्त ।

गुंजत मलिंद पुंज नव नव कुंजनमें छाके मत्तडोलै मकरंद पान करिकै ॥ शीतल सुधाकरहू मुदित मयूखन ते श्रवत पियूष सोचको रहेत धारिकै ॥ रसिकबिहारी सुखकारी चंद्रिका अनूप ह्वै हुलसात अनुरागराग भरिकै ॥ निर्तत सुढंग रस रंग श्याम श्यामा संग अंग अंग मोरत अनंग मान हरिकै ॥ ५४ ॥ ता छिन अपार सुख छायो रासमंडलको जेते जड़ चेतन ते सकल लुभायगे॥झूमि भूमि चूमें डार अंबन कदंबनकी पक्षी ते निपक्षीसे अचेत महि आयगे॥ चित्र सम ह्वैकै रहे परम विचित्र मृग मुर्छे सुर सुरताकी सुरति भुलायगे ॥ रसिकबिहारी सो निहारी छबि भारी सबै तन मन प्राण हीय आनंद छकायगे ॥ ५५ ॥

दोहा—जड चेतन मोहित भये, काहु कछू सुधि नाहिं ॥
अति मूर्छित ह्वै चंद्र तहँ, गिरो सु धरणी माहिं ॥ ५६ ॥
ता छिन भयो प्रकाश अति, निरखि सीय रघुराज॥
उझकि चौंकि चितये चहूं, संयुत सकल समाज ॥ ५७ ॥

लखो मयंकहि विकल तब, जनकसुता अकुलाय ॥
करुणाकरि धाई सपदि, परम कृपा उर लाय ॥ ५८ ॥
वर सरयूतट रेणुमाधि, धावत अतिहि उताल ॥
चणकत्वचाइक शुष्क अति, चरण चुभी तिहि काल ॥५९॥
सो लखि सिय दीनो तबै, घोर शाप रिसलाय ॥
कबहूँ इहि थल आज ते, चणक नहीं उपजाय ॥ ६० ॥
यौं कहि पुनि उमगायकै, धाय चंद्रढिग आय ॥
परसायो तिहि शीशकर, सुतसम गोद उठाय ॥ ६१ ॥
सियकर परसत चेत भो, लहो परम आनंद ॥
शीश नाय सकुचायकै, गयो व्योम मधि चंद ॥ ६२ ॥

दोवई छंद ।

सो लखि मुदित राम तब भाषी चंद्रगिरो इहि ठामा ॥
सिय पालो याते या थलको चंद्रपालहै नामा ॥
यौं कहि गहि प्यारी कर सानँद गवने अतिहि उताला ॥
ता छिन भयो प्रभात पक्षिगण कीनो शोर रसाला ॥ ६३ ॥
तब सब रास शृंगार उतारे ताछिन जनकदुलारी ॥
कछु मुसक्याय मधुर पिय कर गहि मंजुल गिरा उचारी ॥
वर्ष प्रमाण होय रुचि कीनी भई रासनिशि सोई ॥
एकहि दिवस शेष यह तामधि दीनो चंद्र विलोई ॥ ६४ ॥
दोहा—कही तबै रघुवर प्रिया, कीजत रास सदाहि ॥
पै यह इक दिनशेषसो, ह्वै है द्वापर माँहि ॥ ६५ ॥
यौं कहि अति आनंद युत, ठानत हास विलास ॥
सिय समाज युत महल मधि,आये सहित हुलास ॥ ६६ ॥
इमि प्रति दिन प्रति शरद ऋतु, होय रास अभिराम ॥
अपर अमित उत्सव सदा, विहरत सीताराम ॥ ६७ ॥

इति श्रीरामरसायन र० वि० वि० रासविहारवर्णनं
नाम तृतीयो विभागः ॥ ३ ॥

दोहा—श्रीसीतारघुवर सदा, विहरत अवध मझार ॥
समै समै उत्सव उचित, होत अनंद अपार ॥ १ ॥
एक समय मिथिलाधिपति, लक्ष्मीनिधिहि पठाय ॥
परम प्रेम युत रामको, बुलवाये हुलसाय ॥ २ ॥
लषण शत्रुसूदन अपर, सेवक सखा अपार ॥
लै सानँद रघुवर गये, मिथिलापुर ससुरार ॥ ३ ॥
जनक सुनैना आदि बहु, निमिवंशी नर नारि ॥
पुरवासी सबही मुदित, रघुवर रूप निहारि ॥ ४ ॥
नई पहुनई प्रति दिवस, होय नगर रनिवास ॥
सिद्धा आदिक नारि बहु, ठानैं हास विलास ॥ ५ ॥

दोवई छंद ।

जनकनगर नर नारि अनंदित राघव छटा निहारी
कहैं सकल मृदु बैन परस्पर छिन छिन लै बलिहारी ॥
धनुषभंग कीनो जबही अति हुतो सुभग वर रूपा ॥
पुनि आये तब और बढी छबि अब कछु और अनूपा ॥ ६ ॥
तब बोली इक तिया बुद्धि वर अति अचरज यह आही ॥
छबि अधिकात सदा पैवयवपु एकै सरिस जनाही ॥
ता छिन विशद नारि भाषी यौं मुनि मुख सुनो प्रमाना ॥
सियारामको रूप रहै नित षोडश वर्ष समाना ॥ ७ ॥
इहि विधि निरखि श्यामसुंदर छबि छाकी हैं बहु नारी
तिनमें एक वाम इमि मोही दियो प्राण तन वारी ॥
तासु दशा लखि संग सहेली जानि लई गति जीकी ॥
हृदय सनेह भूरि ऊपर कटु कही बात हितहीकी ॥ ८ ॥

सवैया कवित्त ।

न्यारी चलै सब ते नितही अरु संग सखीन ते न्यारी रहै छट ॥
न्यारहि ठाट सुन्यारिहि वाट औ न्यारहि घाट रहै सरिता तट ॥
जानि परै रसिकेस न तो गति बात कहा तुव हीय गई जट ॥

बोल भटू घटको अटको घट आय भरै तब आय भरै घट ॥९॥
दोहा-यौं कहि पुनि बोली अली, बात लई हौं जान ॥
प्रथम दई सिख फेर हौं, कहौं लेहु सो मान ॥ १० ॥

सवैया कवित्त ।

डीठ बचायकै पीठ दै ईठहि ढीठ ह्वै ढीठ सों डीठहि जोडौ ॥
जो कहिये कछु प्रीत ते नीतकी रीत तबै सुनि भौंह मरोड़ौ ॥
मानौ कही रसिकेश यही हौ बडे घरकी कुल कान न तोडौ ॥
फेरभली पछतैहौ लली नित या गलिको अली आयबो छोडौ ११॥
टक दै तिहि देखनकी टक छोड़ भटू यह तोटक हैं न भली ॥
चहुँ चौचँद चोल चबाई करैं पुनि चोज चले चरचाजु चली ॥
रसिकेश रसीली रहौ रसमें रसते रस राखहु रंग रली ॥
गुणलेहु कहौं गुणके गुण बातन औगुणको गुण मान अली१२॥
दोहा-पुनि हेली यह प्रीत सम, और न दुख जगमाहिं ॥
जान परै जब जिय लगे, तव सब गुण दरशाहिं ॥ १३ ॥

सवैया-कवित्त ।

लाज तजै निज साज तजै गृह काज तजै सुख दूर धरै सो ॥
मान तजै तन प्राण तजै कुलकान तजै दुख भूर भरै सो ॥
लोक तजै परलोक तजै हिय शोक तजै सब धूर परै सो ॥
योग औ भोग स्वलोग तजै तबही रसिकेश सु प्रीति करै सो१४॥
दोहा-पुनि हेली ये नैन निज; निपट प्रपंची जान ॥
मिले रहे मिलि मारहीं, ऐसे धूत महान ॥ १५ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

मिलत अगाऊ जाय नेकहूँ न मानै शंक फेरे ना फिरैहैं लोक लाज सब डारै तोरि ॥ लावत मिलाय बेगि आपने सजातिनको आसनं दै चित्तकी हिये सो नेह लावैं जोरि ॥ रसिकविहारी भनै रसनाको रसनासो रसनाके रसहि पिवाय मति डारैं भोरि ॥ ऐसे ठग नैननकी कर ना प्रतीत ये तो देत पर हाथ मन माणिक वृथाहीं छोरि ॥ १६ ॥

दोहा–प्रीति बुरी वैसहि सखि, फेर विदेशी संग ॥
जिहि बिछुरे मिलिबो कठिन, विरह दहै नित अंग ॥ १७ ॥

सवैया–कवित्त ।

गिरिसे गिरबो मरवो विषसे निज हाथसे काटवो नीको गरेको ॥
पावकमें जरबोहै भलो नाहिं खेद हिमालैमें जाय गरेको ॥
त्यागबोहै दुहुँ लोकको लोनो नहीं है कछू दुख नर्क परेको ॥
रसिकेश कलेश न जो इतनेमें सु होत विदेशीसे प्रीत करेको १८॥

दोहा–सुनि बोली वह वाम तब, कहो सत्यं सखि बैन ॥
कहा करों अब विवशहूँ, दरश विना नाहिं चैन ॥ १९ ॥
अली श्याम गुण रूपको, कहँ लग करौं बखान ॥
तुमहि विदित है सकल अरु, मो हियकी हिय जान ॥२०॥

सवैया कवित्त ।

आननकी उपमा अरविंदसी इंदु कलासी कोऊ अनुमानैं ॥
नैन कुरंगसे कोऊ कहै अलिखंजन मीनसे कोऊ बखानैं ॥
शेष न भाषिसकै छबिसो रसिकेश हिये शत शारदा आनै ॥
साँवरेकी वा निकाई भटू अँखियानें ते मेरी लखैं सोई जानै २१॥

धनाक्षरी कवित्त ।

आसन किधौं है रूप भूपतिके शोभा देत कीधौं यह पंचबानहींके नील घर है ॥ कीधौं पंथ आनँदके रसिकविहारी स्वच्छ कीधौं वास हेत नैन मीननके सर हैं । प्रेम के विलोकिवेके कीधौं द्वै मुकर राजैं कीधौं मन मोहिबेके यंत्र वसी कर हैं ॥ लालके कपोल कीधौं कामने दिखाये युग सुमन गुलाबके बनाये आप कर हैं ॥ २२ ॥

खुलत चहूँघा खुशबोईके खजाने खूब वह महबूब जब आयकै चढै अटा ॥ अलकैं अनूप अति अतर भरी सो चारु मुख पै परैं हैं जनु चंद पै घिरैं घटा॥ रसिकविहारी रूप सरसरसीलो मंजु कोहै जो न जो हैं मन मोहे छैलकी छटा । आनन बिलोकि अंग भान न रहैरी वीर मार नैन बानन ते प्राणन करै कटा ॥ २३ ॥

दोहा–सुनि बुझाय पुनि अलि कही, करौ भटू वह काज ॥
जाते सबही भाँति तुव, रहै लोक कुल लाज ॥ २४ ॥

चौ०-तब वह वाम नेह मद माती ❀ सत्य विशुद्ध राम रँगराती ॥
संग सहेलिन प्रति झहराई ❀ वचन कहे दृढ सबहि सुनाई २५॥

सवैया कवित्त।

होत नहीं कछु काहुहिते जग लोग वृथा समुझाय कै खूटैं ॥
प्राण रहै किन जाय भले धन धाम सो काम नहीं कोउ लूटै ॥
भूमि चलै नभ मेरु हलै बरु ऊपर ते शशि सूरहु टूटै ॥
होय सबै अनहोनी तऊ रसिकेशलगी यह प्रीति न छूटै ॥ २६॥
डौंडी बजाय के प्रीति करी तब कौन कीहौं अब लाज लजौं ॥
जो कछु होनी हुती सु भई पुनि औरहु होय सु होय अजौं ॥
शंक न काहु की है रसिकेश रही पग रोपि कहा मैं भजौं ॥
नेह न छोडो कबौं उन सों सजनी वरु गेह औ देह तजौं॥२७॥
टोकौं नहीं अब रोकौं नहीं हमसे सजनी न वृथाहिं अरूझौ॥
लाज बड़ाई घनी कुलकान की रारमें जाय तुमैं सब जूझौ ॥
हौंतौं रँगी रँग साँवरेके कछु होत न कोउ किते कहुँ झूझौ ॥
होरसिकेश कहूँ टुक काहू सनेही सों नेहकी रीति तौ बूझो २८॥

दौवई छंद।

तासु वचन सुनिकै सब बोलीं लोक लाज जौं त्यागो ॥
तौ तप करौ भस्म तनु लावो ब्रह्म ज्ञानमें पागो ॥
तब वह वाम राम अनुरागिनि तिन दिशि देखि रिसानी ॥
भाषी बहुरि संग आलिन सों परम तत्त्व मय बानी ॥ २९ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

टौवा ये बनौवाजाय औरकों सुनावो हम नेह कथा छोड़ बात दूसरी सुनैं नहीं ॥ रसिकविहारी श्यामसुंदरको त्यागि और दूजो ज्ञान ध्यान हीय काहूको गुनैं नहीं। प्रेम वारि शीतलको मंजन विहाय नित्य योग ज्वाल मध्य निज देहको भुनैंनहीं। नीको मनमोहनके नेहमें पगोहे हम ब्रह्मज्ञान सीख वृथा शीशको धुनैं नहीं ॥ ३० ॥

दोहा-यौं कहि पुनि बोली तिया, मैं बहु सुने पुरान ॥
राम भक्ति ते अधिक कछु, कोउ न कियो बखान ॥ ३१ ॥

ब्रह्मज्ञान तप योग जप, दान नेम व्रत भूर ॥
राम सहित उत्तम सबै, राम रहितहै धूर ॥ ३२ ॥

प्र०। महारामायणे श्लोक।

न विधिर्न निषेधश्च प्रेमयुक्तं रघूत्तमः। इंद्रियाणामभावः स्यात्सोऽनन्योपासकः स्मृतः॥ १ ॥ ध्याने पाठे जपे होमे ज्ञाने योगे समाधिभिः॥ विनोपासनया मुक्तिर्नास्ति सत्यं ब्रवीमि ते ॥ २ ॥ पद्मपु०। न तत्पुराणं न हि यत्र रामो यस्यां न रामो नच संहिता सा॥ स नेतिहासो न हि यत्र रामः काव्यं न तत्स्यान्न हि यत्र रामः ॥३॥ शास्त्रं न तत्स्यान्न हि यत्र रामस्तीर्थं न तद्यत्र न रामचंद्रः॥ यागः सयागो न हि यत्र रामो योगो सरोगो न हि यत्र रामः ॥ ४ ॥ न सा सभा यत्र न रामचंद्रः कालोप्यकालो कलिरेव सोस्ति ॥ संकीर्त्यते यत्र न रामदेवो विद्याप्यविद्या रहितां त्वनेन ॥५॥ येषां तु मानसं रामे लग्नं नास्ति मनोरमे॥ वंचिता विधिना पापास्ते वै क्रूरतरेण च॥६॥ येषां रामः प्रियो नैव रामे न्यूनत्वदर्शिनः ॥ द्रष्टव्यं न मुखं तेषां संगमैश्च कुतस्ततः ॥ ७ ॥ पुनः महारामायणे ॥ रामनाम्नः समुत्पन्नो प्रणवो मोक्षदायकः ॥ रूपं तत्त्वमसेश्चासौ वेदतत्त्वाधिकारिणः ॥८॥ रकारस्तत्पदो ज्ञेयस्त्वंपदोकार उच्यते ॥ मकारोसिपदं विद्धि तत्त्वं असिसुलोचने ॥९॥ ब्रह्मेति तत्पदं विद्धि त्वंपदो जीवनिर्मलः॥ ईश्वरोसिपदं प्रोक्तं ततो माया प्रवर्तते ॥ १० ॥ चिद्वाचको रकारः स्यात्सद्वाच्योकार उच्यते ॥ मकारानंदकं वाच्यं सच्चिदानंदमव्ययम् ॥ ११ ॥ व्यंजनाच्च क्षरोत्पत्तिरकाराद्ब्रह्म चाक्षरः ॥ रेफो निरक्षरो ब्रह्म सर्वव्यापी निरंजनः ॥ १२ ॥ इच्छा भूतोक्षरस्तस्य चाक्षरस्तेज उच्यते ॥ निरक्षरो घनस्तेजो वर्तते जानकीपतेः ॥ १३ ॥ स्वयं निरक्षरातीतो राम एव इति श्रुतिः ॥ ब्रह्मज्ञाननिमग्ना ये भजंति सनकादयः ॥ १० ॥ इत्यादि ॥

दोहा—तासु वचन सुनिकै सकल, नारी परम प्रवीन ॥
दृढ अनुरागिनि बालको, हरषि अंग गहि लीन ॥ ३३ ॥

सब सराहि बहु भाँति तिहि, कही धन्य तू धन्य ॥
पाई पूरव सुकृत ते, रघुवर भक्ति अनन्य ॥ ३४ ॥
इमि रघुनंदन रूप लखि, मुदित रहैं पुर लोग ॥
चहैं रहैं इत राम नित, होय न कबहुँ वियोग ॥ ३५ ॥
पुर परिजन नृपरानि सब, रामहि विदा न देत ॥
प्रेम पगे सोऊ अधिक, भूले अवध निकेत ॥ ३६ ॥
जानत मिथिला अवधके, देखतके द्वै रूप ॥
अंतरगति सुख अंग फल, एकहि सकल अनूप ॥ ३७ ॥
एक दिवस सिद्धा सदन, राजत हे रघुराज ॥
मिथिला वासिनि तियनको, तहँ बहु जुरो समाज ॥ ३८ ॥
होत सु हास अनंद अति, ता छिन बोले राम ॥
आई पावस ऋतु अबै, हम जैहैं निज धाम ॥ ३९ ॥
तहँ बैठीं पुरवासिनी, वारवधू वररूप ॥
तिन महँ इक बोली विहँसि, सविनय बैन अनूप ॥ ४० ॥
पावसऋतुमें कैसहू, कोऊ तजै न धाम ॥
मिथिला अवध सु एकहै, याते बूझौं श्माम ॥ ४१ ॥

घनाक्षरी-कवित्त।

संपाको न त्यागै नेक मेघ है पुरुष सो तौ लतिका तियासों लपटी हैं तरु जोहौ जू ॥ जल है नपुंसक पै मिलै सरितासों सोउ सबै जड़ चेतनको मैनमन मोहौ जू ॥ रसिकविहारी ऋतु पावस अनूप ऐसी यामें छैल तुमहिं विदेश किमि सोहौ जू॥नर हौ न नारी ना नपुंसक हौ मेरी जान येहो प्राणप्यारे यह साँची कहौ कोहौ जू ॥ ४२ ॥

दोहा-सुनि तिहिके रसबैन मृदु, हँसीं अपर सब बाल ॥
हेरि मंद मुसक्यायकै, मौन रहे रघुलाल ॥ ४३ ॥
पुनि तहँते उठि अनुज युत, मित्र सखनके संग ॥
गवने बाग विहारहित, सजि सजि सुभग तुरंग ॥ ४४ ॥

आये विचरत बाग मधि, लखि पावस चहुँ ओर ॥
सबही प्रति हिय हुलसिकै, बोले राजकिशोर ॥ ४५ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

घिरन लगेहैं घन घूम घूम चारौं ओर पावसके दूत आय फिरन लगे किधौं ॥ दौरि दौरि दामिनी दमंकन लगी हैं चौंकि विरहिनि कामिनी चमंकन लगी किधौं॥ रसिकविहारी मोर नाचन लगेहैं मंजु रसिकविहारी रंगराचन लगे किधौं ॥ चलन लगो है यह शीतल समीर आज मनसिज वीर तीर घालन लगो किधौं ॥४६॥

दोहा–इमि वर्णत विचरत बहुरि, आये धाम मझार ॥
ताछिन लाये पत्रिका, अवध नगर ते चार ॥ ४७ ॥
अपर पत्र सबही सुने, सियकर लिपि कर धार ॥
लखि सुख दुख छायो हिये, रघुवर करत विचार ॥ ४८ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

भोगभरी योग भरी सकल संयोग भरी प्रेम भरी पूरण पुनीत-ताकी रीतकी । साम भरी दान भरी दंड अरु भेद भरी वेद भरी परम अभेद भरी नीतकी ॥ रसिकविहारी बहु चाह भरी नेम भरी क्षेम भरी क्षमा भरी भरी शुभ गीतकी । मोद भरी विपुल विनोद भरी आई आज पाती लाडिलीकी किधौं थाती यह प्रीतकी ॥४९॥

दोहा–इमि मिथिला में रामको, बीतगयो इकवर्ष ॥
जात न जाने रैनि दिन, नित नव आदर हर्ष ॥ ५० ॥
सुंदर शेखर शीलनिधि, तेज रूप रशिकेश ॥
इनहि आदि बहु प्रियसखा, रघुवर संग सुदेश ॥ ५१ ॥
तिन सखानकी तीय अरु, सिया सखी समुदाय ॥
निज निज पिय दरशन बिना, सकल हीय अकुलाय ५२॥

चौ०–वर अशोकवाटिका मझारी ❀ सिया सहित बैठीं सबनारी॥
ताछिन एक वाम चहुँवाई ❀ लखि बोली अतिहीं अतुराई ५३

घनाक्षरी कवित्त।

चौर घौर द्रुमन लगेहैं फल ठौर ठौर शोभितहै झौर झौर पल्लव प्रसून पेखु ॥ मौर मौर मंजुल मलिंद मडरात मत्त रसिकविहारी सुखकारी सबही कौ लेखु ॥ और और बोलै कीर कोकिल सु तौर तौर डौर डौर वल्ली लपटानी जो कहा विशेखु ॥ घौर झौर मौर और तौर चहुँ ठौर भये दौर दौर आली आज आयो ऋतुराज देखु ॥ ॥ ९४ ॥ झौर झौर ठौर ठौर झूमत रसाल मौर पीवैं मकरंद लै मलिंद वृंद धापि धापि ॥ सबै जड चेतनके अंग उमँगो अनंग लपटीं सुमालती तमालतरु ढापि ढापि॥ रसिकविहारी हैं संयोगिनी सुखारी हीय कोकिला अलापैं सुर पंचमको थापि थापि ॥ सुनि सुनि कूकैं उर विरह भभूकैं उठैं निरखि वसंत रहैं विरहिनि कापि कापि ॥९५॥ पेखिये पलाशन पै प्रबल हुताशन है पाय अनुशासन विरह सरसायोहै॥ कोकिलाकी कहिये हूकसी उठावतहै लूकसी लगावत समीर अधिकायोहै ॥ रसिकविहारी मैन मनकों मरोरतहै भौंरन को शोर जोर अधिक जनायो है ॥ संतह्वै असंत प्राण लैहै विनकंत हेली आज विरहनपै वसंत चढि आयोहै ॥ ९६ ॥

दोहा–यौंकहि दीह उसाँसलै, पुनि बोली अकुलाय ॥
कहादोष ऋतुराजको, है वियोग दुखदाय ॥ ९७ ॥

घनाक्षरी–कवित्त।

हेलीहौं विकल विललाता तबही तें घनी जबते विदेश गौन भयो प्राणप्यारेको ॥ रसिकविहारी तोहिं बूझों यह बात भटू कौन विधि देहुँ धीर हृदय विचारेको । विरह सतावै दिन रैनि दुख कासों कहौं ऐसो को मिलावै हाय प्रीतम हमारेको । हेम लंकदाही कपि नीको मैन जारो शंभु कोऊ नाँव रायो या वियोग दई मारेको ॥९८॥

दोहा–तोछिन दूजी बाल इक, पिय सुधि करि अकुलाय ॥
सुधि बुधि भली विरहवश, बोली सखिहि रिसाय ॥ ९९ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

भौन दधि राखैं ताकौ भौनहौं न राखौं बीर कै है जो गणेश ताहि देश तें निकारौंगी । ज्योतिष पढैगो मेरे ग्राम ते कढैगो वह धान

जो बवैगो ताकी सान मैं विगारौंगी । रसिकविहारी यह डौंडी फिरवाय देरी आज ते चहूँघा यही आज्ञा अनुसारौंगी । प्रथम भई सो भई अब तौ समै पै सदा सासु औ ननँदके प्रबंद बंद पारौंगी६०

दोहा—इमि निज निज प्रीतमसुरति,करि करि होय अधीर ॥
जनकनंदिनी प्रीति युत, तिनहिं धरावैं धीर ॥ ६१ ॥
ग्रीषमऋतु आई तबै, बोली विरहिनिबाल ॥
अब किमि वचिहैं प्राण ये, एक अंग द्वै ज्वाल ॥ ६२ ॥

सवैया—कवित्त ।

यौं मुरझाय रहीं द्रुम बेलि हुताशनसी जनु लागी पहारन ॥
नीर ते छीन भये सरिता सर कौन सहै यह आतप झारन ॥
है रसिकेश अनंद पिया संग या ऋतु है विरहीनके कारन ॥
एक तो जारतती विरहा पुनि दूजहु ग्रीषम लागी है वारन॥६३॥

घनाक्षरी कवित ।

कीधौं शेष मुख झाल कीधौं बड़वाग्नि ज्वाल कीधौं भानु काला भानु भानु कीनो वास है । कीधौं हर तीजो नैन खोलो फेरि क्रोधित ह्वै कीधौं शंभु कंठते कढो जो विष त्रास है । कीधौं महा प्रलयको आतप प्रचंड अति कीधौं महाकाली कोप प्रगट प्रकाश है॥कीधौं यह ग्रीषमकी तपन समेत पौन रसिक विहारी कीधौं विरही उसीसहै ६४॥

दोहा—यौं विलपत ग्रीषम गई, पावस आई घेरि ॥
जनकसुता सखियान सों, कही चहूँ दिशि हेरि ॥६५ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

मोरनमें मगमें मनोजमें सु मीननमें मनमें महीमें गति औरहि छई है आज । तरुन तमालनमें तालनमें तरुनीमें तममें तमीमें यति औरहि ठई है आज । रसिकविहारी रस रंगनमें रागनमें रीति रमनीमें रति औरहि नई है आज । पवनमें पावसमें पत्रनमें पुष्पनमें प्रीतिमें सु पीमें मति औरहि भई है आज ॥ ६६ ॥ वेई मेघमंडल मढ़े हैं नभमंडलमें वेई मोर कोकिला कलाप करें नीके री॥वेई वन वेई बाग सघननिकुंज वेई वेई राग रंग जो प्रमोद दानही केरी । वेई नवनागरी

सहेली संग वेई रैनिकारी हित वेई कोंधा दामिनी केरी।रसिकविहारी वेई पावस मनोज वेई साज सब पीके बिन दाहकहैं जीकेरी ॥६७॥ आवन न दीने पिय चारौं दिशि रोकि राखी चातक शिखंडी व्यंग्य वाणी सो उचारी है। विरह विलोकि मेरो दामिनी हँसतहेली रैनि दिन संधि पाय होत अरु नारी है । इंद्र धनु भ्रकुटी चढाई करि कोप येरी पवन प्रचंड दूती सीखदैं सिधारी है ॥ रसिक विहारी हम जानी री सयानी सुनौ पावस नहीं है यह सवति हमारी है ॥ ६८ ॥

दोहा–सुखछावन सावन छयो, तिय मनभावन संग ॥
झूलैं हुलसि हिंडोरने, हृदय बढाय उमंग ॥ ६९ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

वृन्द वृन्द जुरिकै अनंद भरी चंद्रमुखी झूलतीं हिंडोरे हिय हुलसि बढाय चाव ॥ रसिकविहारी सजे भूषन अनूप अंग वसन सुरंग रंग रंग रचिकै बनाव ॥ गाय गाय उमग अभंग उमँगाय उर भाय भाय सरस जनाय पिय प्रीत भाव ॥ सावन अपार सुखछावन सुहावन हैं प्यार ते बुलावैं मनभावन पियारी आव ॥ ७० ॥

दोहा–इमि सबके पिय प्यार करि, झूलैं प्रिया समेत ॥
राजकुँवर बिन या समै, हम उसाँस नित लेत ॥ ७१ ॥
इमि पावस सोचत गई, छायो शरद प्रकाश ॥
रास सुरति करि सिय कही, लै अति दीह उसास ॥ ७२ ॥

घनाक्षरी कवित ।

आतपसी चांदनी तपन तन दूनी देत लागत हिये में चंद्र किरनै करदसी ॥ आवत उसाँस ऊंची सुखद सुवास लहि त्रिविध समीर धीर शालत दरदसी ॥ रसिकविहारी है संयोगिनी अनंद सबै विकल वियोगिनी न लागत शरदसी ॥ आशते निराशह्वै निराशहूते आश पाय मरि मरि जीवत हैं चौपर नरदसी ॥ ७३ ॥

दोहा–यौं सबही अकुलायकै, वर्ष बिताई वाम ॥
आई फेर वसंत पै, नहिं आये घनश्याम ॥ ७४ ॥

अवध नगर ते सिय सहित, तिय अति विह्वल होय ॥
निज निज पिय हित पत्रिका, पठवत हैं सबकोय ॥ ७५ ॥

दोवई छंद।

उत रघुवर बहु जनक राजसों गमन रजाय सु चाहैं ॥
पै विदेह राखत मिसही मिस नित नव नेह उमाहैं ॥
जे मिथिलावासी निमिवंशी वर किशोर सुठि रूपा ॥
तिन मिलि राम परस्पर अतिही बाढ़ी प्रीति अनूपा ॥ ७६ ॥
ते सांचे रघुवीर मित्र सब छिनहु संग नहिं त्यागैं ॥
वनविहार मृगयादि खेल बहु केलि ठनैं अनुरागैं ॥
जब जब अवध चलनकी चर्चा राजकिशोर चलावैं ॥
तब तब सकल मित्र कछु उत्सव रचैं तहाँ बिलमावैं ॥ ७७ ॥
दोहा—यों बहु काल व्यतीत भो, तब भाषी रघुचंद ॥
अहो मित्र अब हमहिं शिष, देहु सकल सानंद ॥ ७८ ॥
सुनि सब भाषी रामसों, लखो जनकपुर माहिँ ॥
जिमि सुखहोत बसंत तिमिं, कहुँ त्रिलोक मधि नाहिँ ७९॥

दोवई छंद।

माघ मास शित पक्ष पंचमी शुभमुहूर्त सुखधामा ॥
ऋतुपतिको प्रस्थान दिवस है अति पुनीत अभिरामा ॥
तादिन ते ऋतुराज दशौं दिशि छावत करत विहारा ॥
याते ख्यात वसंत पंचमी नाम त्रिलोक मँझारा ॥ ८० ॥
दोहा—सो आनँद अरु फाग लखि, चलैं अवध सब फेरि ॥
लक्ष्मीनिधि सों राम तब, कही कंठ भुज गेरि ॥८१॥
जनक नगरके नारि नर, सबही मंत्र प्रवीन ॥
पढि भुरकी डारी कहा, हमै स्ववश करि लीन ॥ ८२ ॥
अनुज सखा सेवक जिते, तेऊ पगे सनेह ॥
अवध सुरति काहू नहीं, भूल गये सब गेह ॥ ८३ ॥
यौं कहि बोले राम पुनि, राजपुत्र तुव बैन ॥
कबहूँ काहू भाँति हम, रंच उलंघि सकैन ॥ ८४ ॥

याते तव रुचि राखि हम, और रहैं इक मास ॥
फाल्गुन अर्ध बिते बिदा, दीजो सहित हुलास ॥ ८५ ॥
तब लक्ष्मीनिधि राम रुचि, पालि कही दृढ ठान ॥
राज कुँवर ह्वैहै यही, सत्य लीजिये मान ॥ ८६ ॥
यौं विचार ठनि कै सबै, रहे परमआनंद ॥
भो वसंत उत्सव महा, जुरे नारि नर वृंद ॥ ८७ ॥
लागो फाल्गुनमास तब, रंग रचे सब कोय ॥
अवधनिवासी छैल बहु, खेलैं प्रमुदित होय ॥ ८८ ॥
इक होरी ससुरार पुनि, कहा लाजको काज ॥
धूम करैं घर घर चहूँ, रंग गुलालहि साज ॥ ८९ ॥
डफ मृदंग वंशी बजै, जनक नगर चहुँ ओर ॥
रैनि दिवस छायो रहै, होरी होरी शोर ॥ ९० ॥
बचियोरी बचियो कहैं, एकहि एक पुकार ॥
अवधनिवासी लोगते, सँबै बड़े फगुहार ॥ ९१ ॥
राम अनुज रिपुदमन ते, औरहु चपल प्रवीन ॥
संग सखन लै फिरत हैं, रंग गुलालहि भीन ॥ ९२ ॥
इहि विधि मिथिलावासिनी, कोउ कहैं सकुचाय ॥
कोऊ ह्वै सन्मुख रचैं, फाग रंग वरसायं ॥ ९३ ॥
कोऊ तिय जुरिकै रहसि, करैं परस्पर बात ॥
सखी न होरी होइ यह, वरजोरी दरशात ॥ ९४ ॥
ताछिन बोली एक तिय, सुन गोरी मम बात ॥
अबकी फागुन माहँ यह, नये ढंग दरशात ॥ ९५ ॥

सवैया–कवित्त ।

धूँधर लाल गुलालकी छाई चहूं दिशि केशर रंग रहो रचि ॥
गावत हैं डफ ताल बजावत गारी दै लंक लचावत हैं नचि ॥
होरी कहा वरजोरी भटू रसिकेश भई सब रीति नई सचि ॥
लैचल मोहीं कहूं सजनी इहि लागकी फाग ते भाग दुरौं बचि९६

दोहा–ताछिन बोली अपर तिय, सखी एक खिलवार ॥
अवध निवासी कौन धौं, है वह बडो धुतार ॥ ९७ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

छेकत गलीमें छैल नवल छबीलिनको छाती छै छिपात जो छरीले तिहि धावै तौ ॥ गजब गरार गारी गावत गरूर भरो गुण गन वाके गिनै पार नाहिं पावै तौ॥ रसिकबिहारी रूप चतुररसीलो अति रिसहू करौ जो रस रीति तें रिझावै तौ ॥ येरी यह गांव छोड़ि अनत वसीजे अब कीजैका उपाय जाते लाज रहि जावै तौ ॥ ९८॥

दोहा–तासु वचन सुनि एक तिय, बोलीं अतिहि उताल ॥
हौं भाषौं तोसों भटू, सुन होरीको हाल ॥ ९९ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

लीने पिचकारी कर झोरिन गुलाल भरे खेलत छबीले छैल होरी मद छाकि छाकि ॥ रंग बरसावैं अंग जोबन अभंग भीनै घालत हैं कुंकमा कपोलन पै ताकि ताकि ॥ रसिकबिहारी सबै सुघर खिलारी भारी देखि नौल नारी गाय गारी देत वाकि वाकि ॥ तूतो है भली पै अली चरचा चली मैं सुनी जात या गली ह्वै छली तेरो भौन झांकि झांकि ॥ १०० ॥

दोहा–सो सुनि कही प्रवीन तिय, कहा आपनो जोर ॥
ह्वैहै प्रति दिन दिन घनो, फाग रंगको शोर ॥ १०१ ॥
याते हौं हित बात यह, भाषौं सबहि बुझाय ॥
होरी बरजोरी रचै, कहा दोष तिहि आय ॥ १०२ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

होरी में मचैगी धूम धूँधर चहुँ दिशान गानवान ताननमें कानन पगैयो जनि ॥ रंग पिचकारिनकी धारनमें भीजि भीजि आवैंगी सहेली सबै दोष त्यौं लगैयो जनि ॥ रसिकविहारी है अनोखे खिलवार इहाँ नीकै नैन बैननकी सैन भूलि जैयो जनि । हौं तो इहि फागुनमें फाग ना रचौंगी वीर कोऊ रंग डारैं बरजोरी कछूकैयो जनि ॥ १०३ ॥

दोहा–इमि बतरात हुतीं सबै, ताछिन तहँ इक बाल ॥
आई भाजत रंग सनी, बोली निपट विहाल ॥ १०४ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

थोरी वैस कोरी मोसे करि बरजोरी गोरी डारिकै ठगोरी मेरे गरभुज मेलिगो ॥ वेनी लै विथोरी माल तोरी तनी छोरी भट्ठू झोरी भरि रोरी कहि सोरी तनु झेलिगो ॥ काह मैं कहौंरि रस चोरी में खरोरी छैल रसिकविहारी अंग अंग रंग रेलिगो ॥ होरी में भयोरी जो नयोरी स्वाँग देखो वीर कोधौं खिलवार आज ऐसी फाग खेलिगो ॥ १०५ ॥

दोहा–इहि विधि मिथिलानगर मधि, मची फाग चहुँओर ॥
अरु सिद्धा रनिवास मधि, सकल सखिनको जोर ॥१०६॥
कोशलराज किशोरको, अनुज सखनके संग ॥
रंग अबीर गुलाल भरि, रचैं तियाके अंग ॥ १०७ ॥
परमानंद समेत इमि, सब हिय भरि अनुराग ॥
फागुन द्वादश दिवस लग, खेली नित प्रति फाग ॥१०८॥
पुनि लक्ष्मीनिधिते कही, रघुवर नेह बढाय ॥
अब नृपरानिहि विनय करि, दीजे हमैं रजाय ॥ १०९ ॥
तब लक्ष्मीनिधि बेगही, मातु पिताहि समुझाय ॥
रामबिदा को साज सब, साजो अमित सजाय ॥ ११० ॥
तब सब संगी मित्रते, रामहि कहैं सुबैन ॥
हम चलि हैं सँग रावरे, क्षणहू बिलग रहै न ॥ १११ ॥
सुनि रघुवर तिन धीर दै, समुझाये हिय लाय ॥
तब सो कोऊ दीन ह्वै, बोले कोउ रिझाय ॥ ११२ ॥

सवैया कवित्त।

चाहौ न चाहौ पियारे हमै दिन रैनि सदा जिये रूसे घने रहो ॥
बोलौ न बोलौ हँसौ न हँसौ गर लागौ न लागौ जुरो सजने रहो॥
जो जिय भावै करौ रसिकेश भले सुख साज में सार सने रहो ॥
नैननसे लखि लीजे लला युग कोटिनलों तुम नीके बने रहो११३

पहिले छलते मन मोहि लयो अब क्यौं जियरा तरसावत हो ॥
मृदु बैन सुनावत ऊपरसे हियमें न दया कछु लावत हो ॥
निठुराई तजो रसिकेश सबै तुमतो दिलदार कहावत हो ॥
हम जानि लई हौ बड़े कपटी तब तौ ममप्राण सतावत हो ११४
भौंर दयो जिय पंकज पै तनु दीपमें जारत धाय पतंगी ॥
त्यौं हम मित्र जु साँचे भये अजहूँ तुम यार न त्यागि दुरंगी ॥
ठौर घनी अनरीति लखी जिहि दीजिये प्राण सु होय न संगी ॥
नेह दुहूँ सु भले रसिकेश है हाय जरे यह प्रीत इकंगी ॥११५॥

दोवई छंद।

राम मित्र मिथिलावासी बहु इमि अति होय दुखारी ॥
कोऊ मृदु कटु कोउ नेह वश विह्वल गिरा उचारी ॥
सुन उमंगाय लगाय अंकसो समुझाये रघुनाथा ॥
दै बहु धीर काहु तहँ राखे काहु लये निजसाथा ॥ ११६ ॥
उत सिय मात प्रेम भर प्रमुदित पुत्रिन निरखन हेता ॥
सिद्धाकी प्रिय सखी विचित्रा ताहि समाज समेता ॥
दई रजाय जाव कौशलपुर सो आनंद अवानी ॥
तिहि सँग अपर भूरि पुरवासिन गईं दरश रुचि ठानी ॥११७॥
तब मिथिलेश बिदा किय रामहि दै बहु साज समाजा ॥
परम सनेह उमंग यथोचित मिले सबहि रघुराजा ॥
दुवरी शोध पयान कियो द्रुत संग विपुल नर नारी ॥
अति उताल पुर सन्निध आये सप्तम दिवस सुखारी ॥ ११८ ॥
दोहा—इत सिय ढिग बहु नारि मिलि, करहिं परस्पर बात ॥
भये घने दिन तबहिं ते, नित शुभ शकुन जनात ॥११९॥

घनाक्षरी कवित ।

डेरी भौंह डेरी आँख डेरो भुज डेरो कुच डेरे अंग मेरे सब फरक रहे हैं री। आजहूँ न आये कहँ छाये प्राणप्यारे लाल मेरी जान कोऊ बाल गाढे कै गहे हैं री। रसिकविहारी यह कारण कहा है वीर आँगीमें

न मावे मो उरोज उमहे हैं री। होत हैं शकुन वेई पीके मिलिवेके नित्त तीके हेत नीके नीके नीके जे कहे हैं री ॥ १२० ॥

दोहा—सो सुनि बोली एक तिय, सत्य कहौं मैं बाल ॥
हों जानो मो प्राणप्रिय, आवन चहत उताल ॥ १२१ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

हिय हुलसात मन मोद सरसात भटू अंचल उडात वाम नैन बाहु फरकै। दाहिने कुरंग पाँत काग शुभ बोलि जात रसिकविहारी त्यौं उरोज युग थरकै। गनक बुलायो प्रात सोउ कही नीकी बात शकुन दिखात लोन नीवी फंद सरकै। हेली हम जानी मिलो चाहत हमारे प्यारे बार बार आज कंचुकीके बंद तरकै ॥ १२२ ॥

दोहा—ताछिन बोली मैथिली, स्वपन लखो हम आज ॥
कौशलराजकिशोर जनु, आये सहित समाज ॥ १२३ ॥
इमि बतरात हुतीं सबै, ताछिन इक अलि धाय ॥
आय कही सानंद अति, आवत हैं रघुराय ॥ १२४ ॥
तासु वचन सुनिकै मुदित, सिय निज निकट बुलाय ॥
दीन भूषण वसन वर, परमप्रेम उमगाय ॥ १२५ ॥
भरत साज साज जायकै, लाये नगर लिवाय ॥
घर घर भये बधावने, मिले सबै हुलसाय ॥ १२६ ॥
मिथिलाते आई अली, जासु विचित्रा नाम ॥
ताहि सिया सादर निकट, राखी हरषि सु धाम ॥ १२७ ॥
फागुन मास अनंदको, आये सब निज गेह ॥
मिले परस्पर नारि नर, हिय उमँगाय सनेह ॥ १२८ ॥
रचो रंग निज निज सदन, खेलत सबही फाग ॥
बहु दिनके बिछुरे मिले, बाढो अति अनुराग ॥ १२९ ॥
इहि विधि ते रघुवंश मणि, अनुज सखान समेत ॥
करि विहार मिथिला मुदित, आये अवध निकेत ॥ १३० ॥
इत सीता सखिगण सहित, सखन सहित उत राम ॥
दुहुँ दिशि फाग उमंग भरि, सजे साज सुखधाम ॥ १३१ ॥

इति श्री० रा० र० वि० वि० मिथिलाविहारवर्णनो
नाम चतुर्थोविभागः ॥ ४ ॥

दोवई छंद ।

आये कौशल नगर मुदित सब रची फाग सुखरासी ॥
जनकनगर वासी नर नारी मिले अवध पुरवासी ॥
जे तिय पुरुष भूरि मिथिला ते राघव संग सिधारे ॥
ते अरु प्रथम हुते जे सिगरे जुरे एक ह्वै सारे ॥ १ ॥
जबते सिय आई कौशलपुर तबते बहु नर नारी ॥
जनकनगर वासी सानंदित निवसे अवध मझारी ॥
तिनके सदन अपार अनूपम विस्तृत भूरि सुवासा ॥
पुनि आवत तेऊ तहँ विलसत सब विधि सकल सुपासा ॥ २ ॥
तिहि वर वास मध्य रघुवरके अनुज सखा प्रति वर्षा ॥
होरी धूम करैं कबहूँ तहँ रामहुँ जात सहर्षा ॥
सो मिथिलावासी नर नारी भये अवधपुर वासी ॥
तदपि सकल सम्बंध यथोचित रचैं फाग सुखरासी ॥ ३ ॥
ते सब हीय उमंग भरी अति ठानी फाग सुहाई ॥
रघुवर अनुज सखा सानंदित करी धूम तहँ जाई ॥
इत रघुवंशी छैल सुभग उत निमि वंशी नर वामा ॥
यूथ यूथ मिलि होरी खेलत सुख शोभा अभिरामा ॥ ४ ॥
दोहा—इमि माची नित धूम तब, एक तिया चहुँ धाय ॥
जे आईं नव नारि तिन, सबही कही बुझाय ॥ ५ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

छैल नित याही गैल आयकै मचावैं फैल भौंह मटकावैं औ नचावैं नैन गारी दै ॥ देखि नव गोरी बरजोरी करि धावैं ताहि रंगमें भिजावैं ताकि तन पिचकारी दै ॥ रसिकविहारी हैं अनोखे फगुहार फेर पकर बनावैं नर भेष हँसैं तारी दै ॥ याते प्राणप्यारी सीख मानियो हमारी दुरि बैठियो अटारी चहुँ ओर ते किँवारी दै ॥ ६ ॥

दोहा—यौं कहि पुनि बोली भटू, जे रघुवंशी छैल ॥
तिहूँ लोकते अवधमें, तिनकी न्यारी गैल ॥ ७ ॥

चैतमास आरंभकी, रंग पंचमी होय ॥
पुनि त्रैदिन लग अष्टमी, फाग गिनै सब कोय ॥ ८ ॥
इहि विधि मिथिलावासिनी, करैं परस्पर बात ॥
छिन छिन प्रति दिन दिन चहूँ, होरी सुख सरसात ॥ ९ ॥
उत खेलत पुर माहिं सब, नर नारी सानंद ॥
रची फाग इत महल सिय, सहित सखिनके वृंद ॥ १० ॥
आई मिथिला ते सखी, तिहि सिय दई रजाय ॥
होहु सजग अलि यूथ मिलि, सुठि सिंगार सजाय ॥ ११ ॥
सुनि सिय आयसु हुलसिकै, सुभग विचित्रा नारि ॥
सजे अंग भूषण वसन, वर शृंगार सुधारि ॥ १२ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

जावक लगायो युग पाँयन सुरंग अति घेरदार घाँघरो नवीन पहिरायकै ॥ नीलरंग चूनरी चटकदार चातुरी ते चुनि चुनि चारु राखी सरस उढ़ायकै॥रसिकविहारी भली तियहि सिंगारी अली माँग रचि दीनी वर सेंदुर भरायकै ॥ मानो रसराजको विदारि आयो रौद्र रस लालमन जीतिवेको विजय बढाय कै ॥ १३ ॥

दोहा—तासु छटा लखि परसपर, कहैं अवधकी तीय ॥
याको शिख नख सुभग पै, पीठ कहा कमनीय ॥ १४ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

कंचन पटी कै अँगनाई मैन मंदिरकी जोवन महीपके विराजिबेको कैधौं पीठ ॥ कैधौं मान गढकी दिवाल है बिशाल अति रूप परदाकै कोऊ ढीठकी परै ना डीठ ॥ रसिकविहारी हेरि हेरि मति हारे घनी ऐसी है अनूप जाकी उपमा मिलै है नीठ ॥ कैधौं कदलीको पत्र कोमल नवीन मंजु कैधौं यह शोभित नवेली नागरीकी पीठ १५॥

दोहा—निरखि विचित्राकी छटा, तिय बोलीं हुलसाय ॥
हो सुंदरि तुव नाम यह, सत्य रूप सम आय ॥ १६ ॥

सवैया कवित्त ।

धुर वृद्ध भयो करतार अबै थहरै तनु औ कटि कंठ लपो ॥
इहिते तिहिते वर रूप बनै न बनावत पै उर अपि चपो ॥
अति तो छबि हेरि अनूप हिये रसिकेश यही दृढ हेत थपो ॥
विरची विधि तोहिँ भटू जबहीँ तब रंच कहूँ कर नाहिँ कपो १७
भृंग चहूँ भ्रमते मड़रात विलोकतहैं दृग पंकज फूले ॥
आवत कीर हिये ललचात लखैं अधरारुण बिम्ब अतूले ॥
चंदके धोखे चकोर लखैं मुख है रसिकेश सदा अनुकूले ॥
तो छबि हेरतही नवला निरपक्ष कहा पुनि पक्षिहु भूले ॥ १८ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

खंजन मलिन्द मीनहूते गुण चौगुणो है ऐसे दृग दोऊ जिनै निरखि लजाय कंज ॥ मधुते सुधाते बसै छैगुणो मिठास जामें वाणी यौं अनूप सुनि सकल नशात रंज ॥ रसिकविहारी रूप नौगुणो गुलाबहूते जिनको कपोल ये ललाम मदकाम भंज ॥ शीतकरहूते अति शीतकर सौगुणो है येरी प्राणप्यारी तेरो वदन मयंक मंजु १९॥

दोहा—सुनत विचित्रा सकुचिकै, कहे भाव युत बैन ॥
अवधवासिनी धन्य तुव, पद रज सम हम हैं न ॥२०॥
इमि अति आनंदित सबै, सखिगण कियो शृँगार ॥
आई सिय ढिग मणिजटित, पिचकारि कर धार ॥ २१ ॥
सिय शृँगार तिहि समय को, वरणि सकै कवि कोय ॥
जिहि भाषै बहु शारदा, तऊ थकित मति होय ॥ २२ ॥
सो मिथिलाधिप नंदिनी, संयुत सखी समाज ॥
शोभित महल उमंग भरि, फाग साज सब साज ॥२३॥
साजे होरी साज सब, सकल अनूप अनेक ॥
सो अवलोकत ही बनै, वर्णत बनै न नेक ॥ २४ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

मृगमद चूर औ कपूर धूर भूर पूर कुंकुमा करोरनतें सु लघु विशाल हैं ॥ मेरु सम चारों फेर अबिर गुलाल ढेर स्वच्छ गुच्छ विपुल

प्रसूननकी मालहैं ॥ केशर कुसुंभ रंग पूरे कुंभ कुंड रूरे अतर तमोल येला अमित निरालहैं ॥ रसिकविहारी इमि फागकी तयारी संग जनकदुलारीके उमंग भरी बाल हैं ॥२५॥ अनुज सखान वृंद युत रघुचंद सजे अतिही अनंदते प्रबंद करि होरीके ॥ रसिकविहारी करधारी पिचकारी मंजु सहित अबीर औ गुलाल भर झोरीके ॥ रंग रंग रंगके अपार घट लीने संग बाजत सुढंग ते मृदंग डफ जोरीके ॥ मिथिलानिवासिनमें अति अनुराग भरि खेलि फाग आये भौन जनककिशोरीके ॥ २६ ॥ देखि रघुराईको विचित्रा उठि धाई वेगि सखिन समेत आय रंग झरिलाई सो ॥ करि चपलाई लँगराई औ ढिठाई भूरि मसलि गुलाल मुख औचक दुराई सो ॥ रसिकविहारी चारु परम प्रवीन नारी सकल खिलारिनकी सुमति छकाई सो ॥ सरस अनूप रूप हेरि मन मोहित ह्वै जानी सब येही मिथिला ते बाल आई सो ॥ २७ ॥

दोहा—निरखि विचित्राकी छटा, चकित भये रघुचंद ॥
करत विचार सु हीयमें, पूरो परमानंद ॥ २८ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

मेरो चित्त निश्चल छलैबे छल ठानि सीय गुण बलते धौं प्रगटाई यह भामिनी ॥ कैधौं किन्नरी है कै नरी है कै सुरी है कोउ कैधौं घन त्यागि इत आई आज दामिनी ॥ रसिकविहारी रूपवारी है अनूप नारि कहांते सिधारी प्यारी ढिग अभिरामिनी ॥ कैधौं भारती है कै रतीहै कै सती है तीय शरद शशीकी जोन्ह कैधौं भई कामिनी॥२९॥ कैधौं भूप जोबनके चपल तुरंग युग कैधौं दलपंकजके सरस सलोने ये॥ कैधौं मदगंजन निरंजन हैं खंजनके कैधौं मृग मीन हेत भये अनहोने ये॥ कैधौं मन मोहिबेके उभय अभूत दूत कैधौं सुखदेत लेत अमीविष दोने ये ॥ रसिकविहारी कैधौं हरन सुहीके पीके लोचन सुतीके अतिनीके रचे कौने ये ॥३०॥ कैधौं शशि अंकमें विराजै शनिबाल रूप कैधौं कंज कलिकापै सो है भृंग नीको है ॥ कैधौं हेम संपुटमें जटित सु नीलमणि कैधौं धरो आरसी पै फूल

अरसीको है ॥ कैधौं शुभ्र आसन पै बैठो है मनोज भूप कैधौं जंत्र मोहन है मोहन सु जीको है ॥ रसिकबिहारी कैधौं डीठ काहूकी है गडी कीधौं यह आनन पै गुदना सु तीको है ॥ ३१ ॥

दोहा—इमि विचार करि राजसुत, बहुरि लखे तिंहि ओर ॥
ताछिन कमला धायकै, दये रंगमें बोर ॥ ३२ ॥
लखि रिपुसूदन कुंकुमा, घालो तासु कपोल ॥
मुख गुलाल मलि मेनका, धाय मिली निज टोल ॥ ३३ ॥
ताछिन आलीगण उमँगि, रंग गुलालहि छाय ॥
अनुज सखन युत श्यामको, नख शिख दये रचाय ॥ ३४॥
तिहि औसर छबि फागकी, अकंथ अभूत अनूप ॥
सो सुख जानै नैन मन, जहँ छायो वह रूप ॥ ३५ ॥

घनाक्षरी—कवित्त ।

बरसत रंग तिय दामिनी सी दौरैं दुरि घन अँधियार है गुलाल अवरोधमें ॥ गरजत मेघसे मृदंग मैन पौन झोंके होत कलगान कोकिलानके प्रबोधमें ॥ फागुन पलट भयो सावन सुहावन सो रसिकबिहारी कहौ निज मति शोधमें । सरिता नवेली उमड़ी है नेह नीर भरि धायकै मिलीहैं जाय प्रीतम पयोधमें ॥ ३६ ॥

दोहा—इहि विधि इत होरी मची, कोऊ कछू नं जान ॥
राम विचित्रा डीठ लखि, सिय उत ठानो मान ॥ ३७ ॥
मिसकरि उठि तहँ ते सिया, विमलहि निकट बुलाय ॥
रहसि भवन मधि लै गयी, भाषी भौंह चढ़ाय ॥ ३८ ॥
सखीन हौं आयसु दई, पै सु विचित्रा नारि ॥
आवतहीं नृपनंद ढिग, धाई रूप निहारि ॥ ३९ ॥
पुनि श्यामहु की डीठ हौं, पहिचानी तिहि ओर ॥
चकित भये टक लाय दृग, मानो शशिहि चकोर ॥ ४० ॥
याते हौं अब लाल ढिग, जाय न खेलौं फाग ॥
सुनि विमला समझायकै, बोली युत अनुराग ॥ ४१ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

नृपतिकिशोरी मोरी विनय सुनीजे इती कहति निहोरी करजोरी मान लीजिये॥ गोरीते सु जोरी डीठ होरी में न चोरी कछू, खोरी तिन ओरी है न जीमें ठान लीजिये॥ जोरी श्याम गोरी विधि जोरी या करोरी युग अचल सदाही सत्य नेह जान लीजिये ॥ राम एक नारी व्रतधारी मुनि झारी कहैं रसिकविहारी बात सारी छानि लीजिये॥ ४२॥ हम सब आली दिन रैनि नित दंपतिको सेवैं हैं सदाही जीय गति पहिचानै हैं ॥ रहसिरसैहैं दरशैहैं परसैहैं अंग बोलैहैं हँसैं हैं औ विनोद मोद ठानैं हैं॥ रसिकबिहारी धीर अवधविहारी सत्य धर्म धुरधारी सो सुनीति रीति जानैं हैं॥मन वच कर्मते सु भूलिहु कबौं न लाल रावरे विहीन काहु बाल उर आनैं हैं॥ ४३॥

दोहा—यौं कहि पुनि विमला सुमति, बोली परम सुजान॥
धनि दंपति जोरी मिली, दोऊ दुहूँ समान॥ ४४॥

घनाक्षरी कवित्त।

प्यारे सों न कोऊ एक नारी व्रतधारी और प्यारीसी पतिव्रता पुनीत कहुँ नारी ना॥ अवधविहारी ऐसे कितहूँ न रूपमंत नृपति दुलारीसी सुतीय छबिवारी ना॥ रसिकविहारी दुहुँ दोऊ अनुहारी इमि काहु ठौर दंपति सनेह सत्य कारी ना॥ एक मुख कैसे यह भाग्यकी बडाई करों गिरिजा रमाहु सम स्वामिनी तिहारी ना॥४५॥

सवैया कवित्त।

व्याह भयो जबहीते पिया तुव रूप लखैं नितही दृग दीने॥
रंच न त्यागत हैं रसिकेश तिहारहि नेह सुधारस भीने॥
रावरे अंगकी देखि प्रभा ललकैं पलकैं नहिं देत प्रवीने॥
हौ बड़ भागिनि राजसुता रघुनंदनको अपने वश कीने॥ ४६॥

घनाक्षरी कवित्त।

परमसुजान ज्ञान गुणकी निधान मंजु अति मतिमान सुददान प्राणप्यारेकी॥ मेरी विनै मान मान त्यागौ अनुराग प्रिया सिखई सखीको आज यह गति न्यारेकी॥ कीजे फाग विजय सु ढंग गहि

लीजे धाय सुथरी भली है या गुलालके अँध्यारेकी ॥ रसिकविहारी प्यारी रंग बरसावो चलि पिय दरशावो द्युति आनन उज्यारेकी४७॥

दोहा–यौं कहि विमला सीय मुख, लखि पुनि कर गहि लीन ॥
नैननाय मुसकाय फिर, बोली अली प्रवीन ॥ ४८ ॥

घनाक्षरी कवित्त

झेलि झेलि झोरिन अवीर रंग रेलि रेलि मेलि मेलि कुंकुमा गुलाल भरि मूठि मूठि ॥ खेलो फाग आई अनुराग भरी भाग्यनते काहे इतरात बात बोलतीहौ तूठि तूठि ॥ रसिकविहारी कौन वानि या तिहारी प्यारी प्यारेको वृथाही क्यौं लगावो खोरि झूठि झूठि ॥ मानो सीख मोरी वैस थोरी पै न भोरी वीर होरीमें न गोरी बरजोरी चलो रूठि रूठिं ॥ ४९ ॥

दोहा–सुनि आलीके वर वचन, हँसि लगाय तिंहि हीय ॥
सीय कही विमला सखी, हौं अति मति कमनीय ॥ ८० ॥
यौं कहिकै आनंद भरि, लै पिचकारी हाथ ॥
कोउ न जानो भेद सिय, मिलीं सखिनके साथ ॥ ८१ ॥
बरसत है दुहुँ ओरते, रंग गुलाल अपार ॥
कोऊ लखै न काहुको, छायो अति अँधियार ॥ ८२ ॥
छिन छिन कहत उमंग भरि, सखी सखा दुहुँ ओर ॥
जै मिथिलाधिप नंदिनी, जै अवधेशकिशोर ॥ ८३ ॥

घनाक्षरी कवित्त।

बरसत दोउ ओर रंग पिचकारिनते मृगमद मिश्रित गुलाल धुंधछाईहै ॥ रलित कपूर धूर पूरोहै अबीर चहूं केशरकी कीच बीच महल मचाई है॥चलत अपार चारु कुंकुमा प्रसूनगुच्छ रसिकविहारी गान धुनि सरसाईहै ॥ अवधकिशोर अरु जनककिशोरी गोरी खेलैं आज होरी आज होरी अधिकाई है ॥ ८४ ॥

दोहा–इमि खेलत होरी दुहूँ, आय भये इकठौर ॥
जनकनंदिनी राजसुत, रसिकनके शिरमौर ॥ ८८ ॥
ताछिन पिय कर गहि सिया, बोलीं मृदु मुसक्याय ॥
कितते विचरत रँग भरे, आये हो इहिं ठाय ॥ ८६ ॥

सवैया कवित्त।

फौज लिये फगुवारनकी सब सौंज सजे निज मौंजमें सूबे ॥
लाल गुलाल ते लाल भये छबि छाक छके दृग हैं मद ऊबे ॥
हौ रसिकेश उमंग भरे रसरंगमें अंग सु रंगमें डूबे ॥
सांचि कहौ किहिके घर जाय लला बनिआये हौ आज अजूबे५७॥
दोहा—सुनि हँसिकै बोले तबै, रघुवर प्रेम प्रवीन ॥
इन दिन मिथिलावासिनी, भई सबै रसलीन ॥ ५८ ॥
तिनके सदन सखान युत, कियो जाय रसपान ॥
अब इत आये तव सखी, सब करिहैं सनमान ॥ ५९ ॥
इमि बतरातहि औचकै, चंद्रकला अलि आय ॥
अंजन रेख कपोल करि, बेंदी दई लगाय ॥ ६० ॥
सो०—ताछिन लषण प्रवीन, गहि बोरी तिहि रंगमें ॥
भरत धाय धरि लीन, हेमा मुख रोरी मली ॥ ६१ ॥
दुरत विचित्रा नारि, आई कर कज्जल लिये ॥
रिपुहन ताहि निहारि, गहि सोई तिहि मुख मलो ॥ ६२ ॥
ताछिन ताहि निहारि, पहिचानी रघुवीर ध्रुव ॥
यह सु विचित्रा नारि, सिद्धाकी प्यारी सखी ॥ ६३ ॥
अति उताल रघुलाल, मारी मूठ गुलाल तिहि ॥
सो प्रवीन वर बाल, भजी श्याम मुख चूमिकै ॥ ६४ ॥
ताछिन अलिगण धाय, गहि लीने बहु सखनको ॥
नारी वेष बनाय, पाँय पराये सीयके ॥ ६५ ॥
लषण शत्रुहन धाय, गहि लाये सखियानको ॥
वर नर रूप सजाय, राम पाँय डारी मुदित ॥ ६६ ॥
सो लखि सिय उमँगाय, रँगगुलाल अरु कुंकुमा ॥
सहित सखी समुदाय, पिय तन ताकि वरसन लगी ६७॥
अनुज सखन युत श्याम, होरी होरी शोर करि ॥
रँग गुलाल अभिराम, चहुँ दिशिते लाई झरी ॥ ६८ ॥

दोवई छंद।

लषण विचित्रा अंग शत्रुहन चंद्रकला पर मेलैं ॥
भरत चारुशीला मिलि रघुवर जनकनंदिनी खेलैं ॥
सखा सखी अरु अपर अनेकन भरि भरि हृदय उमंगा ॥
गेंद प्रसून गुलाल कुंकुमा घालत बरसत रंगा ॥ ६९ ॥
बजत मृदंग झांझ डफ दुहुँ दिशि होत मनोहर गाना ॥
अतर मलत मुख पान देत हठि अति अनंद उमगाना ॥
राजकुँवर मिथिलेशनंदिनी दोऊ सुघर खिलारी ॥
खेलत दुहूँ परस्पर होरी भरे सनेह सुखारी ॥ ७० ॥

घनाक्षरी कवित्त।

श्यामा श्याम सुघर खिलारी हुसियारी करि रसिकविहारी धाय धाय दोऊ रेलै हैं।केशरके रंगमें सुअंग सराबोर भीजे ताकि ताकि कुंकमाकपोलन पै मेलैं हैं। लाल मुख लाल सोहैं सहित गुलाल तापै अलकैं अबीर भरी झूमैं छबि झेलैं हैं। पीत जरतारी झँगा पहिरे भुजंग छोना मानो बाल भानु संग धाय धाय खेलैं हैं ॥ ७१ ॥

दोवई छंद।

ताछिन धाय अली कमलादिक औचकही द्रुत जाई ॥
चारहु राजकिशोरन गहिकै निज सु गोल माधि लाई ॥
नैन आँजि वेदी लिलारदै फूल माल गल डारी ॥
आय खरे कीने सिय सन्मुख हँसीं सकल दैतारी ॥ ७२ ॥
लखि मुसकाय कही सिय प्यारे अब कहँ सखा तिहारे ॥
मन भावै सो रचिय रूप चहुँ बोलि देहु किन हारे ॥
तब रघुचंद मंद हँसि भाषी प्रिया सदा हम हारे ॥
हैं अबला सबला सहाय जिहि मनसिज धनु शरधारे ॥ ७३ ॥
सुनि सिय नैन नवाय विहँसिकै पिय दुहुँ कर गहि लीने ॥
कही लाल मिलि अनुज सखन इत आय फैल बहु कीने ॥
फगुवा देहु छैल तब छूटौ नत ये मिथिला नारी ॥
साजि तिया शृंगार नचै हैं चहूँबंधु धनुधारी ॥ ७४ ॥

कही तबै रघुचंद मंद हँसि वर फगुवा हम देहीं ॥
अनुज सखा ये जिते तिते सब सखी एक इक लेहीं ॥
हमैं लेहु प्यारी तुम याते कह उत्तम सो दीजे ॥
पुनि बहु सखा सखिनको भूषण वसन विभूषित कीजे ॥ ७५ ॥
दोहा—सुनि सिय पिय वाणी विहँसि, बोली हम लखि लीन ॥
सखा अनुज संयुत लला, हौ सब कला प्रवीन ॥ ७६ ॥
यौं कहि सिंहासन विशद, बैठारे रघुचंद ॥
श्याम वाम दिशि लाडिली, शोभित परमानंद ॥ ७७ ॥
अशन पान मादक विविध, अतर तमोल सु माल ॥
वसन विभूषण विशद बहु, सकल रसाल विशाल ॥ ७८ ॥
यथायोग सादर सकल, देत लेत युत मोद ॥
भरे परस्पर प्रेम सब, छाके फाग विनोद ॥ ७९ ॥
पुनि तहँ ते निज निज भवन, गवन कियो सब कोय ॥
इहि विधि फाग अनंद अति, अवधनगरमें होय ॥ ८० ॥
बहुरि परस्पर करत सब, निज निज भवन उछाह ॥
अनुज सखा सेवक सखी, सहित सनेह उमाह ॥ ८१ ॥
सर सरिता गृह बाग वन, विहरत निज निज टोल ॥
भोग राज कौतुक करैं, ठानैं त्रिविध कलोल ॥ ८२ ॥
इहि विधि फाग अनंद अति, होय अवध पुर माहिं ॥
जो सुख लखि सुरपालहू, निज सुख तुच्छ गिनाहिं ॥ ८३ ॥
परमानंद समाज युत, कौशलनगर मझार ॥
इहि विधि सीताराम नित, करैं अनेक विहार ॥ ८४ ॥
इति श्रीरा० र० वि० वि० फागविहार वर्णनो नाम पंचमो विभागः ॥ ५ ॥

हरिगीतिका छंद ।

इहि भांति श्रीरघुवीर सिय युत करत नित लीला नई ॥
अवलोकि पुर परिजन यथोचित रहत सब आनँद मई ॥

वर बंधु सेवक सखन संयुत मुदित शहर निवासके ॥
वर विशद विधि मय सकल तीरथ किये सहित हुलासके ॥ १ ॥
दशसहस वर्ष सहर्ष बीते विविध विपुल विहारमें ॥
छाके रहैं नर नारि निशि दिन सब अनंद अपारमें ॥
रघुवीर निश्चल राज काज सुरीति संयुत बहु करैं ॥
नित नगर चरचा चरनते सुनि सुनि सुयशनिज सुख भरैं ॥ २॥
इक समय सियके सदन रघुवर मध्य दिन माधि जायकै ॥
बैठे वरासन प्रियहि लखि भाषी हृदय हुलसायकै ॥
हे मैथिली कछु दिन व्यतीते सुभग संतति पाय हो ॥
सुत गोदलै करि प्यार छिन छिन निरखि मुख सुख छाय हौ॥३॥

प्रश्न। रामाश्वमेधे। अध्याय ॥ ५५ ॥ श्लोक०।

रामो राज्यमयोध्यायां भ्रातृभिः सहितोऽकरोत् ॥
धर्मेण पालयन्सर्वं क्षितिखंडं स्वया श्रिया ॥ १ ॥
सती दधार तद्बीजं मासाः पंचाभवंस्तदा ॥
अत्यंतं शुशुभे देवी त्रयीव पुरुषं धरा ॥ २ ॥

हरिगीतिका छंद।

सुनि सीय हिय सकुचाय शीश नवाय कछु मुसकायकै ॥
करि वदन अंचल ओट निरखैं पीय मुख हुलसायकै ॥
रघुचंद पुनि सानंद बूझी काह तव रुचि भामिनी ॥
अभिलाष उर जो होय सो सब पूजही गज गामिनी ॥ ४ ॥
सुनि जानकी आनंद भरि मृदु बैन यौं पिय ते कहे ॥
तव कृपा कंत अनंत सब सुख विविध भाँतिन ते लहे ॥
है और कछु नहिं चाह इक अभिलाष यह उरमें रही ॥
बूझी दया ते नाथ जानौं सोउ अब पूजै सही ॥ ५ ॥
दोहा—सुनि बोले पुनि राजसुत, भाषौ प्रिया उताल ॥
जो तुव उर अभिलाष सो, सब पूजै इहि काल ॥ ६ ॥

द्वोवई छंद।

तब सिय कही जोरि कर प्यारे यह रुचि मो मन माहीं ॥
बहु मुनि नारि तपोवन वासिनि सुरसरि तीर रहाहीं ॥
तिनके दरश करौं इक वासर प्रमुदित तितहिं रहाऊँ ॥
अशन वसन भूषण दै पूजौं पुनि प्रभु ढिग द्रुत आऊँ ॥ ७ ॥
सुनि सानंद कही रघुनंदन प्रिया प्रात द्रुत जावो ॥
सकल साज संयुत तिन पूजो प्रमुदित दरश करावो ॥
इमि रजाय दै प्रीति रीति युत तहँ ते राम सिधारे ॥
राजे आय मध्य कच्छा बिच चरवर विविध जुहारे ॥ ८ ॥
उत सिय साज सजन लागी बहु उर अनंद उमँगाई ॥
सखिन कहैं चलि मुनिनारिनके दरश लहैं सुख छाई ॥
इत रघुवर ढिग विजय मत्त मधु भद्र आदि वर चारा ॥
वर्णत नगर कथा सानंदित हास विलास अपारा ॥ ९ ॥
तब कौशलपति सकल चरनते बूझी सहज विलासी ॥
हमहिं सियहि बंधुहि पितु मातहि काह कहैं पुरवासी ॥
भद्र दूत भाषी तब प्रणमित प्रभु सब सुयश अपारा ॥
वर्णत सकल नारि नर प्रमुदित चहुँ दिशि नगर मँझारा ॥ १० ॥
दोहा–सुनि बोले क्षितिपाल तब, यह जगरीति न आय ॥
सब सबही शुभही कहै, कोउ न अशुभ कहाय ॥ ११ ॥
सो मम शपथ निशंक जिय, भाषो सत्य जु होय ॥
यही काज हित नियतहौ, सदा सु चर सब कोय ॥ १२ ॥
चौ०-तब कर जोरि भद्र चर भाषो ❀ हों प्रभुते कछु गुप्त न राखो ॥
इक यह वर सेवक गति होई ❀ स्वामिनिंद सुनि कहै न कोई १३
पै मुहिँ अब निज शपथ दिवाई ❀ याते भाषौं कौशलराई ॥
सो अपराध क्षमा प्रभुकीजे ❀ कुमति वचन पर चित्त न दीजे १४
वसै रजक इक नगरमँझारी ❀ भो विषाद रूठी तिहि नारी ॥
सो सब दिन कहुँ अनत रहाई ❀ संध्या समय गेह मधि आई १५॥
रजक ताहि ताडन करि भाषी ❀ हों नहिं राम लेउँ तुहि राखी ॥

ते वर भूप रुचै सो करहीं ❀ हमतौ दुहूँ लोकते डरहीं ॥ १६ ॥
यौं सकोप ह्वै ताहि निकारी ❀ दीनी त्यागि रजक निज नारी ॥
इमि पुनि अपर कुमति जन वृंदा ❀ करत परस्पर कछु प्रभु निंदा १७
कहत लोग सिय लंक मझारी ❀ रही ताहि पुनि रघुवर धारी ॥
भूपतिही जो ठान अनीती ❀ तो किमि करै प्रजा शुभरीती १८

दोहा—दूत वचन सुनि राम उर, भयो महादुख शोक ॥
गुणत सीय वर धर्म धर, दोष देत तिहि लोक ॥ १९ ॥
पै कछु होवै शुभ अशुभ, लोक देश कुलरीति ॥
निपट त्यागि वो ताहुको, नीति प्रमाण अनीति ॥ २० ॥
कर्म शुभाशुभ कैसहू, जाते निंदा होय ॥
सुजन प्रतिष्ठित काज सो, भूलि करै नाहिं कोय ॥ २१ ॥
इमि विचारि हिय विविध विधि, लिय उसाँस रघुराय ॥
वेगि बुलाये अनुज तिहुँ, सेवक सुमति पठाय ॥२२॥
तिहि औसर शत्रुघ्नहू, रहे अवधपुर माय ॥
आये तीनहु बंधु द्रुत, राज रजायसु पाय ॥ २३ ॥

चौ०—तब सब दूत गये सिख पाई ❀ रहे इकंत चारहू भाई ॥
बंधुन प्रति प्रभु कीन उचारन ❀ पुरचरचा निज हिय दुख कारन२४
तब तिहुँ अमित भाँति समुझाये ❀ पै रघुवर हिय तोष न लाये ॥
लै उसाँस अनुजन प्रति भाषी ❀ आवो सियहि गंगतट राखी॥२५॥
सुनत वचन भे बंधु विहाला ❀ तब बहु शोक सहित रघुलाला ॥
कही अनुज तिहुँ धर्म धुरीना ❀ सो मम आयसु चित्त न दीना२६॥
सुनि लछमन बोले शिरनाई ❀ प्रात करौं जिमि होय रजाई ॥
तब नृपाल सब बंधुहि भाषी ❀ मुनि तिय दरशन रुचि सिय राखी२७
ताही मिस सीतहि लै जावो ❀ तहां राखि पुनि वेगहि आवो ॥
इमि कहि सबहि बिदा किय रामा ❀ गये मौन तिहुँ दुखित सुधामा२८
प्रात होत लछमन रथलाई ❀ तामधि जनकसुताहि चढाई ॥
सूत सुमंत लषण सियसंगा ❀ गवने मुनि आश्रम तट गंगा॥२९॥

पूजन दान साज बहु भांती ❀ लिये संग सिय हिय हुलसाती ॥
मुनि तिय गण दरशन करि आऊं ❀ निज उरकीअभिलाष पुजाऊं ३०
वाल्मीकि आश्रम मधि जाई ❀ लषण सियहि भाषी शिरनाई ॥
दीनी नाथ रजायसु येही ❀ कछु दिन रहैं तहां वैदेही ॥ ३१ ॥
पति आज्ञा सुनि हिय अकुलानी ❀ पुनि तिय धर्म रीति अनुमानी ॥
वाल्मीकि आश्रम मध सीता ❀ सबहि पूजि बर वसी पुनीता॥३२॥
लषण सुमंत राम ढिग आई ❀ कही सकल सिय गति शिरनाई ॥
यह चरचा सुनि पुर नर नारी ❀ भये सकल बहु हीय दुखारी ॥३३॥
अति वह रजक हीय पछताता ❀ कहत कढी कह मो मुख बाता ॥
तब तिहि पूर्वजन्म सुधि आई ❀ जानी यह भवितव्य रहाई ॥ ३४ ॥
हम शुक रहे जनकपुर माहीं ❀ तिय युत तजे प्राण सिय पाहीं ॥
ताते जन्म अवधमें पायो ❀ सो बदलो सीतासे आयो ॥ ३५ ॥

दोहा—अपर नारि नर अमित विधि, करत परस्पर बात ॥
सुमति कुमति बहु शुभ अशुभ, जो कछु जिहि उपजात ३६

प्र० रा० ॥ अ० ५ ॥ श्लो० ।

तत्र नीचजनाच्छ्रुत्वा सीतायांअपमानताम् ॥
स्वां च निंदां रजकतस्तां तत्याज रघूद्वहः ॥२॥

दोहा—उत मुनि आश्रम जानकिहि, बीते चार सु मास ॥
तब प्रगटे द्वै सुत विशद, पितु सम जासु प्रकाश ॥ ३७ ॥
वाल्मीक मुनि दुहुँनकी, दृढ रक्षा वर कीन ॥
भये संग याते तिनै, को बड छोट न चीन ॥ ३८ ॥

चौ०-तब मुनि नाथ समेत विचारा ❀ पूरव पर उतपति निरधारा ॥
जेठ सुतहि नाम कुश राखा ❀ पुनि कनिष्ठ पुत्रहि लव भाषा३९॥
सीता लखि दुहुँ सुत अभिरामा ❀ पायो अति अनंद विश्रामा ॥
रहैं निकट सखि मुनि जन नारी ❀ सेवैं सियहि प्राणते प्यारी॥४०॥
इहि विधि बडे भये दुहुँ भाई ❀ मुनिवर विद्या सकल पढ़ाई ॥
अस्त्र शस्त्र मधि परम प्रवीना ❀ गीत वाद्य संगीत धुरीना ॥ ४१ ॥
विरचित वाल्मीकि मुनिनाथा ❀ राम चरित षटकांड सु गाथा ॥
सो लव कुश सुरताल प्रमाना ❀ कंठ मनोहर करैं सु गाना ॥ ४२ ॥

दोहा–सिय तिय मुनि सुत अरु मुनिन, निकट सदा तिहि जान॥
इन विहाय कुश लव दुहूँ, नाहिं काहू पहिचान ॥ ४३ ॥
चौ०–वाल्मीकि ऋषि गुरू हमारे ❋ हैं क्षत्रिय दुहुँ बंधु करारे ॥
यौं गुनि मुनि सेवा दुहुँ करहीं ❋ कानन धनु शर धारि विचरहीं४४
राम पुत्र दुहुँ तेज निधाना ❋ छबि गुण बल वपु पिता समाना॥
तिनयुतरहातिसियामुनिआश्रम ❋ करति सदापतिनामभजनश्रम ४५
इत रघुवीर अवधपुर माहीं ❋ राज काज सब साविधि कराहीं ॥
पै दिन रैनि प्रिया को ध्याना ❋ राखत हृदय सहित वर ज्ञाना४६
बहुरि भये द्वैद्वै सुत नीके ❋ भरत लषण रिपुसूदनजीके ॥
सबही निज निज पितु अनुहारी ❋ सुंदर बली गुणी शुभकारी४७ ॥
तक्ष और पुष्कल शुभनामा ❋ ये द्वै भरत पुत्र अभिरामा ॥
अंगद चित्रकेतु दुहुँ वीरा ❋ हैं लछमनके सुवन सुधीरा॥४८॥
इक सुबाहु अरु शत्रुघाति वर ❋ ये शत्रुघ्न पुत्र दुहुँ धनुधर ॥
चहूँ राजसुत सब गुणराशी ❋ रूप तेज बल धर्म प्रकाशी॥४९॥
प्रमुदित रहत सदा सब कोई ❋ समय समय वर कारज होई ॥
लोक वेद कुलरीति प्रमाना ❋ उत्सव करत सकलविधि नाना५०
दोहा–तिहूँ लोक नर नारि अरु, अपर चराचर जोय ॥
श्रीरघुवरके राजमें, सुखी रहैं सबकोय ॥ ५१ ॥
इति श्रीरा० र० वि० वि० कुशलवादिजन्मवर्णनो
नाम षष्ठोविभागः ॥ ६ ॥

सो०–इमि रघुवर मतिधीर, करत राज वर नीति मय ॥
भरत लषण दुहुँ वीर, सेवत युत सेवक सखा ॥ १ ॥
चौ०–एक समय रघुवर करजोरी ❋ बोले गुरुहि सप्रीति निहोरी॥
प्रभु बहु बार सकल मख कीने ❋ यथा शक्ति दानहु कछु दीने॥२॥
पै कृपालु यह रुचिहै मोरी ❋ अश्वमेध मखहोय बहोरी ॥
सुनि वसिष्ठ आदिक ऋषिराई ❋ भये प्रसन्न परम सुखपाई ॥ ३ ॥
बोले राज बिलंब न कीजै ❋ साज सजनहित आयसु दीजै ४॥

सुनि मंत्री सेवकन बुलाई ❀ यथा योग सब दई रजाई ॥
पुनि दशहूँ दिशि दूत पठाये ❀ यज्ञ निमंत्रन सबहि दिवाये ॥
कपिपाति जाम्बवंत लंकेशा ❀ आये सदल साजि वर वेशा ॥५॥
अपर भूप सुर नर मुनि नागा ❀ जिनके हिय रघुवर अनुरागा ॥
ते सबं सदल यज्ञ हित आये ❀ राम सकल सतकार कराये ॥६॥
कोऊ नृपति वीर अभिमानी ❀ कियो विलंब युक्ति कछु ठानी ॥
कोऊ हय सँग गमन विचारा ❀ ते गृह रहे साज सजि सारा ७ ॥
इहि विधि भई अवध अतिभीरा ❀ जुरे भूरि जन सुमति सुधीरा ॥
कोऊ अतिहि उताल सिधाये ❀ कोऊ कछु विलंब ते आये ॥८॥

दोहा–कोऊ द्विज मुनि संतवर, कीनो हृदय विचार ॥
यज्ञ अंतलग जुरहिं जन, ह्वै है मोद अपार ॥ ९ ॥
याते जुरे समाज बहु, तब चलिये हुलसाय ॥
काहू कियो विलंब इमि, अरु छाये सब आय ॥ १० ॥
भूप प्रजा ज्ञानी गुनी, सब संयुत परिवार ॥
साज समाज समेत बहु, आये यज्ञ मझार ॥ ११ ॥
सुथल नैमिषारण्य माधि, भयो सकल मखकाज ॥
अशन वसन धन धाम वर, अपर उचित बहुसाज ॥ १२ ॥
कंचनमय तिय सविधि सुठि, रची सीय अनुहारि ॥
विधि विशुकर्माहू चाकित, जाकी बनक निहारि ॥ १३ ॥
सकल अनूपम साज सजि, सविधि प्रथम श्रीराम ॥
बन्धु सखा सेवक अमित, पठै दये मखठाम ॥ १४ ॥
तिन तहँ साजो साज सब, तिहि पाछे रनिवास ॥
अपर अमित जन यज्ञ थल, गवने सहित हुलास ॥ १५ ॥

चौ० पुनि शुभ समय मध्य रघुराजा ❀ नैमिष गये समेत समाजा ॥
लखि थल साज सकल हुलसाये ❀ राम यथोचित काज दिढाये १६॥
कीश ऋच्छ नर निश्चर नाना ❀ करैं काज जिमि जाहि बखाना ॥
अरु कपि भालु रैनिचर नारी ❀ लागीं उचित कृत्य महँ सारी १७॥
यथायोग सबही रनिवासा ❀ सखा सखी दासी अरु दासा ॥
पुर परिजन पाहुन नर नारी ❀ करैं काज निज निज अनुहारी १८॥

दोहा–सब प्रबंध वर हेरि कै, ह्वै प्रमुदित रघुनाथ ॥
किया अरंभ सु यज्ञको, विशद विप्र मुनि साथ ॥ १९ ॥
श्यामकरण तनु गौरवर, पुच्छ पीत मुख लाल ॥
तरुण सुलक्षण सर्व गति, बली तुरंग विशाल ॥ २० ॥

प्र० रा० अ० ९ श्लोक ॥

गंगाजलसमानेन वर्णेन वपुषा शुभः ॥
कर्णे श्यामो मुखे रक्तः पीतः पुच्छे सुलक्षितः ॥ १ ॥
मनोवेगः सर्वगतिरुच्चैःश्रवस्समप्रभः ॥
वाजिमेधे हयः प्रोक्तो शुभलक्षणलक्षितः ॥ २ ॥

दोहा–हेम पट्टिका राम यश, लिखित बँधी तिहि माथ ॥
साजि सविधि वाजी तजो, सदल शत्रुहन साथ ॥ २१ ॥
सदल वाजि तजि अवधपति, ह्वै सनेम विधि उक्त ॥
निकट शृंग मृग हेम सिय, मखकर मुनि द्विज युक्त ॥ २२ ॥
प्रतिदिन आवत विपुल जन, होत सकल सत्कार ॥
दान मान तिहि समयको, को कहि पावै पार ॥ २३ ॥
उत रामानुज शत्रुहन, संग तुरंग प्रधान ॥
चले परम आनंद कहि, जैति राम बलवान ॥ २४ ॥

दोवई छंद।

भरत पुत्र पुष्कल सिय भ्राता लक्ष्मीनिधि बलवाना ॥
नील रत्न रिपुताप उग्रहय प्रतापाग्र नृप नाना ॥
जाम्बवंत सुग्रीव सु हनुमत आदि ऋच्छ कपि वीरा ॥
सकल भूप युत सैन राम दल रिपुहन संग सु धीरा ॥ २५ ॥
सचिव सुमति वर सखा सु सेवक सदल विभीषण भूपा ॥
इहि विधि अमित सैन तिहि पाछे अग्र तुरंग अनूपा ॥
जहाँ जहाँ निज रुचिते वाजी गवनत तहँ सब जावै ॥
नृपति अनेक आय रिपुशालहि शिर नमि संग सिधावै ॥ २६ ॥

सुंदरपुरी नाम अहिछत्रा तहाँ सुमद नरनाथा ॥
आवतही सो राज्य समर्पण कियो नाय पद माथा ॥
रिपुहन तासु पुत्र कहँ नृप करि सदल भूप लिय संगा ॥
परमानंद चले पुनि तितहीं गमनो जितै तुरंगा ॥ २७ ॥

चौ०-यौं विचरत मख वाजि अनूपम ❀ आयो च्यवन मुनीके आश्रम॥
राम बंधु नमि ऋषिहि सप्रीती ❀ गवने पुनि सुनि कथा सुनीती२८
विचरत संग सैन चतुरंगा ❀ गयो नीलगिरि निकट तुरंगा ॥
जहँ चक्रांकापुरी अनूपा ❀ तहाँ सुबाहु नाम वर भूपा २९॥
तासु कुमार दमन जिहि नामा ❀ समर धीर वर गुणबल धामा ॥
सो नृपसुत मृगयाहित आयो ❀ मख तुरंग वन तिहि दरशायो ३०

दोहा-नख शिख साज अमोल वर, साजो वाजि विशाल ॥
यह रघुवर यश खचित सो, पत्र लसै तिहि भाल ॥ ३१ ॥

घनाक्षरी कवित्त ।

श्रीयुत सकल धर्मधारी चक्रवर्ती ख्यात क्षत्री भानुवंशी दशरत्थ अवधेशके ॥ परम पवित्र पुत्र राजा रामचंद्र वीर ठानो अश्वमेध जो दलैया निश्चरेशके ॥ तिनको तुरंग याहि कोऊ हो बली सो गहै जीतैं शत्रुशाल ताहि सदल सदेशके ॥ नतरु नवाय माथ हाथ जोरि आवै साथ रसिकविहारी ह्वै अधीन कौशलेशके ॥ ३२ ॥

चौ०-इमि लिपि देखि दमन करि क्रोधा । कही राम बिन और न योधा ॥
यौं हठि गयो धामलै वाजी ❀ चतुरंगिनी अनी द्रुत साजी३३॥
लै दल दमन युद्ध हित आयो ❀ प्रतापाग्र लखि कटक चलायो॥
भिरे दुहूँ दिशि वीर जुझारा ❀ भयो समर तिहि समय अपारा३४
प्रतापाग्र नृप इत रणधीरा ❀ भूपति पुत्र दमनइ उत वीरा ॥
अस्त्र शस्त्र दुहुँ दुहुँन प्रहारे ❀ मुरैं न कोउ दोउ भए भारे ॥३५॥
तब नृपसुत वर बाण प्रहारा ❀ विधो सु भूपति हृदय मझारा ॥
प्रतापाग्र अति भये विहाला ❀ तिन रथ लैगो सूत उताला ३६॥
सुनि रण हाल शत्रुहन धीरा ❀ पठयो भरत पुत्र वरवीरा ॥
पुष्कल सदल आय ततकाला ❀ दमन संग किय युद्ध कराला३७

भरत पुत्र शर अग्नि प्रहारा ❀ होन लगो तिहि दल जरिछारा ॥
वरुण बाण तब दमन चलावा ❀ अनल बुझी बहु जल चहुँ छावा३८
शर वायव्य सु पुष्कल छोरा ❀ छाई पवन भजे घनघोरा ॥
पर्वत अस्त्र तजो सो उद्धा ❀ भो गिरि कोट वायु बलरुद्धा३९॥
भरत पुत्र तव हनो वज्र शर ❀ गिरे कुधर है चूर धरणिपर ॥
पुनि दमनहि इक वर इषु शाला ❀ भयो राजसुत लगत विहाला४०

दोहा–दमनहि निरखि विहाल अति, वर सारथी प्रवीन ॥
तिहि युत रथ लै नगरगो, नृपहि विदित सब कीन ॥ ४१ ॥
सुनि सुबाहु निज सुत व्यथा, दुखित सकोप उताल ॥
साजि सैन चतुरंग लै, चलो महीप विशाल ॥ ४२ ॥

चौ०-नृपसुत इक चित्रांग ललामा ❀ दूजो है विचित्र जिहि नामा ॥
दोऊ दमन अनुज ये वीरा ❀ भूपति बन्धु सुकेतु सुधीरा४३॥
ये तिहुँ अपर अनेकन योधा ❀ लै गमनो नृप सुभुज सक्रोधा ॥
ताछिन दमनहु भयो सचेता ❀ चलो सोउ वर सैन समेता४४॥
आय भिरे भट सकल जुझारा ❀ दुहुँ दल एकहि एक प्रचारा ॥
उत सुबाहु जय होत पुकारा ❀ इत शत्रुघ्न जैति उच्चारा ॥ ४५ ॥
लक्ष्मीनिधि सुकेतु दुहुँ युद्धे ❀ पुष्कल अरु चित्रांग निरुद्धे ॥
संयुग धीर सुभुज नरनाथा ❀ ठानो समर शत्रुहन साथा॥४६॥

दोहा–युद्ध करैं रिपुतापते, उद्धत दमन सुधीर ॥
लरत विचित्र विचित्र गति, नील रतनते वीर ॥ ४७ ॥
अपर वीर बहु वीर सँग, नर निश्चर कपि ऋच्छ ॥
अस्त्र शस्त्र वर मल्ल युध, करत सबै रण शिच्छ॥ ४८ ॥
रुंड मुंड कर पद रुधिर, समर भूमि मधि छाय ॥
भयो जु हाहाकार चहुँ, निज पर कछु न जनाय॥ ४९॥
तब पुष्कल चित्रांगको, वध कीनो हनिबान ॥
सुभुज नृपति लखि सुत मरन, शोक दुःख अकुलान ॥५०॥
पुनि धरि धीर सकोप अति, धाय सुबाहु नृपाल ॥
अति उताल शत्रुघ्न पर, घाले बाण कराल ॥ ५१ ॥

चौ०-ताछिन धाय पवनसुत वीरा ❀ बीचहि गहि भंजे सब तीरा॥
मर्दन किय स्यंदन हय सूता ❀ भिरे भूप कपि सुबल अकूता ५२॥
तब हनुमंत क्रोध करि ताही ❀ चरण प्रहार कीन उर माही॥
गिरो भूमि भूपाल विहाला ❀ मुर्छित ह्वै अचेत ततकाला ५३॥
तब तिहि तजि कपि अपर निरुद्धे ❀ सो लखि क्रुद्ध उद्ध भट युद्धे॥
बहु सेवक जन धाय उताले ❀ घेरि रहे ह्वै विकल नृपाले॥५४॥
ताछिन भयो आचरज भारी ❀ जो न होत रणभूमि मझारी॥
मुर्छित परो अचेत जु भूपा ❀ तबै लखो यह स्वप्न अनूपा॥५५॥

हरिगीतिका छंद।

श्रीराम शोभाधाम प्रमुदित यज्ञशाल विराजहीं॥
ब्रह्मांड अगणित देव ब्रह्मादिक अमित तहँ भ्राजहीं॥
ते सकल सुर मुनि नारदादि अपार अस्तुति ठानहीं॥
गंधर्व किन्नर अप्सरा बहु सुयश कर वर गानहीं॥५६॥

प्र०॥ रा०॥ अ० २८॥ श्लोक॥

तदा तु मूर्छितो राजा स्वप्नमेकं ददर्श ह॥
रण मध्ये कपिवरप्रपदाघातताडितः॥ ३॥
रामचंद्र स्त्वयोध्यायां सरयूतीरमंडपे॥
ब्राह्मणैर्याज्ञिकश्रेष्ठैर्बहुभिः परिवारितः॥ ४॥
तत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र ब्रह्मांडकोटयः॥
कृतप्रांजलयस्तत्र स्तुवंति स्तुतिभिर्मुहुः॥ ५॥

हरिगीतिका छंद।

यह लखत स्वप्न सुबाहु नृपहीं चेत भो मुरछा गई॥
उर ज्ञान आयो तबहिं श्रीरघुवीर प्रभुता हिय छई॥
उठि वेगि बरजे युद्धते सुत बंधु सेवक धायकै॥
पुनि सकल युत शत्रुघ्नके पद शीश नायो आयकै॥५७॥

सो०-कीनी विनय अनंत, नृप सुबाहु कर जोरिकै॥
राम अनुज मतिवंत, तब भूपहि उरलाय लिय॥५८॥
रामबंधु बलवान, किय सन्मान बखान बहु॥

नृप गुण ज्ञान निधान, राज समर्पो प्रभुहि निज ॥ ८९ ॥
तब रिपुदमन उदार, दमनहिं करि अभिषेक पुनि ॥
संयुत सैन अपार, चले संग लै नृप हरिहि ॥ ९० ॥

इति श्रीरा० र० वि० वि० अश्वमेधयज्ञारंभ सुबाहु
युद्धवर्णनो नाम सप्तमोविभागः ॥ ७ ॥

दोहा—इहिविधि श्रीरघुवीरको, मख तुरंग चहुँ ओर ॥
निज इच्छित गमनत मुदित, संग सैन वरजोर ॥ १ ॥

दोवई छंद ।

विचरत वाजी गयो तेजपुर तहँ वर भक्त भुवाला ॥
सत्यवान जिहि नाम हरषि सो आयो अतिहि उताला ॥
शीशनाय निज राज समर्पो तब रिपुदमन प्रवीना ॥
तासु पुत्र रुक्महिं अभिषेको चले नृपहि सँग लीना ॥ २ ॥
तहँते कछुक दूर गमने तब औचक भो अँधियारा ॥
धूरि पूरि नभ विज्जु चमंकी ह्वै घन गर्ज अपारा ॥
वरषि रुधिर कच अस्थि उपल मल तम करि खल दल धायो ॥
दशमुख मित्र सु विद्युन्माली नाम निशाचर आयो ॥ ३ ॥
भयो विकल दल कछु नाहिं सूझै ताछिन सो निशिचारी ॥
अंतरिक्ष ह्वै हरि हरि लैगो दुष्ट सु मायाकारी ॥
पुनि ताही छिन मिटो सबै तम दशहू दिशि उजियारा ॥
यातुधान नभ मंडल छाये गर्जहिं विकट अपारा ॥ ४ ॥
सो विलोकि सब दल अकुलायो तबै शत्रुहन वीरा ॥
भाषी अबहिं निश्चरन नाशौ हौ भट सकल सुधीरा ॥
सुनि पुष्कल लक्ष्मीनिधि हनुमत आदि अमित बलवाना ॥
रामबंधु युत भये सु उद्धत समर हेत प्रण ठाना ॥ ५ ॥
समरधीर वर वीर दुहूँ दल भिरे क्रोध करि भारी ॥
पुष्कल संग सु विद्युन्माली ठनो युद्ध बलकारी ॥
तासु भ्रात जो उग्रदंत सो लै धनु खड्ग विशाला ॥
मिथिलापति लक्ष्मीनिधि साथै संयुग कियो कराला ॥ ६ ॥

अपर वीर बहु दुहुँ दिशि युद्धत उद्धत ह्वै करि शोरा ॥
हटत न यातुधान तब धायो कपि केशरी किशोरा ॥
तरु गिरि उपल दंत नख मुष्टन चरण चपेटन मारे ॥
आय जाय महि व्योम छिनहि छिन निश्चर निकर सँहारे ॥७॥
यातुधान ह्वै विकल थकित तब निज माया विस्तारी ॥
मृतक पषाण रुधिर मल वरषो भयो चहूँ तम भारी ॥
भभरि भगे नर भालु कीश भट लखि रामानुज वीरा ॥
छिनमहँ दूर कियो सो खल छल मोहनास्त्र हनि तीरा ॥ ८ ॥
सो विलोकि निश्चर पुनि ठानो अस्त्र शस्त्र वर युद्धा ॥
व्याकुल भये सदल रामानुज तब छायो बहु क्रुद्धा ॥
राम सुमिरि नाराच प्रहारे लगत दुहूँ बलवाना ॥
उग्रदंत अरु विद्युन्माली गिरे भूमि गत प्राना ॥ ९ ॥
तब अनाथ ह्वै विकल भीतिवश लै तुरंग द्रुत धाई ॥
यातुधान सब रामबंधुके परे चरण मधि आई ॥
भये मुदित सब विजय वाजि लहि कियो सु जैजैकारा ॥
तहँ ते चलि पुनि विचरन लागो मख हय दल युत सारा॥१०॥

इति श्रीरा० र० वि० वि० विद्युन्मालीयुद्ध
वर्णनो नाम अष्टमोविभागः ॥ ८ ॥

चौ०–इमि विचरत वाजी वर वीरा ❀ पहुँचो रेवा सरित सु तीरा ॥
तहँ आरण्यक मुनि वर ज्ञाता ❀ तिनहि मिले सादर प्रभु भ्राता१
तहँते गमन कियो जन सारे ❀ तब हय सेवक आय पुकारे ॥
सरिता तट तडाग वर भारी ❀ तामहँ पान करत हो वारी ॥२॥
जल पीवतही तुरँग न जाना ❀ भयो मध्य सर अंतरध्याना ॥
सो गति सुनि रिपुहन अकुलाये ❀ सुमति सकल मिलि मंत्र दृढाये३
तब रिपुहन पुष्कल हनुमंता ❀ सर प्रविशे जल मध्य तुरंता ॥
लखो गंभीर नीरतल धामा ❀ मणि कंचनमय परम ललामा ४॥
तामहँ इक तिय तेज विशाला ❀ शोभित युत अनेक वर बाला ॥
तहां सु वाजि निबंधित देखा ❀ सबहि भयो आचरज विशेखा ५

रिपुहन आदि सकलधरि धीरा ❀ नायो शीश जाय तिहि तीरा ॥
सो बूझी गति तब हनुमंता ❀ बरणी सत्य समस्त तुरंता ॥६॥
सुनि योगिनी कही हम कांहीं ❀ जीतै कोउ सुरासुर नाहीं ॥
पै तुरंग मम प्रभुकर याते ❀ किमि हौं गहों जाहु लै ताते॥७॥
यौं कहि पुनि योगिनी प्रवीना ❀ एक अस्त्र रिपुदमनहि दीना ॥
भाषी लरै वीरमणि राजा ❀ तहँ ऐहै तुमरे यह काजा ॥ ८ ॥
सुनि सबही आनंद अघाई ❀ लै तुरंग गवने शिरनाई ॥
सरजलते कढि दल मधि आये ❀ चले मुदित जै शोर मचाये ॥९॥
विचरत मख वाजी अभिरामा ❀ आये नगर देवपुर नामा ॥
तहँ गिरि वन सरि सुभग पुनीता । लखि तृण जल गो अश्व अभीता १०

दोहा–नृपति देवपुरमें प्रबल, नाम वीरमणि जासु ॥
शंकर नित रक्षा करैं, प्रगट सगणके तासु ॥ ११ ॥
हैं अनन्य शिवभक्त नृप, तासु पुत्र बलधाम ॥
परमरम्य गुणवंत वर, रुक्मांगद जिहि नाम ॥ १२ ॥
सो तिय गण संयुत मुदित, वनविहार करवीर ॥
लखि तुरंग शिर पत्र पढि, गहि लायो रणधीर ॥ १३ ॥
पितहि बखानो हाल सब, सुनि शिव सहित नृपाल ॥
कही कियो अनुचित महा, ह्वै है युद्ध कराल ॥ १४ ॥
पुनि पुरारि भाषी नृपहि, लाभ महारण माहिं ॥
हम तुम दोउनको इहाँ, रघुवर दरश मिलाहिं ॥ १५ ॥

प० । रा० । अ० ३९॥ श्लोक।

परमत्र महालाभो भविष्यति रणांगणे ॥
यद्रामचरणांभोजं द्रक्ष्यामः स्वीयसेवितम् ॥ १ ॥

दोहा–सुनि नृप उठि तिहि वाजिके, निज कर चरण प्रछाल ॥
किय निबंध दै अशन जल, वर हय शाल विशाल ॥ १६ ॥
सचिव सैन पति बोलि पुनि, कही वीरमणि वीर ॥
सजौ सैनहौं देखिहौं, किमि रिपुहन रणधीर ॥ १७ ॥

तिहुँ पुरके सुर असुर जो, युद्ध करैं मम साथ ॥
तौ नहिं पावैं वाजि अब, बिन आये रघुनाथ ॥ १८ ॥
नृप रजाय सुनि वेगही, सजी सैन बलपूर ॥
जै महेश कहि वीरमणि, चलो संग भट भूर ॥ १९ ॥
नृपसुत रुक्मांगद प्रथम, द्वितिय शुभांगद नाम ॥
वीरसिंह भूपति अनुज, अपर अमित बलधाम ॥ २० ॥
इमि सुत बंधु अनीक युत, गमन कियो भूपाल ॥
इत रिपुसूदन सजग ह्वै, विरचो व्यूह विशाल ॥ २१ ॥
चौ०ताछिन आय भूप कटकाई ❀ कहि जै जैति बाण झरिलाई ॥
कीश ऋच्छ निश्चर नर धाये ❀ इतते गिरि तरु शस्त्र चलाये २२॥
भिरे सुभट दुहँ कटक विरुद्धे ❀ उद्ध प्रबुद्ध सु युद्ध निरुद्धे ॥
अस्त्र शस्त्र बहु करत प्रहारा ❀ लरत मरत भो हाहाकारा २३ ॥
ताछिन भूप कटक बिचलाना ❀ सो लखि रुक्मांगद धनुताना ॥
धाय भिरो पुष्कलसे योधा ❀ दोऊ हनत दुहूँ भरि क्रोधा २४॥
तब पुष्कल तिहि अस्त्र प्रहारा ❀ भ्रमो सरथ नभ मंडल सारा ॥
भानु निकट जातहि हय स्यंदन ❀ दग्ध भयो व्याकुल नृपनंदन२५॥
तासु हस्त इक भो जरिछारा ❀ गिरो विकल ह्वै धरणि मझारा॥
रुक्मांगदहि विहाल निहारी ❀ भगे भीति भरि बहु भटभारी२६॥
लखिसुत गति करि क्रोध कराला ❀ धायो गहि धनु बाण भुवाला ॥
मारि सायकन दल बिचलावा ❀ निरखि हनूमत क्रोध बढावा२७॥
दोहा—धाय वीर कपि भिरि कियो, वीरसिंहते युद्ध ॥
पुष्कल अरु नृपवीर मणि, भये समर अवरुद्ध ॥ २८ ॥
पुष्कल रथ हय कवच धनु, दियो वीरमणि काटि ॥
भये विकल पुनि सजग ह्वै, हने बाण तिहि डाटि ॥ २९ ॥
भरत पुत्र शरघातते, गिरो भूमिं भूपाल ॥
नृपगति लखि दल बिचलभो, भगे सु वीर विहाल ॥ ३० ॥
वीरसिंह तब क्रोध भरि, किय हनुमतहि विहाल ॥
शालि मुष्टिका भूमि तिहि, डारो अंजनिलाल ॥ ३१ ॥

चौ०—ताछिन कोपि शुभांगद वीरा ❀ कीनी सैन विकल हनि तीरा॥
रुक्मांगदहु सजग ह्वै धायो ❀ दुहूँ बंधु मिलि दल बिचलायो३२॥
सो लखि हनुमानादिक वीरा ❀ धाय कियो नृप कटक अधीरा ॥
नृपसुत बन्धु समेत अचेता ❀ निरखि भजे सब वीर निकेता३३॥
ताछिन शंभु क्रोध उर धारा ❀ भूत प्रेत गण संग अपारा ॥
रथ अरूढ ह्वै गहि धनु धाये ❀ लखि रिपुहन सजि बाण सिधाये३४
महादेव रिपुसूदन धीरा ❀ पुष्कल वीरभद्र वर वीरा ॥
नंदी हनुमत संग निरुद्धे ❀ इमि बहु एक एक मिलि युद्धे३५॥
चार दिवस भो समर महाना ❀ पुष्कल वीरभद्र बलवाना ॥
अस्त्र शस्त्र दुहुँ दुहुँन प्रहारे ❀ एकहि इक मुर्च्छित करिडारे ३६॥
तब करि वीरभद्र रिसि चंडा ❀ हनि त्रिशूल पुष्कल शिरखंडा ॥
भरत पुत्र वध लखि सब बीरा ❀ सहित शत्रुहन भये अधीरा ३७॥
पुनि धरि धीर वीर सब धाये ❀ युद्धे महा क्रुद्ध उर छाये ॥
शंभु शत्रुहन दुहुँ बलवंता ❀ अस्त्र शस्त्र रण कियो अनंता३८॥

दोहा—इमि एकादश दिवस लग, युद्ध कियो दुहुँ वीर ॥
हनो अस्त्र शर प्रबल हर, ह्वै हिय निपट अधीर ३९ ॥
सो पीडित शर शत्रुहन, मुर्छित धरणि मझार ॥
गिरे निरखि गति विकल दल, हाहा होत पुकार ॥ ४० ॥
अपर शंभुगण क्रोध भरि, धाय धाय चहुँ ओर ॥
बहु मुर्छित बहु बध किये, कपि नर भट वर जोर ॥ ४१ ॥
यह गति लखि निज सैनकी, तब हनुमंत उताल ॥
पुष्कल तनुको बहुरि पुनि, किय प्रबंध रथ घाल ॥ ४२ ॥
आय शंभु सन्मुख सपदि, हनुमत कही सकोप ॥
परम संत गुणवंत ह्वै, कियो धर्म सब लोप ॥ ४३ ॥
तब शिर भाषी सत्य कपि, पै हौं भक्ति अधीन ॥
याते हौं कछु क्रोध भरि, याछिन संयुग कीन ॥ ४४ ॥

प्र० ॥ रा० ॥ अ० ४४ ॥ श्लोक ॥

आगत्य सविधे रुद्रं समरांगणमूर्धनि ॥
जगाद हनुमान्वीरः संजिहीर्षुः सुराधिपम् ॥ २ ॥